Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्ति-तन्त्रम्

आचार्य पं० शत्रुघ्ननाथ शुक्ल

Q25:23
152M8S

हिन्दी सेवा सदन, मथुरा.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Q25:23 8812
152M8S
Shukla, Shatrughna-
lal.
Shakti-tantram

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

138
2-तंत्र
925.25
152M8S
Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
S.J.V.J. PRATISHTHAN
LIBRARY

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

❁❁❁❁❁

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्ति - तन्त्रम्

[श्री देव्योपासना]

माँ दुर्गाजी के विभिन्न रूपावतारों की पूजा-अर्चना, साधना की सरलतम विधियों का शुद्ध-श्रेष्ठ दिग्दर्शन !

प्रस्तुति कर्त्ता :

आचार्य पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल

SRI JAGAL
JNANA SIR
LIBRARY
Jangam Math, Varanasi
ACC No.....

☎ : 5173

हिन्दी सेवा सदन, बैरागपुरा, मथुरा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक :

हिन्दी सेवा सदन
बैरागपुरा, मथुरा. (उ० प्र०)

Q25:23
152M85

●

कृतिकार :
आचार्य पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल

●

S.J.V.J. PRATISHTHAN
LIBRARY
Jangamawadimath, Varanasi
Acc. No

कृति-स्वाम्य :
प्रकाशक

●

प्रथम संस्करण : राम नवमी
26 मार्च, 1988 ई०

●

SRI JAGAD RU ISHI PADHYA
JNANA SIMHAS N JNANAMANDAL
LIBRARY
Jangamwa Math, Varanasi
ACC No. 8812

मूल्य : 25/00

●

मुद्रक :
भाषा भवन प्रेस, मथुरा.

SHAKTI TANTRAM

By : Acharya Pt. Shatrughna Lal Shukla

Price : Rs 25/-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॐ

जगन्माता श्री दुर्गाजी

के

चरण - कमलों

में

सविनय - सादर

समर्पित

या देवी सर्वभूतेषु ज्ञानरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आत्मोवाच

मेरा शैशव आध्यात्मिक-वातावरण में बीता है। मेरे नाना-नानी ने भारत के सुदूर-तीर्थों की कई-कई बार पैदल-यात्रा की थी। वे मुझे प्रायः देवी-देवताओं की कथाएं सुनाया करते के। मेरे माता-माता शिक्षित और पर्यटन-प्रिय थे, अतः उनसे भी बहुत कुछ सुनने को मिला। मेरी रुचि बहुत छोटेपन से कथा-श्रवण में रही है। प्रभु की कृपा से अक्षर-बोध भी जल्दी हो गया था, सो मात्र सात वर्ष की अवस्था में ही तुलसीकृत-सुन्दरकाण्ड, सुखसागर, चन्द्रकान्ता-सन्तति आदि पढ़ डाले थे। गाँव में एक प्राचीन मन्दिर है—श्रीराम-जानकी मन्दिर! वहाँ प्रतिवर्ष भादों में आठ दिन श्री मद्भागवत् की कथा होती है। तत्कालीन महन्त 'श्री जगदेवदास जी' की वाणी में अद्भुत सम्मोहन था। मैं वहाँ कथा सुनने जाता था। गङ्गातट-स्थित 'डलमऊ' जाने का अवसर मुझे प्रायः मिलता रहता था। वहाँ पर 4–6 साधु-सन्त बारहों महीने रहते थे। उनके श्रीमुख से भी कई पौराणिक आख्यान सुने। मुझे आस्तिक, श्रद्धालु और देवनिष्ठ बनाने में यह सब प्रमुख कारक रहे।

● सर्वप्रथम हनुमानजी की भक्ति मन में जगी, फिर शिवजी की प्रभुता से परिचित हुआ। बाद में देवी दुर्गाजी की कृपानुभूति ने मेरे मानस को, जो शान्ति, आस्था और चिन्तन-शक्ति प्रदान की, उसने मेरी प्रकृति-प्रवृत्ति को बहुत कुछ बदल दिया। रातदिन जासूसी-ऐयारी कथाओं में डूबा रहने वाला है, एक बारगी साहित्य-प्रेम से सराबोर हो उठा और हिन्दी के यश-स्तम्भ कवि-लेखक, मार्ग-दर्शक बन गये।

● लेखन-प्रकाशन की इच्छा पूरी हो चुकने पर भी लगता था, अभी कहीं कोई बहुत बड़ी कमी है। कस्तूरी-मृग की भाँति मैं अपनी अतृप्त-लालसा की खोज में भटकता रहा। अचानक मन में कौंधा—कुछ अध्यात्म पर लिखा जाये। अन्तर्मन का यह संकेत मेरे लिए निश्चय ही किसी पूर्व-पुण्य का उदय था। नौकरी में व्यस्त रहते हुए भी एक पुस्तक लिखी। प्रभु की कृपा से वह प्रयास सफल रहा, फलतः प्रोत्साहन पाकर मैं इस विषय पर कुछ और भी लिख सका।

● 'अध्यात्म' एक बहुत ही जटिल और विशद विषय है। इसमें पारङ्गति की कल्पना करना ही भ्रामक है। इस महार्णव के तट पर खड़ा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं, एक अबोध शिशु हूँ और सहज जिज्ञासा कौतूहल से कभी-कभी एक-दो अञ्जलि जल अपने ऊपर छिड़क लेता हूँ। ये जो दो-चार पुस्तकें लिख पाया हूँ, उसी अञ्जलिगत-जल का चमत्कार हैं।

● कहाँ तो मैं घोर संसारी-प्राणी, और कहाँ यह परम पावन ईश्वर-चिन्तन! फिर भी न जाने कौन-सी अज्ञात-शक्ति, किसी देवी-देवता की महती-कृपा, मुझे जाने-अनजाने प्रेरित करती रही, और मैं उसके निर्देशन में यन्त्रवत् बैठा, मैं पन्ने रँगता चला गया। इसमें मौलिक तो मेरे द्वारा प्रस्तुतीकर ही है, शेष जो कुछ है—प्राचीन विद्वानों, ग्रन्थों और सन्दर्भों का ही है।

● वर्त्तमान युग का वातावरण बहुत व्यस्त, अशान्त, अस्थिर औ अनिश्चित है। ऐसी द्वन्द्वग्रस्त और कलह-कोलाहल पूर्ण पीड़ित-मानसिकता में, शास्त्रीय-पद्धति की साधना असाध्य नहीं, तो दुःसाध्य अवश्य है। वैसे भी, नीतिकारों का निर्देश है :—

अनन्त शास्त्रं बहुला न विद्या,
अत्यल्पकालो बहु विघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं,
हंसो यथा क्षीरमिवाम्बु मध्यात्॥

—शत्रुघ्नलाल शुक्ल

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

क्रमङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
1—	श्री दुर्गा-साधना की पृष्ठभूमि : [परिचय, सर्व देवीमयं जगत्, प्रकृति, प्रकृतिदेवी की व्यापकता, सृष्टि और शक्ति, जगत् और जगन्माता, मातृ-तत्व]	9 से 14
2—	देवी के प्रमुख अवतार : [एक देवी : अनेक नाम, नवदुर्गा, अष्ट-मातृका, दश महाविद्या, दुर्गाजी के विभिन्न नाम, एक और नामावली, शक्तिपीठ, चौंसठ योगिनी, प्रथम अवधारणा के अनुसार, द्वितीय मान्यता, तृतीय मत]	15 से 29
3—	साधना-स्थल और समय : [स्थान, दिशा, मुहूर्त्त-विवेचन, लग्न, योग, दिन, नक्षत्र, तिथि, सबसे उत्तम मुहूर्त्त]	30 से 36
4—	प्रयोज्यसामग्री : [परिचय, जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, हवन, समिधा, दान-दक्षिणा]	37 से 47
5—	आसन और माला : [आसन, उद्देश्यानुकूल आसन, निषिद्ध आसन, माला, उद्देश्य और माला, विष्णु-कृपा प्राप्ति के लिए, गणेशोपासना में, तारा-साधना में, धन-प्राप्ति के लिए, दुर्भाग्य-नाश के लिए, सन्तान-प्राप्ति के लिए, सात्त्विक-कामना पूर्त्ति हेतु, सांसारिक-वैभव अथवा मोक्ष-प्राप्ति के लिए, सामन्यतया माला कैसे जपें ?, आकर्षण हेतु, स्तम्भन हेतु, पुष्टि-कर्म हेतु, अभिचार-कर्मों में]	48 से 56

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

क्रमांक पृष्ठांक

6—देवी-साधना : नियम और निषेध : 57 से 69

[साधना, गुरु का विकल्प, साधना का समय, प्रयोज्य वस्तुएं, साधना-विधि, साधना के नियम, बाधा-निवारण, निषेध [

7—देवी-उपासना के विविध आयाम : 70 से 110

[परिचय, नवार्ण-मन्त्र-साधना, मूल नवार्ण-मन्त्र, साधना-विधि, सिद्ध दुर्गा-मन्त्र साधना, जय-दुर्गा-मन्त्र साधना, दरिद्रता-नाशक दुर्गा-मन्त्र साधना, महिषमर्दिनी दुर्गा-साधना, श्री लक्ष्मी-साधना, श्री सरस्वती-साधना, श्री काली-साधना]

8—देवी के अन्य विशिष्ट मन्त्र : 111 से 130

[तारिणी मन्त्र-साधना, वाग्वादिनी मन्त्र-साधना, सर्वमङ्गला मन्त्र-साधना, भुवनेश्वरी मन्त्र-साधना, शूलिनी दुर्गा साधना, बज्रेश्वरी-साधना, वनदुर्गा साधना, कुमारी साधना]

9—दुर्गा सप्तशती कथा-सार। 131 से 158

[प्रथम से लेकर तेरहवें अध्याय तक का क्रमशः कथा-सार, नव-श्लोकी दुर्गा-पाठ, सप्त-श्लोकी दुर्गा-उपासना]

10—गायत्री मन्त्र-साधना : 159 से 174

[मूल गायत्री-मन्त्र, गायत्री-मन्त्र के अन्य स्वरूप, विभिन्न देवी स्वरूपों के मन्त्र, रोग-निवारक देवी-मन्त्र]

11—यक्षिणी-साधना : 175 से 184

[प्रमुख यक्षिणियाँ और उनके नाम व मन्त्र, वनस्पति-यक्षिणी]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जयन्ती मंगला काली,
भद्रकाली कपालिनी !
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री,
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुतें !!

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

।। ॐ दुं दुर्गायै नमः ।।

1 | दुर्गा-साधना की पृष्ठभूमि

परिचय–

आदि-शक्ति महामाया के समस्त (शताधिक) रूपावतारों में श्री दुर्गाजी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित है। कारण कि दुर्गाजी अपने भक्त-साधक की पुकार सुनकर बहुत जल्दी द्रवित हो उठती हैं। किसी भी प्रकार का सङ्कट हो, दुर्गाजी उसके निवारण में सदैव सक्षम और तत्पर रहती हैं। उनकी कृपा प्राप्त करने का प्रमुख आधार 'श्रद्धा' है। पूजा के समस्त नियम, विधान, साधन, उपकरण आदि एक ओर---और मात्र 'श्रद्धा' एक ओर। 'श्रद्धा' का प्रभाव इतना अधिक और सुनिश्चित होता है कि देखकर बड़े-बड़े ज्ञानी-ध्यानी भी अवाक्-दिग्मूढ़ रह जाते हैं। विनम्र शब्दों में, मैं बड़े सङ्कोच के साथ, यहाँ यह सत्य 'प्रकट' कर रहा हूँ कि पूजा-साधना के अन्य किसी नियम-उपादान का निर्वाह न होने पर भी, केवल श्रद्धा के आधार पर ही, मुझे कई बार दैवी-कृपा की अनुभूति हुई है। मेरी निश्चित धारणा है कि यदि व्यक्ति श्रद्धा समन्वित भाव से उपासना करे तो वह दैवी-शक्तियों का साक्षात्कार, उनका कृपा-प्रभाव सरलता से प्राप्त कर सकता है। परन्तु विडम्बना यह है कि वह अपेक्षित श्रद्धा हम माया-मोह में लिप्त संसारी-प्राणियों में क्षणभर को भी नहीं आ पाती। आती भी है तो वह नितान्त स्वार्थ-परक, अस्थिर, समर्पण-भाव रहित और विभिन्न लालसाओं से युक्त और दम्भमय होती है। अस्तु, अखण्ड श्रद्धा, अडिग विश्वास, निष्काम समर्पण-भावना और परम अकिंचन की मानसिकता के साथ की गयी साधना अवश्य ही फलदायी होती है। वह नियम-विधान से परे, सर्वाधिक प्रभावी और परम कल्याणकारी होती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि साधना-ग्रन्थों में वर्णित सब उपाय, नियम और निर्देश व्यर्थ अथवा त्याज्य हैं। नहीं, वे सब करणीय हैं, शास्त्र-सम्मत हैं और आदि-मनीषियों द्वारा दीर्घकालीन-अनुभव के बाद प्रभावकारी घोषित किये गये हैं। यथा-सम्भव उनका पालन अवश्य करना चाहिए। परन्तु उनमें नियमों की पूर्णता, शुद्धता अपरिहार्य होती है। साथ ही, श्रद्धा के अभाव में वे सारे प्रयोग निष्फल रहते हैं। इसलिए ज्ञानी-जन श्रद्धा को ही वरीयता देते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैसे, श्रद्धा और शास्त्रीय-विधान—दोनों को साधना में अनिवार्य माना गया है। परन्तु जो लोग किसी कारण से शास्त्रीय-विधान का निर्वाह नहीं कर पाते, वे यदि केवल श्रद्धा और आत्म-समर्पण की भावना से साधना करें, तो मेरा विश्वास है कि अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

यहाँ दुर्गाजी (आदि-शक्ति महामाया) से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट साधनाओं का उल्लेख किया जा रहा है। किसी भी रूप में श्रद्धापूर्वक इनका अवलम्ब लेकर आस्थावान् जन देवीजी की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वं देवीमयं जगत्—

भारत की प्रागैतिहासिक-मनीषा का चिन्तन और निष्कर्ष प्रतिपादन आज के तथाकथित 'कम्प्यूटर-युग' में भले ही उपहास्य, संदिग्ध और अव्यावहारिक माना जाये, परन्तु वास्तव में वह सत्याश्रित, यथार्थपरक, अनुभव-सिद्ध और अकाट्य-अतर्क्य है। आज हम भौतिक चकाचौंध और विदेशी-संस्कृति के संक्रामक-प्रभाव से अपनी अस्मिता, गौरव-बोध, धैर्य, शान्ति और आत्म-विश्वास से शून्य होकर पराश्रयी-परोपजीवी और परानुगामी हो गये हैं। भौतिक-शारीरिक सुख-सुविधा का मधुर-विष हमें बहुत प्रिय लगता है। और, उस विष का पान करते-करते हमने जाने-अनजाने अपनी बौद्धिक-क्षमता, मानवीय-सम्वेदना, नीति-निष्ठा और वैचारिक-दृढ़ता का इतना क्षरण कर दिया है कि आज उसके कण भी बहुत खोजने पर ही कदाचित मिल पाते हैं। अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अध्यात्म के क्षेत्र में यह अभाव, यह अराजकता विशेष रूप में दृष्टिगत होती है। आज अध्यात्म के प्रति अनास्था, उपहास, संशय और तर्क-वितर्क का वातावरण इसीलिए चतुर्दिक व्याप्त है कि हम उस पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते। उस पर मौलिक दृष्टि से विचार करने की कल्पना हमारे मस्तिष्क में उठती ही नहीं। अज्ञात, अतीत और पराजगत् में भी कुछ है, ऐसा मानने में हम स्वयं को रूढ़िवादी, अन्ध-विश्वासी और बर्बर-युगीन मानते हैं। हमारी दृष्टि में संसार का केवल वही रूप विश्वसनीय, मान्य और विचार योग्य है, जो प्रत्याक्ष-दृश्य है।

प्रकृति—

इस अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के दो प्रमुख कारक हैं—प्रकृति और पुरुष। 'प्रकृति' से आशय है—वह शक्ति, जो अज्ञात, अदृश्य और अस्थायी होकर भी सर्वत्र व्याप्त है, जिसकी प्रभावानुभूति सदैव, सर्वत्र होती रहती है और जो चेतना-शक्ति, ऊर्जा, क्रियाशीलता और व्यवस्था के रूप में समस्त चराचर को स्पन्दित करती रहती है। वैसे, 'प्रकृति' शब्द के ये अर्थ भी होते हैं —

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परन्तु ये गौण हैं और इनका प्रयोग प्रासङ्गिकता-प्रधान होता है। 'पुरुष' शब्द का भाव है—प्रकृति जिस कठोर तत्त्व को आलम्बन बनाकर अपनी शक्ति का रूपायन करती है, अर्थात् वह तत्त्व, जिसकी शक्ति प्रकृति के रूप में अनुभूत होती है। संक्षेप में इसे इस प्रकार कहा जा सकता है कि अखिल विश्व में एक ऐसा अज्ञात-अदृश्य तत्त्व विद्यमान है, जिसके दो रूप हैं—एक कठोर, दूसरा सौम्य। एक कारण है और दूसरा उसका मूर्त्तरूप—कार्य। उदाहरण के लिए, जल एक पदार्थ अर्थात् तत्त्व है। अब इसका मूर्त्त द्रवरूप 'पुरुष' है, और इसमें निहित शक्ति 'प्रकृति' है। इस प्रकार, पुरुष और प्रकृति—एक ही वस्तु के दो रूप हैं—सौम्य और कठोर, उत्पत्ति-कर्त्ता और पालक। संक्षेप में सुबोधता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि संसार का प्रत्येक पदार्थ (भौतिक-तत्त्व) 'पुरुष' है और उसमें समाहित शक्ति (भले ही वह अदृश्य और अस्पर्श्य हो) 'प्रकृति' है।

अध्यात्म में इन्हीं दोनों शब्दों 'पुरुष' और 'प्रकृति' को क्रमशः 'देवता' और 'देवी' की संज्ञा दी गयी है।

इस पुस्तक में हमारा प्रतिपाद्य-विषय 'देवी' है, अतः 'देव' वर्ग (पुरुष-तत्त्व) पर केवल प्रासङ्गिक-विवेचन ही पर्याप्त होगा। यहाँ हम 'देवी'-पक्ष अर्थात् प्रकृति और उसके विभिन्न स्वरूप, प्रभावादि का संक्षिप्त किन्तु सार-गर्भित विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। 'देव्योपासना' शीर्षक की सार्थकता के लिए तो यह आवश्यक है ही, आज की भौतिक चकाचौंध में दिग्भ्रमित समाज को, जो 'नास्तिक' बनकर देवी-देवताओं और अध्यात्म का उपहास करने के लिए सोत्साह कटिबद्ध है, किसी न किसी रूप में आस्था, साधना और संयम-विश्वास के प्रति दिशा-निर्देशक भी सिद्ध होगा।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है, समस्त ब्रह्माण्ड प्रकृति के आँचल में लिपटा हुआ है। प्रकृति-रहित कोई तत्त्व है ही नहीं। आकाश-पाताल और पृथ्वी में जहाँ भी, जो भी जड़ अथवा चेतन-तत्त्व मौजूद है, वह प्रकृति और पुरुष का संयुक्त रूप ही है। इनसे शून्य तत्त्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अस्तु, सारा जगत प्रकृतिमय है। और, चूँकि प्रकृति ही शक्ति अर्थात् देवी का रूप है, अतः सारा संसार देवीमय है—'सर्वं देवीमयं जगत्।'

प्रकृति देवी की व्यापकता—

प्रकृति ने अपने आँचल से समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड को अवतरित कर रखा है। उससे परे किसी भी, सत्ता, अस्तित्त्व नहीं है। मनीषियों ने उसी प्रकृति को विस्तारपूर्वक व्याख्या करके ऊर्जा, शक्ति, चेतना और गति

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(क्रिया) के रूप में परिभाषित किया है। आगे चलकर देवी-स्तुति के सन्दर्भ में हम वे आर्ष छन्द प्रस्तुत करेंगे, जिन्हें देवी-स्तवन के रूप में मार्कण्डेय-पुराण में संग्रहीत किया गया है। उनसे देवी की व्यापकता सहज ही प्रमाणित हो जाती है। यहाँ संक्षेप में, देवी के व्यापक स्वरूप को इस प्रकार समझा जा सकता है--

आदि-शक्ति महामाया समय-समय पर आवश्यकतानुसार अनेक रूपों में अवतरित होती रही है। ये रूप मूर्त्त और अमूर्त्त दोनों ही प्रकार के रहे हैं। इसके अतिरिक्त वस्तुगत प्रभाव, शक्ति, प्रभा, ऊर्जा, गन्ध आदि के रूप में भी उनका अवतार सर्व-स्वीकृत है। यही नहीं, समस्त जीव-जगत के क्रियाकलाप की प्रेरक-शक्ति, चेतना, भावना, कामना और मनोवृत्ति आदि सब देवी के ही स्वरूप हैं। मनुष्य ही नहीं, समस्त जीव-जगत में जो चित्त-वृत्तियाँ और मौलिक-इच्छाएं उत्पन्न होती रहती हैं, वे सब देवी के स्वरूप ही हैं। विभिन्न सन्दर्भों में अनेक महर्षि-मुनियों और देवताओं ने देवी की स्तुति-अर्चना करते हुए इन सभी रूपों का स्मरण किया है। यदि हम मानव अथवा जीव-जगत के किसी भी प्राणी की मानसिकता का विवेचन करें, तो पायेंगे कि भले ही उसके पास भाषा न हो, अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उसको मानव जैसे न सही, परन्तु कुछ न कुछ ऐसे संकेत, चेष्टाएं, क्रियाकलाप, प्राकृतिक रूप में ऐसे ढङ्ग से प्राप्त हैं, जिनके द्वारा वह अपनी काम, क्रोध, मोह और घृणा आदि की भावना व्यक्त कर देते हैं। इस क्रिया-व्यापार को हम किसी भी पशु-पक्षी अथवा कीट-पतङ्ग में सहज ही देख सकते हैं।

अखिल ब्रह्माण्ड के जड़-चेतन में, कण-कण में, अणु-अणु में देवीजी किसी न किसी रूपांश में निश्चित-रूपेण अवस्थित हैं। प्राणियों में शरीरगत, स्वभाव-गत, प्रकृतिगत और वस्तुगत, जो भी विशेषताएं, गुण-दुर्गुण अथवा रूप, छाया, प्रभा और गन्धादि हैं, वह सब देवी के ही विविध प्रभावांश हैं। सुबोधता की दृष्टि से हम कह सकते हैं कि संसार में देवीजी किसी न किसी रूप में सर्वत्र विराजमान हैं। छाया, ज्योति, प्रभा, गन्ध, अनुभूति, लज्जा, घृणा, विरक्ति, लालसा, कामना, मोह, क्रोध, विद्रोह, तृष्णा, तृप्ति, क्षुधा, तितिक्षा, सन्तुष्टि, दया, क्षमा, निन्दा, प्रशंसा और ध्वनि-गति आदि सब देवी के स्वरूप और आकार हैं। इस प्रकार, देवी का सर्वव्यापी रूप और प्रभाव हम सरलता से देख-समझ सकते हैं।

सृष्टि और शक्ति—

किसी भी सृष्टि के लिए आधारगत वस्तु के दो रूप होते हैं। वनस्पति की विवेचना में हम पाते हैं कि किसी भी पौधे की उत्पत्ति के मुख्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दो कारक होते हैं—बीज और मिट्टी। जब तक कोई बीज मिट्टी का आवरण—आधार नहीं पाता, वह अंकुरित नहीं होता। अपवाद-स्वरूप जो बीज बिना मिट्टी के ही अंकुरित हो जाते हैं, वे भी वस्तुतः एकाधारी नहीं होते। मिट्टी (पृथ्वी) के स्थान पर वे वायु, जल, धूल अथवा पर्यावरण का आधार (भले ही वह अप्रत्यक्ष रूप में हो) अवश्य लिये रहते हैं।

वनस्पति ही नहीं, जीव जगत् की उत्पत्ति के दो आधार अवश्य होते हैं। प्रकारान्तर से उन्हें नर और नारी, रज और वीर्य, शुक्र और डिम्ब, शिव और शक्ति, पुरुष और प्रकृति, देवता और देवी अथवा पिता और माता जैसे युग्म रूपों में व्याख्यायित किया गया है। कोई भी जीव अथवा पदार्थ, भले ही वह स्थूल दृष्टि से निरा स्वयम्भू प्रतीत होता हो, बिना उभय आधार के उत्पन्न नहीं हो सकता। देव-वर्ग को हम पिता (पुरुष) और देवी-वर्ग को माता (प्रकृति अथवा शक्ति) मान लें तो सृष्टि की उत्पत्ति का कारण और कार्य-व्यापार सुबोध हो जाता है। जिसे हम पृथ्वी, माता अथवा आधार-भूमि कहकर अपनी उत्पत्ति को प्रामाणिक मानते हैं, वह बास्तब में शक्ति का वह स्वरूप है, जिसे आधार बनाकर पुरुष-तत्त्व सृष्टि की संरचना करता है। इस प्रसङ्ग में यह भी एक यथार्थ और शाश्वत सिद्धान्त है कि जिस प्रकार शक्ति के अभाव में अकेला पुरुष सृष्टि-रचना नहीं कर सकता, उसी प्रकार पुरुष के अभाव में प्रकृति अथवा शक्ति अकेले कुछ नहीं कर सकती। पुरुष बीज-तत्त्व है और शक्ति उसको सृष्टि का रूप देने के लिए आधार अर्थात् पृथ्वी-तत्त्व है। दोनों का संयोग ही सृष्टि की संरचना करता है।

मानव-जाति, पशु-पक्षी और कीट-पतङ्ग—सृष्टि के किसी भी वर्ग में देखें, प्रत्येक जीव की उत्पत्ति में 'माता-पिता' का अस्तित्त्व अवश्य ही दीख पड़ेगा। यह 'माता-पिता' का सम्बोधन तो हमारी सामाजिक मान्यताओं का एक भद्र रूप है, वास्तव में ये दोनों 'प्रकृति' और 'पुरुष' सृष्टि के प्रतीक अथवा स्थानापन्न है।

जगत् और जगन्माता—

यह समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड अर्थात् स्थावर-जङ्गम से युक्त जगत वस्तुतः आदि-शक्ति से ही उत्पन्न है। सृष्टि के किसी भी अंश को देखें, उसकी उत्पत्ति में प्रकृति देवी अर्थात् आदि-शक्ति जगन्माता का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। पौराणिक-ग्रन्थों के अनुसार, सृष्टि में चौरासी-लाख जीव-योनियों का अस्तित्त्व है। आशय यह है कि कीट-पतङ्ग, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और मानव—यह सब मिलाकर 84 लाख प्राणी विश्व में हैं। यदि किसी जीव को एक-एक दिन के लिए प्रत्येक योनि में रहना

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पड़े, तो उसे आदि से अन्त तक 84 लाख बार जीवन-मृत्यु की यातना सहन करनी पड़ेगी। किन्तु यह निश्चित नहीं है कि प्रत्येक प्राणी को सभी योनियों में अवश्य ही जन्म लेना पड़े। प्रत्येक योनि में रहने के लिए प्राणी की कालावधि भी उसके कर्मानुसार निर्धारित रहती है। कभी-कभी मानव-योनि तक पहुँचने में जीव को सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं, और कभी-कभी तो केवल कुछ सप्ताह या महीने के अन्तर से ही मानवात्मा पुनर्जन्म लेकर अवतरित हो जाती है। अस्तु, प्राणी चाहे जिस योनि में, चाहे जितने दिनों के अन्तराल से जन्म ले, उसे सृष्टि का अंश बनाने में प्रकृति देवी अर्थात जन्माता की व्यवस्था अवश्य ही सक्रिय रहती है।

संसार में जितनी भी वनस्पतियाँ पायी जाती हैं—घास-फूँस से लेकर फल-फूलों और विभिन्न प्रकार के अनाजों तक—सब धरती से उत्पन्न होती हैं। यह धरती क्या है—आदि-शक्ति देवी का सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप। कल्पना कीजिए, यदि धरती का अस्तित्त्व न होता तो आज सृष्टि की, संसार की अवस्थिति कहाँ और कैसी होती? विश्व के लगभग सभी सम्प्रदायों, धर्मों, वर्गों और समाजों में, किसी न किसी रूप में धरती को माता का (कहीं-कहीं पिता का) पद-सम्मान प्राप्त है। खैर, विदेशों में कुछ भी हो, हमारे देश भारत में तो चिर-प्राचीन-काल से धरती-माता की महिमा मानी जाती रही है। मानव ही नहीं, देवता भी इस धरती के प्रशंसक, उपासक और यशः गायक रहे हैं।

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि,
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।'

मातृ-तत्व—

जीव-जगत की सृष्टि में नर और मादा का संयोग प्रमुख कारक होता है। यह नर वही पुरुष-तत्त्व है और मादा प्रकृति-तत्त्व है। इसी प्रकृति को स्त्री, नारी, देवी आदि शब्दों से अभिहित किया गया है। मादा अर्थात् मातृ-शक्ति सभी प्राणियों में देखी जा सकती है। किसी भी पक्षी-समुदाय में, पशु-समाज में, कीट-पतङ्गादि में देखें, मादा का अस्तित्त्व अवश्य मिलेगा। केवल जङ्गली जीव-जन्तु या पक्षी ही नहीं, वरन् जल-जन्तुओं में भी यह सत्य प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। मक्खी, मकड़ी, छिपकली जैसे कीड़े-मकोड़े भी नर-मादा की श्रेणी में विभक्त है। हाथी, घोड़ा, बैल, शेर, रीछ और बानर तक सभी चतुष्पद-जीव अपने वर्ग के नर-मादा अर्थात्—पुरुष-प्रकृति से ही उत्पन्न होते हैं।

किसी भी प्राणी में गर्भ-धारण की, शिशु-पोषण की और अपने वर्ग-समाज से अनुकूलन करने की प्रवृति, जिस प्राकृतिक रूप में विद्यमान रहती है, वह वस्तुतः देवी के जगन्माता स्वरूप को ही प्रमाणित करती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2 | देवी के प्रमुख अवतार

एक देवी : अनेक नाम–

जैसा कि प्रारम्भ में निरूपित किया गया है, प्रकृति ही आदि-देवी है। समय-समय पर उनके अनेक रूप, अवतार, प्रभाव और कार्य सम्पन्न हुए हैं। उन रूपावतारों और कार्य-व्यवहारों के आधार पर, उनके गुणों को आलम्बन बनाकर उनको विभिन्न नामों—संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। यह स्थिति केवल देवीजी के नामों तक ही नहीं है, देवताओं को भी उसी प्रकार अनेक नामों से स्मरण किया गया है। वेशभूषा, आहार-विहार, गुण-स्वभाव, आकृति-प्रकृति को आधार बनाकर शिव, विष्ण, राम, कृष्ण, दत्तात्रेय, इन्द्र, अग्नि, सूर्य, जल और वायु आदि देवताओं को अनेक नामों से स्मरण किया जाता है। भगवान् विष्णु और शिव के नामों की संख्या एक-एक हजार तक है। पौराणिक-सन्दर्भों में उनका उल्लेख अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है। यहाँ तक कि 'विष्णु सहस्रनाम' और 'शिव सहस्रनाम' जैसे स्तोत्र भी प्रचलित हैं, जो उन देवताओं के हजार नामों की तालिका प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न आधारों पर देवी जी को भी शताधिक नामों से स्मरण किया जाता है। शक्ति-साधना से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों, शक्ति-तन्त्र के ग्रन्थों, मार्कण्डेय-पुराण और देवी-भागवतआदि में प्रसङ्गानुसार देवी के अनेक नामों का उल्लेख किया गया है। पाठकों-साधकों की जानकारी के लिए यहाँ संक्षेप में देवीजी के कुछ विशिष्ट नामों की तालिका प्रस्तुत की जा रही है :—

नवदुर्गा–

देवीजी का सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप 'दुर्गा' का है। विभिन्न कारणों से दुर्गाजी ने विशेष रूप में अवतार लेकर नव बार भक्तों की रक्षा की। वे सभी अवतार-प्रसङ्ग अनेक ग्रन्थों में विस्तार से वर्णित हैं। नवरात्र में उन्हीं नव अवतारों की (प्रतिदिन क्रमशः एक अवतार की) पूजा की जाती है। 'नवदुर्गा' के अवतारों के नाम इस प्रकार हैं :—

1, शैलपुत्री
2. ब्रह्मचारिणी
3. चन्द्रघण्टा
4. कूष्माण्डा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. स्कन्दमाता
6. कात्यायनी
7. कालरात्रि
8. महागौरी
9. सिद्धिदात्री

अष्ट-मातृका—

नवदुर्गाओं के अतिरिक्त ये देवी रूप भी बहुत सम्मान्य हैं :—

1. ऐन्द्री
2. वैष्णवी
3. माहेश्वरी
4. कौमारी
5. लक्ष्मी
6. धरा
7. ईश्वरी
8. ब्राह्मी

दस महाविद्या—

महाविद्याओं के रूप में देवी के दस नाम प्रसिद्ध हैं, उनका विस्तृत विवेचन आगे किया जायेगा। यहाँ प्रसङ्ग-पूर्त्ति के निमित्त उनकी नामावली प्रस्तुत है :—

1. काली
2. तारा
3. षोड़शी
4. भुवनेश्वरी
5. भैरवी
6. छिन्नमस्ता
7. धूमावती
8. बगलामुखी
9. मातङ्गी
10. कमला

दुर्गाजी के अनेक नाम। (त्रिंशद्वय नामावली)—

1. दुर्गा
2. दुर्गार्तिशमनी
3. दुर्गापद् निवारिणी
4. दुर्गमच्छेदिनी
5. दुर्गसाधिनी
6. दुर्गनाशिनी
7. दुर्गतोद्धारिणी
8. दुर्गनिहन्त्री
9. दुर्गमायहा
10. दुर्गमज्ञानदा
11. दुर्गदैत्यलोकदवानला
12. दुर्गमार्गप्रदा
13. दुर्गमविद्या
14. दुर्गमा
15. दुर्गमालोका
16. दुर्गमार्गस्वरूपिणी
17. दुर्गमाश्रिता
18. दुर्गम ज्ञान संस्थाना
19. दुर्गम ध्यान भासिनी
20. दुर्गमोहा
21. दुर्गमता
22. दुर्गमार्थ स्वरूपिणी
23. दुर्गमासुर संहन्त्री
24. दुर्गमायुध धारिणी
25. दुर्गमाङ्गी
26. दुर्गमता
27. दुर्गम्या
28. दुर्गमेश्वरी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

29. दुर्गभीमा
30. दुर्गभामा
31. दुर्गमा
32. दुर्गधारिणी

भगबती दुर्गाजी की उपर्युक्त नामावली में उन्हें बत्तीस संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थों में एक और नामावली प्राप्त होती है, जिसमें देवीजी के 108 नामों (अष्टोत्तरशत) का उल्लेख हैं। वह नामावली इस प्रकार है :—

1. सती
2. साध्वी
3, भवप्रीता
4. भवानी
5. भवमोचनी
6. आर्या
7. दुर्गा
8. जाया
9. आद्या
10. त्रिनेत्रा
11. शूलधारिणी
12, पिनाकधारिणी
13. चित्रा
14. चन्द्रघण्टा
15. महातपा
16. मनः
17. बुद्धि
18. अहङ्कारा
19. चित्ररूपा
20. चिता
21. चितिः
22. सर्वमन्त्रमयी
23. सत्ता
24. सत्यानन्द रूपिणी (सत्या)
25. अनन्ता
26. भाविनी
26. भाव्या
28, भव्या
29, अभव्या
30. सदागति (सद्गति)
31. शाम्भवी
32. देवमाता
33. चिन्ता
34, रत्नप्रिया
35. सर्वविद्या
36. दक्षकन्या
37. दक्षयज्ञ-विनाशिनी
38. अपर्णा
39. अनेक वर्णा
40. पाटला
41. पाटलावती
42. पट्टाम्बरा (पट्टाम्बर परिधाना)
43. मञ्जीररञ्जिनी
44. अमेयविक्रमा
45. क्रूरा
46. सुन्दरी
47. सुरसुन्दरी
48. वनदुर्गा
49. मातङ्गी
50. मतङ्गमुनिपूजिता
51. ब्राह्मी
52. माहेश्वरी
53. ऐन्द्री
54. कौमारी
55. वैष्णवी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

56. चामुण्डा
57. वाराही
58. लक्ष्मी
59. पुरुषाकृति
60. विमला
61. उत्कर्षिणी
62. ज्ञाना
63. क्रिया
64. नित्या
65. बुद्धिदा
66. बहुला
67. बहुलप्रेमा
68. सर्ववाहन वाहना
69. निशुम्भ-शुम्भ हननी
70. महिषासुर मर्दिनी
71. मधुकैटभहन्त्री
72. चण्डमुण्ड विनाशिनी
73. सर्वासुर विनाशा
74. सर्वदानव-घातिनी
75. सर्वशास्त्रमयी
76. सत्या
77. सर्वास्त्रधारिणी
78. अनेक शास्त्र-हस्ता
79. अनेकास्त्रधारिणी
80. कुमारी
81. एककन्या
82. कैशोरी
83. युवती
84. यति
85. अप्रौढ़ा
86. प्रौढ़ा
87. वृद्धमाता
88. बलप्रदा
89. महोदरी
90. मुक्तकेशी
91. घोररूपा
92. महाबला
93. अग्निज्वाला
94. रौद्रमुखी
95. कालरात्रि
96. तपस्विनी
97. नारायणी
98. भद्रकाली
99. विष्णुमाया
100. जलोदरी
101. शिवदूती
102. कराली
103. अनन्ता
104. परमेश्वरी
105. कात्यायनी
106. सावित्री
107. प्रत्यक्षा
108. ब्रह्मवादिनी

मान्यता है कि यदि कोई साधक और कुछ न करके, केवल इन 108 नामों का पाठ करते हुए प्रतिदिन देवीजी का श्रद्धापूर्वक स्मरण-स्तवन करे, तो वह भी उनकी कृपा से सफल-मनोरथ हो जाता है।

देवी के विशेष प्रभावी श्री-विग्रह—

यद्यपि भारत में देवीजी के मन्दिरों और मूर्त्तियों की गणना नहीं की जा सकती और वे सभी महत्त्वपूर्ण हैं। परन्तु पौराणिक-सन्दर्भों, साधनागत-मान्यताओं तथा कुछ अन्य विशिष्ट प्रभावोपलब्धियों के आधार

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर निम्नलिखित मूर्त्तियाँ और स्थान—देवीजी के विशेष प्रभाव-क्षेत्र माने जाते हैं। साधकों एवं भक्तों का अनुभव है कि अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ की मूर्त्तियों का दर्शन-पूजन निश्चित रूप से अल्प समय में ही अपने प्रभाव की अनुभूति करा देता है। वे विशिष्ट बारह शक्ति-पीठ (देवी के निवास स्थल) निम्नांकित हैं :—

1. कामाक्षी देवी	....	काञ्चीपुरम्
2. भ्रमराम्बा देवी	....	मलय-प्रदेश
3. कुमारी देवी	....	कन्याकुमारी
4. अम्बाजी	....	गुजरात (प्रभास तीर्थ)
5. महालक्ष्मी	....	कोल्हापुर
6. कालिकाजी	....	उज्जैन
7. ललिता	....	प्रयाग
8. मङ्गलावती	....	गया
9. विन्ध्यवासिनी	....	विन्ध्याचल
10. विशालाक्षी	....	बनारस (काशी)
11. त्रिपुरसुन्दरी	....	बङ्गाल (त्रिपुरा)
12. गुह्यकेशी	....	नैपाल

'स्वाहा देवी' (दुर्गाजी का एक नाम-रूप) के पर्याय

श्री दुर्गाजी का एक नाम 'स्वाहा' भी है। इस 'स्वाहा' नाम के अन्य भी कई पर्यायवाची शब्द (नाम) है। यथा—

1. स्वाहा
2. बह्निप्रिया
3. वह्निजाया
4. शक्ति
5. क्रिया
6. सन्तोपकारिणी
7. कालरात्रि
8. ध्रुवा
9. परिपाककरी
10. गति
11. नरदाहिका
12. दहन-क्षमा
13. संसारसाररूपा
14. देवजीवनरूपा
15. संसारतारिणी
16. देव-पोषणकारिणी

शक्तिपीठ—

सती (शिव-पत्नि) का आत्मदाह-प्रसङ्ग एक सुप्रसिद्ध पौराणिक-आख्यान है। उसके अनुसार, राजा दक्ष-प्रजापति के यहाँ यज्ञ-समारोह में अपने पति शिवजी की उपेक्षा देखकर, सती ने आत्म-दाह कर लिया था। समाचार पाकर शिवजी के गणों ने यज्ञ-विध्वंस करके राजा दक्ष को समुचित दण्ड दिया। प्रिया के विछोह में शिवजी बहुत व्याकुल हो गये। वे सती का शव कन्धे पर लादकर विक्षिप्तों की तरह इधर-उधर भागने लगे। वे कभी-कभी उन्मत्तों की भाँति प्रलाप करते हुए गाने और नाचने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भी लगते थे। भावावेश में उनका वह नृत्य महाताण्डव में परिवर्तित हो गया। अस्वाभाविक रूप में शिवजी को असन्तुलित होते देख, देवताओं को चिन्ता हुई। वस्तुतः सृष्टि के नियामक शिवजी ही हैं। उनका मानसिक-असन्तुलन विश्व-ब्रह्माण्ड को नष्ट कर सकता था। ऐसे भयङ्कर सङ्कट की आशङ्का से सारे देवता सिहर उठे। तब विष्णु ने यह सोचकर कि शिवजी का क्षोभ सती के शव के कारण ही है, उसे अपने चक्र से छिन्न-भिन्न कर दिया। चूँकि शिवजी त्वरित गति से इधर-उधर भ्रमण-नर्तन कर रहे थे, अतः विष्णु द्वारा वह मन्त्र-चालित चक्र शिवजी के कन्धे पर लदे सती-शव से बार-बार टकराता रहा। उसकी तीव्र गति से शव का जो भी अङ्ग स्पर्श में आया, तत्क्षण कटकर दूर जा गिरा। इस प्रकार सती के शव-खण्ड जहाँ-जहाँ गिरे पावनता की दृष्टि से उन समस्त स्थानों को 'शक्ति-पीठ' अथवा 'सिद्ध-पीठ' की संज्ञा दी गयी। वहाँ शक्ति की देवी—शिव-पत्नी श्री सतीजी का निरन्तर निवास माना गया। यही कारण है कि आज भी देवी-पूजा सम्बन्धी कितने ही समारोह और पारिवारिक मङ्गल-संस्कार सम्पन्न करने के लिए—देवी उपासक उन सिद्ध-स्थलों (शक्ति-पीठों) में जाते रहते है।

विवेचन-भेद से शक्ति-पीठों की संख्या में अन्तर भी है। परन्तु यह निश्चित है कि शक्तिपीठों का अपना एक अलौकिक प्रभाव है और वहाँ की गयी देवी-उपासना कभी व्यर्थ नहीं होती। शाक्त-ग्रन्थों में एक बहु-प्रशंसित और सर्वमान्य ग्रन्थ है—'तन्त्र-चूड़ामणि'। इसमें केवल इक्यावन शक्ति-पीठ माने गये हैं। इस ग्रन्थ में सती के शवाङ्गों का पूरा विवरण, कि कहाँ कौन-सा अङ्ग गिरा था, वहाँ कौन-सी शक्ति निवास करती है, तथा वहाँ के भैरव (नगरपाल, स्थान-रक्षक) का क्या नाम है--विस्तार से वर्णित है। उस विवरण को पढ़कर लगता है कि 108 शक्तिपीठों की परिकल्पना इस आधार पर की गयी होगी कि चक्र द्वारा विच्छिन्न शवाङ्ग (छोटे-बड़े सभी खण्ड तथा रक्त-मांस के अंश) कुल जितने स्थानों पर गिरे थे, उन सबकी योग संख्या 108 थी। 'तन्त्र-चूड़ामणि' में वर्णित 51 शक्तिपीठ वे स्थान हैं, जहाँ सती के समूचे और स्पष्ट अङ्ग कटकर गिरे थे। चाहे जो भी कारण हो, शाक्तों में 51 शक्तिपीठों को विशेष मान्यता प्राप्त है और आज भी नवरात्र में तथा अन्य देवी-पर्वों पर साधकजन अपनी श्रद्धा-सामर्थ्य के अनुसार निकटस्थ शक्तिपीठ पर जाकर पूजा-उपासना तथा अन्य धार्मिक-कृत्य सम्पन्न करते हैं।

पद्म-पुराण, श्रीमद् देवीभागवत्-पुराण, मत्स्य-पुराण, शिव-पुराण और ब्रह्म-पुराण आदि ग्रन्थों में 108 शक्तिपीठों का वर्णन मिलता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किस सिद्धपीठ में कौन-सी देवी निवास करती है, इसका क्रमिक-विवरण इस प्रकार है :--

शक्तिपीठ	निवासिनी-देवी
1. वाराणसी	विशालाक्षी
2. नैमिषारण्य	लिङ्गधारिणी
3. प्रयाग	ललिता
4. गन्धमादन	कामाक्षी
5. मानसरोवर	कुमुदा
6. मानसरोवर अम्बर	विश्वकामा
7. गोमन्त (गोआ)	गोमती
8. मन्दराचल	कामचारिणी
9. चैत्ररथवन	मदोत्कटा
10. हस्तिनापुर	जयन्ती
11. कन्नौज	गौरी
12. मलय	रम्भा
13. भुवनेश्वर	कीर्तिमती
14. विश्वपीठ	विश्वेश्वरी
15. पुष्कर	पुरुहूता
16. केदारधाम	सन्मार्गदायिनी
17 हिमालय (पृष्ठभाग)	नन्दा
18. गोकर्ण	भद्रकर्णिका
19. स्थानेश्वर	भवानी
20. बिल्वतीर्थ	बिल्वपत्रिका
21. श्रीशैल	माधवी
22 भद्रेश्वर	भद्रा
23. वराहपर्वत	जया
24. कमलालय	कमला
25. रुद्रकोटि	रुद्राणी
26. कालिंजर	काली
27. शालग्राम	महादेवी
28. शिवलिङ्ग	जलप्रिया
29. महालिङ्ग	कपिला
30, मारकोट	मुकुटेश्वरी
31. मायापुरी (हरद्वार)	कुमारी
32. सन्तान-तीर्थ	ललिताम्बा
33. गया	मङ्गला
34. जगन्नाथपुरी	विमला
35. सहस्राक्ष	उत्पलाक्षी
36. कमलाक्ष	महोत्पला
37. विपाशा	अमोघाक्षी
38. पुण्ड्रवर्धन	पाटला
39. सुपार्श्व	नारायणी
40. त्रिकूट	भद्रसुन्दरी
41. विपुल	विपुला
42. मलयाचल	कल्याणी
43. सह्याद्रि	एकवीरा
44. हरिश्चन्द्र	चन्द्रिका
45. रामतीर्थ	रमणी
46. यमुना	मृगावती
47. कोटितीर्थ	कोटवी
48 माधव-वन	सुगन्धा
49. गोदाश्रम	त्रिसंध्या
50. गङ्गाद्वार	रतिप्रिया
51. शिवकुण्ड	सुभानन्दा
52. देविकानन्द	नन्दिनी
53. द्वारावती	रुक्मिणी
54. वृन्दावन	राधा
55. मथुरा	देवकी
56. पाताल	परमेश्वरी
57. चित्रकूट	सीता
58. विन्ध्याचल	विन्ध्यवासिनी
59. कोल्हापुर	महालक्ष्मी
60. त्रिनायकतीर्थ	उमादेवी
61. वैद्यनाथ	अरोगा
62. महाकाल	माहेश्वरी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्तिपीठ	निवासिनी-देवी	शक्तिपीठ	निवासिनी-देवी
63. उष्णतीर्थ	अभया	86. कपालमोचन	शुद्धि
64. विन्ध्य-कन्दरा	नितम्बा	87. कारावन	माया
65. माण्डव्य-तीर्थ	माण्डवी	88. शंखोद्धार	ध्वनि
66. माहेश्वरीपुर	स्वाहा	89. पिण्डारक	धृति
67. छागलाण्ड	प्रचण्डा	90. चन्द्रभागा	काला
68. अमरकण्टक	चण्डिका	91. अच्छोद	शिवधारिणी
69. सोमेश्वर	वृषारूढ़ा	92. वेणातट	अमृता
70. प्रभास-तीर्थ	पुष्करावती	93. बदरी-तीर्थ	उर्वशी
71. सरस्वती	देवमाता	94. उत्तरकुरु	औषधि
72. महालय	महाभागा	95 कुशद्वीप	कुशोदक
73. पैनगङ्गा	पिंगलेश्वरी	96. हेमकूट	मन्मथा
74 कृतशौलतीर्थ	सिंहिका	97. मुकुटतीर्थ	सत्यवादिनी
75. कार्तिकेयपीठ	यशस्करी	98. अश्वतीर्थ	वन्दनीया
76. उत्पलावर्त्तक	लीला	99. वैश्रवणालय	निधि
77. शोणसंगम	सुभद्रा	100. वेदवेदन	गायत्री
78. सिद्धवन	लक्ष्मी	101. शिवसन्निधि	पार्वती
79. भारताश्रम	अङ्गना	102. देवलोक	इन्द्राणी
80. जालन्धर	विश्वमुखी	103. ब्रह्मलोक	सरस्वती
81. किष्किन्धा	तारा	104. सूर्यविम्ब	प्रभा
82. देवदारु-वन	पुष्टि	105. मातृकाएं	वैष्णवी
83. काश्मीर	मेधा	106. सती-समुदाय	अरुन्धती
84. हिमाद्रि	भीमा	107. नारी-समुदाय	तिलोत्तमा
85. विश्वेश्वर	पुष्टि	108. चित्र (दृश्य)	ब्रह्मकला

यद्यपि भारतीय-अध्यात्म के अनेक आर्ष-ग्रन्थों में इन 108 सिद्ध-पीठों का उल्लेख किया है, परन्तु आज के युग में, जब कि सब-कुछ व्याव-हारिक दृष्टि से, यथार्थवादी कसौटी पर परखा जाता है, ये समस्त शक्ति-पीठ उपलब्ध, दृश्यमान नहीं हैं। कई एक का तो अस्तित्व भी संदिग्ध प्रतीत होता है—पौराणिक-कल्पना मात्र। कदाचित ऐसे ही द्वन्द्व के निवारण हेतु परवर्ती ग्रन्थ 'तन्त्र-चूड़ामणि' में केवल 51 शक्तिपीठों की परिकल्पना को मान्यता दी गयी है। इस ग्रन्थ में वर्णित 51 शक्तिपीठों के स्थान वर्त्त-मान भारत-भूमि पर अवस्थित हैं। नीचे उनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

चूँकि शक्तिपीठों की अवधारणा में, सती के वहाँ गिरे हुए अङ्गों को प्रमुख आधार माना गया है। इस प्रकार उस तीर्थ (शक्तिपीठ) में निवास

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करने वाली देवी तथा उसके एक पृथक् भैरव (स्वामी, सेवक, सहायक, रक्षक अथवा शिव का प्रतिरूप) की भी कल्पना की गयी है, अतः निम्न विवरण में उन सभी का उल्लेख किया जा रहा है। पाठकजन कृपया विवरण में इस क्रम से स्थिति का बोध करें :—

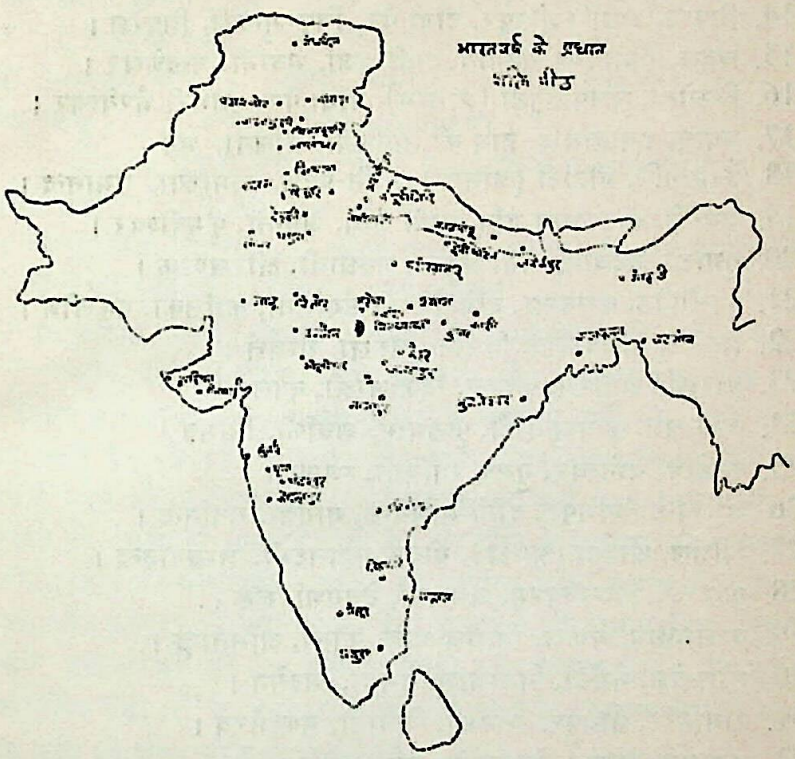

शक्तिपीठ की क्रम-संख्या, नाम, वर्त्तमान स्थान, वहाँ सती का कौन-सा अङ्ग गिरा था, वहाँ कौन-सी शक्ति (देवी रूप) निवास करती है, वहाँ का भैरव कौन है।

1. हिंगुला, क्वेटा (बिलोचिस्तान), ब्रह्मरन्ध्र, कोट्टीशा, भीम-लोचन।
2. शर्करार, सक्खर (सिंध), तीनों नेत्र, महिषमर्दिनी, क्रोधीश।
3. सुगन्धा, शिकारपुर (सिंध), नासिका, सुनन्दा, त्र्यम्बक।
4. काश्मीर, कण्ठ-भोग, महामाया, त्रिसन्ध्येश्वर।
5. ज्वालामुखी, काँगड़ा, महाजिह्वा, सिद्धिदा, उन्मत्त भैरव।
6. जालन्धर, पंजाब, स्तन, त्रिपुरमालिनी, भीषण।
7. वैद्यनाथ, चिता-भूमि (बिहार) हृदय, जयदुर्गा, वैद्यनाथ।
8. काठमाण्डू, नैपाल, दोनों जानु-भाग, गुह्येश्वरी, कपाली।
9. मानस, मालवा, दाँया हाथ, दाक्षायणी, अमर।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

10. विरजा-क्षेत्र, कटक (उड़ीसा), नाभि, विमल , जगन्नाथ ।
11. गण्डकी, मुक्तिनाथ, गण्ड-स्थल, गण्डकीदेवी, चक्रपाणि ।
12. बहुला, केतुग्राम, बायीं भुजा, बहुला, भीरूक ।
13. उज्जयिनी,उज्जैन, कुहनी,मङ्गल-चण्डी (हरसिद्ध देवी) कपिलाम्बर।
14. त्रिपुरा, राधाकिशोरपुर, दाँया पैर, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरेश ।
15. चहल, सीताकुण्ड चटगाँव, दायीं भुजा, भवानी, चन्द्रशेखर ।
16. त्रिस्रोता, जलपाईगुड़ी (आसाम), बाँया पैर, भ्रामरी,भैरवेश्वर ।
17. प्रयाग, इलाहाबाद, हाथ की उँगलियाँ, ललिता, भव ।
18. कामगिरि, गौहाटी (आसाम), यौनि-प्रदेश, कामाख्या, उमानन्द ।
19. जयन्ती, बाडरभाग गाँव, बायीं जाँघ, जयन्ती, कुमुदीश्वर ।
20. युगाद्या, बर्दवान, दाँया अँगूठा, भूतधात्री, क्षीरखण्डक ।
21. कालीपीठ, कलकत्ता, दाँये पैर की उँगलियाँ, कालिका, नकुलीश ।
22. किरीट, मुर्शिदाबाद, किरीट, विमला, सम्वर्त्त ।
23. वाराणी, बनारस, कुण्डल, विशालाक्षी, कालभैरव ।
24. कन्याश्रम, कन्याकुमारी, पृष्ठभाग, शर्वाणी, निमिष ।
25. कुरुक्षेत्र, थानेश्वर, गुल्फ, सावित्री, स्थाणु ।
26 मणिवन्ध, मणिपुर, दोनों मणिबन्ध, गायत्री, सर्वानन्द ।
27. श्रीशैल, श्रीहट्टा (आन्ध्र), ग्रीवा, महालक्ष्मी, शम्वरानन्द ।
28. काञ्ची, काञ्चीवरम्, अस्थियाँ, देवगर्भा, रूरू ।
29. कालमाधव, मथुरा, नितम्ब-भाग, काली, असिताङ्ग ।
30. शोण-देश, नर्मदा, नितम्बांश, नर्मदा, भद्रसेन ।
31. रामगिरि, नागपुर, स्तनांश, शिवानी, चण्डभैरव ।
32. वृन्दावन, वृक्षवन, केशराशि, उमा, भूतेश ।
33. शुचि, (अनिश्चित), ऊर्ध्व-दन्त, नारायणी, सहार ।
34. पञ्चसागर, समुद्रक्षेत्र, अधो-दन्त, वाराही, महारुद्र ।
35. करतोयातट, भवानीपुर, बाँया कान, अपर्णा, वामन-भैरव ।
36. श्रीपर्वत, नलामूल पर्वत, दाँया गुल्फ, श्रीसुन्दरी, सुन्दरानन्द ।
37. विभास, मिदनापुर, बाँया गुल्फ, कपालिनी, सर्वानन्द ।
38. प्रभास, सोमनाथ (गुजरात), उदर-भाग, चन्द्रभागा, वक्रतुण्ड ।
39. भैरव-पर्वत, भैरव-पर्वत, खपरी-ओष्ठ, अवन्ती, लम्बकर्ण ।
40. सर्वशैल, (अनिश्चित) बाँया गण्डस्थल, रागिनी, वत्सनाभ ।
41. जनस्थल, नासिक, चिबुक, भ्रामरी, विकृताक्ष ।
42. गोदावरी-तट, नासिक, गण्डस्थल, विश्वेश्वरी, दण्डपाणि ।
43. रत्नावली, कालहस्ती, दायाँ-कन्ध , कुमारी, शिवि ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

44. मिथिला, जनकपुर, बाँया-कन्धा, उमा, महोदर।
45. तलहाटी, वीरभूमि, नला, कालिका, योगेश।
46. कर्णाट, जूरनपुर, कान, जयदुर्गा, अभीरु।
47. वक्रेश्वर, वीरभूमि, मन (हृदय), महिषमर्दिनी, वक्रनाथ।
48. यशोर, खुलना, पाणि (हथेली), यशोरेश्वरी, भण्ड।
49. अट्टहास, लाभपुर, निम्न-ओष्ठ, फुल्लरा, विश्वेश।
50. नन्दिपुर, सैंधिया, कण्ठहार, नन्दिनी, नन्दिकेश्वर।
51. लङ्का, लङ्का, नूपुर, इन्द्राणी, राक्षसेश्वर।

पाठ-भेद अथवा मान्यता-भेद से कुछ विद्वानों से निम्नांकित दो अन्य शक्तिपीठों का भी उल्लेख किया है :—

1. विराट-क्षेत्र, राजस्थान (जयपुर, अलवर, भरतपुर के बीच का क्षेत्र), पैरों की उँगलियाँ, अम्बिका, भैरव-अमृत।
2, मगध-देश, पटना (विहार), दायीं जंघा, सर्वानन्दकरी, व्योमकेश।

अस्तु, देवी की सत्ता, उनका अस्तित्व और प्रभाव सर्वत्र, कण-कण से व्याप्त है। साधक-भक्त अपनी आस्था के अनुसार कहीं भी उनके दर्शन कर सकते है। वैसे कुछ शक्तिपीठ और देवी-मन्दिर तथा प्रतिमाएं निश्चित रूप से आज भी प्रभावशाली हैं और साधक-जन वहाँ श्रद्धापूर्वक जायें तो अवश्य ही चमत्कारी अनुभूति होती है। इस दृष्टि से आसाम की कामाख्या देवी, हरद्वार की मन्शादेवी, उज्जैन की हरसिद्ध देवी, सतना की शारदा-देवी, और काँगड़ा की ज्वालामुखी देवी के दर्शनों की चमत्कारिक अनुभूति अनेक साधकों को हुई है। वैसे--"जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।।" के अनुसार देवीजी भी सर्वत्र विराजमान है और कभी भी, कहीं भी भक्त को दर्शन दे देती है।

चौंसठ योगिनी—

शाक्त-ग्रन्थों में आदि-शक्ति दुर्गादेवी के अनेक क्रमों से विभिन्न अवतारों का वर्णन किया गया है। उनके सौम्य और रौद्र अनेक रूप है, जो समय-समय पर विविध अवतारों में प्रकट हुए हैं। आदि-शक्ति की सभी तीनों वृत्तियों (सात्त्विक, राजसिक और तामसिक) से सम्बन्धित विभिन्न देवियों की परिकल्पना की गयी है। इसी क्रम से देवी-अवतारों का एक वर्ग 'योगिनी' कहलाता है। इनके कुछ रूपों को छोड़कर, अधिकांश योगिनियों के रूप भयङ्कर, विकृत और रौद्र हैं। अस्तु, देवता अपनी रूपरेखा में चाहे जैसा हो,साधक के लिए वह सदैव ही रक्षक होता है। इसी सिद्धान्त पर कितने ही साधक देवी के रौद्र रूपों (यक्षिणी-योगिनी आदि) की उपासना करते हैं। यौगिनियों की संख्या चौंसठ है। इसीलिए इन्हें 'चतु-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

षष्ठि-योगिनी' कहा जाता है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि योगिनियों की संख्या (64) पर तो मतैक्य है, परन्तु उनके नाम और क्रम में बड़ा अन्तर है। इस प्रसङ्ग में सामान्यतया प्रचलित नामावली इस प्रकार मानी जाती है :—

1. अपर्णा
2. रूक्षकर्णी
3. राक्षसी
4. क्षपणा
5. क्षमा
6. पिङ्गाक्षी
7. क्षेमा
8. इला
9. नीलालया
10. लोला
11. रक्ता
12. बलाकेशी
13. लालसा
14. विमला
15. हुताशी
16. विशालाक्षी
17. हुङ्कारा
18. बड़वामुखी
19. महाक्रूरा
20. क्रोधना
21. भयङ्करी
22. महानना
23. सर्वज्ञा
24. तरला
25. तारा
26. ऋग्वेदा
27. हयानना
28. तारा
29. रससंग्राही
30. शम्बरी
31. उपक्षया
32. तालधणिका
33. रक्ताक्षी
34. सुप्रसिद्धा
35. विद्युद्जिह्वा
36. करंकिणी
37. मेघनादा
38. प्रचण्डा
39. उग्रा
40. कौलकर्णी
41. वरप्रदा
42. चण्डा
43. चण्डवती
44. प्रपञ्चा
45. प्रलयान्तिका
46. शिशुवक्त्वा
47. पिशाची
48. लोलुपा
49. धमनी
50. तपनी
51. रागिनी (वामिनी)
52. विकृतस्तना
53. वायुवेगा
54. बृहतकुक्षि
55. विकृता
56. विश्वरूपिका
57. यमजिह्वा
58. जयन्ती
59. दर्णया
60. जयन्तिका

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

61. विडाली
62. रेवती
63. पूतना
64. विजयान्तिका

यद्यपि आज के व्यस्त भौतिक-युग में इन सबकी न तो उपासना सम्भव है और न उनकी प्रासङ्गिकता ही अपना कोई विशेष महत्त्व रखती है। तथापि प्रसङ्ग-पूर्त्ति के लिए उल्लेख आवश्यक था। वैसे. मेरा अपना मत और अनुभव है कि देवीजी के 4-5 अति प्रचलित और सौम्य रूपों—(दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, चण्डिका, चामुण्डा, पार्वती, कौमारी) आदि में से किसी भी एक देवी की शरण लेकर भक्तजन कष्टमुक्त हो, सुखमय जीवन प्राप्त कर सकते हैं। अस्तु, नीचे चौंसठ योगिनियों की नामावली, ग्रन्थ-भेद के आधार पर पुनः प्रस्तुत की जा रही है :—

'प्रतिष्ठा-योगिनी' में वर्णित चौंसठ योगिनी—

1. दिव्य योगिनी
2. महायोगिनी
3. सिद्धयोगिनी
4. माहेश्वरी
5. प्रेताक्षी
6. डाकिनी
7. काली
8. कालरात्रि
9. हुङ्कारी
10. सिद्धवेताली
11. ह्रींकारी
12. भूतामयी (भूतडामरी)
13. उर्ध्वकेशी
14. विरूपाक्षी
15. शुष्काङ्गी
16. निशाकरी
17. नरभोजिनी
18. फूत्कारी
19. वीरभद्रा
20. धूम्राक्षी
21. कलहप्रिया
22. राक्षसी
23. घोरक्ताक्षी
24. चण्डी
25. वाराही
26. विशालाक्षी
27. कौमारी
28. मुण्डधारिणी
29. भैरवी
30. विराटी
31. भयङ्करी
32. वज्रधारिणी
33. क्रोधी
34. दुर्मुखी
35. प्रेतवाहिनी
36. कर्कारी
37. दीर्घलम्बोष्ठी
38. मालिनी
39. मन्त्रयोगिनी
40. कालाग्नि
41. मोहिनी
42. चक्रायी
43, कुण्डलिनी
44. बालुकायी
45, कौबेरी
46. यमदूती
47. कपालिनी
48. कौशिकी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

49. यक्षिणी
50. भक्षिणी
51. कौमारी
52. मन्त्रवाहिनी
53. विशाली
54. कार्मुकी
55, काघ्री
56. प्रेतभक्षिणी
57. महाराक्षसी
58. विकटाक्षी (विकटानना)
59. घोररूपा
60. धूर्जरी
61. कपालिका
62. निकला
63. अमला
64. सिद्धिप्रदा

'कालिकापुराण' में वर्णित चौंसठ योगिनी—

शाक्त-ग्रन्थों में एक और बहुत सम्मान्य ग्रन्थ है—'कालिका-पुराण', इस ग्रन्थ में भी चौंसठ योगिनियों का उल्लेख मिलता है। विद्वानों ने इस नामावली को विशेष मान्यता दी है। ये नाम अन्य कई ग्रन्थों में भी प्राप्त होते है। 'मार्कण्डेय-पुराण' में तथा 'श्रीमद् देवी-भागवत्' में भी आदि-शक्ति महामाया दुर्गाजी के अनेक रूपावतारों के सन्दर्भ में इन नामों का उल्लेख किया गया है :—

1, ब्रह्माणी
2. चण्डिका
3. रौद्री
4. इन्द्राणी
5. कौमारी
6. वैष्णवी
7. दुर्गा
8. नारसिंही
9. कालिका
10. चामुण्डा
11. शिवदूती
12. वाराही
13. कौशिकी
14. माहेश्वरी
15. शांकरी
16, जयन्ती
17. सर्वमङ्गला
18. काली
19. कपालिनी
20. मेधा
21. शिवा
22. शाकम्भरी
23. भीमा
24. शान्ता
25. भ्रामरी
26. रुद्राणी
27. अम्बिका
28. क्षमा
29. धात्री
30. स्वाहा
31. स्वधा
32. अपर्णा
33. महोदरी
34. घोररूपा
35. महाकाली
36. भद्रकाली
37. भयङ्करी
38. क्षेमकरी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

39. उग्रचण्डा
40, चण्डोग्रा
41. चण्डनायिका
42. चण्डा
43. चण्डवती
44. चण्डी
45. महामोहा
46. प्रियङ्करी
47. बलविकरिणी
48, बलप्रमथिनी
49. मनोन्मथिनी
50. सर्वभूतयक्षिनी
51. उमा
52. तारा
53. महानिद्रा
54. विजया
55. जया
56. शैलपुरी
57. चन्द्रघण्टा
58. स्कन्दमाता
59. कालराशि
60. मातङ्गी
61. कूष्माण्डा
62. कात्यायनी
63. महागौरी
64. बगला

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3 | साधना-स्थल और समय

वैसे तो देवी-देवताओं का स्मरण-चिन्तन कभी भी, कहीं भी, किसी भी स्थिति में किया जा सकता है, परन्तु जहाँ तक नियमित साधना का प्रश्न है, उसके लिए—तपश्चर्या, ध्यान-पूजा और जप का कोई उपयुक्त स्थान होना चाहिए। किसी अनुष्ठान, पुरश्चरण, साधना अथवा जप के लिए निश्चित समय और स्थान की व्यवस्था आवश्यक होती है। इससे साधकों को तन-मन की शुचिता, सुरक्षा और सुविधा का अनुभव होता है। साधना की सिद्धि का रहस्य यही है कि कोई साधक अपने साधना-क्षणों में इष्ट के प्रति कितना समर्पित रहा है।

स्थान—

स्थान के सम्बन्ध में, आज की भौतिक-अशान्ति और व्यस्तिमय जीवन को देखते हुए, यही उचित होगा कि साधक अपने आवास में ही कहीं एक जगह निश्चित करले—वह कोई कमरा, कोठरी, दालान, छत, फुलवाड़ी, पूजा-गृह जैसा कुछ भी हो—उसी को लीप-पोतकर शुद्ध करलें और वहीं बैठकर उपासना करें। स्थान का चयन करते समय यह अवश्य देखना चाहिए कि वहाँ प्रकाश की, हवा की कमुचित व्यवस्था है, या नहीं? गन्दी, वायुरहित, अन्धकारयुक्त, भीड़भाड़ के कोलाहल से भरी हुई, असुरक्षित और कीड़े-मकोड़ों से युक्त जगह जप-साधना के लिए अनुकूल नहीं रहती। पानी की बौछारें, शोरगुल, तेज हवा के झोंके, तीव्र प्रकाश भी जप में बाधक होते हैं, इसलिए इनका निराकरण अवश्य कर देना चाहिए।

जिन्हें स्थान-चयन की सुविधा हो, वे निम्नलिखित स्थानों में से कोई एक अपने अनुकूल चुन लें और वहाँ नियमिय रूप से जप-साधना करें तो अवश्य ही लाभ का अनुभव करेंगे :—

पर्वतीय-क्षेत्र, कन्दरा, शिलाखण्ड, उपत्यका, गुफा, कुञ्ज, वाटिका, वन, सरिता-तट, किन्हीं दो नदियों के सङ्गम-तट पर, तीर्थ-स्थान, तुलसी-कुञ्ज, किसी देव-वर्गीय-वृक्ष की छाया में (आँवला, अशोक, उदुम्बर, (गूलर), बेल, पीपल, बरगद आदि), देव-मन्दिर, मन्दिर-प्रांगण, कोई सिद्धपीठ, शक्तिपीठ, गोशाला, किसी सन्त-महात्मा की तपस्थली अथवा ऐसा ही अन्य कोई पवित्र स्थान।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाहे जिस स्थान पर जप करना हो, यह अवश्य देख लेना चाहिए कि वह जगह प्रदूषण रहित है न ? आस-पास में कोई बाधक-तत्व तो नहीं है ? युद्धभूमि, बद्धभूमि, हिंसक-पशुओं का निवास, कलह-कोलाहल, अभिनय, समुद्री-ज्वार का क्षेत्र, शिलापात की आशङ्का वाला स्थान, शत्रु की गति-विधियों का क्षेत्र, राजाज्ञा द्वारा निषिद्ध स्थान तथा ऐसी अन्य किसी जगह में, जहाँ अकस्मात् विघ्न पड़ने की आशङ्का हो, जप-साधना के लिए बैठना ठीक नहीं रहता। कारण कि ऐसी स्थिति में नाना प्रकार के विघ्नों की आशङ्का रहती है। विघ्न से तपोभङ्ग होता है, और तपोभंग से सारी साधना ही निष्फल हो जाती है।

साधना के लिए स्थान का चुनाव बहुत गम्भीरता से करना चाहिए। कहीं भी बैठकर जप-ध्यान करने लगें—यह उचित नहीं है। स्थान और वातावरण का प्रभाव साधक के शरीर पर, उसकी मानसिकता पर अवश्य पड़ता है। शोरगुल वाली जगह चाहे जितनी सुन्दर, सुखद और सुरक्षित हो, साधना के लिए उपयुक्त नहीं कही जा सकती। निरन्तर उठने वाली कोलाहल-ध्वनि, साधक का ध्यान भंग कर देती है। इसी प्रकार तीव्र प्रकाश, घना अन्धकार, निर्जन-भयावह स्थान भी ठीक नहीं होते। श्मशान, चिताभूमि, युद्धभूमि, वधभूमि तो सर्वथा निषिद्ध कही गयी है। भीड़भाड़, कोलाहल, आवागमन वाले स्थान भी त्याज्य होते हैं। ऊबड़-खाबड़, जीव-जन्तुओं से संकुल, तथा पशुओं के कारण अरक्षित, सर्पादि की आशङ्का वाले, टूटी छत या टूटी डाल वाले वृक्ष के नीचे, दलदली भूमि, आग के निकट, बाढ़ की सम्भावना वाले क्षेत्र—जैसे स्थान भी साधना के लिए अनुकूल नहीं होते।

कहीं-कहीं कामना-विशेष के लिए, अथवा किसी देवता-विशेष की कृपा-प्राप्ति के लिए—स्थान-विशेष का नियम प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में शास्त्रीय-आदेशों का पालन करना अनिवार्य रहता है। वैसे, सामान्य उपासना के लिए अथवा दैनिक-पूजा के रूप में, किसी भी शुद्ध-स्वच्छ और निरापद-स्थान में बैठकर जप-साधना की जा सकती है। यात्रा के समय, भ्रमण-काल में यही नियम साधक का सहायक बनता है। शास्त्रीय-नियमों की बात अलग, लेकिन अकाट्य है। वैसे, श्रद्धापूर्वक कहीं भी, कभी भी और किसी भी पदार्थ में, ईश्वर (देवी-देवता) की प्रतीति करते हुए उसे पूजने से अभीष्ट देव-शक्ति के सामीप्य का अनुभव अवश्य होता है। श्रद्धा की महिमा अपरम्पार है। श्रद्धा-भावना के आगे सारे नियम और प्रतिबन्ध ध्वस्त हो जाते हैं। नीति-शास्त्र की यह उक्ति चिर-प्रसिद्ध है :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृण्मये ।
भावे हि विद्यते देवाः तस्माद् भावोऽहि कारणम् ।।

आशय यह है कि जहाँ शास्त्रीय-नियमों को साधना-सिद्धि में वरीयता प्राप्त हैं, वहीं मात्र श्रद्धा का अवलम्ब लेकर भी कोई साधक अपने इष्ट-देवता की कृपा प्राप्त कर सकता है। परन्तु आज की भौतिक-चकाचौंध वाले युग में दोनों मार्ग दुष्कर हो गये है। जहाँ नियम-पालन के लिए पूजा में प्रयुक्त होने वाली शुद्ध वस्तुएं नहीं मिल पातीं, सामाजिक-पारिवारिक वातावरण की अशान्ति प्रति क्षण विघ्न उत्पन्न करती रहतीं है, वहीं श्रद्धा भी सहज सुलभ नहीं रह गयी। आज का साधक इतना अधीर अस्थिर-मन और लोभ-स्वार्थ से ग्रस्त है कि सब कुछ तुरन्त चाहता है—रेडीमेड। तन-मन का कलुष और अहङ्कार त्याग कर, स्वयं को इष्ट के चरणों में पूर्णतया समर्पित करते हुए, यदि कोई साधक अनन्य श्रद्धा से इष्टदेव का जप-स्मरण-स्तवन करे तो अवश्य ही उनके दर्शन पा सकता है। कितने ही साधकों ने इस भौतिक-युग में भी श्रद्धा के बल पर दैवी-कृपा की प्रत्यक्ष अनुभूति की है। कोई भी साधक श्रद्धा के साथ इष्ट का स्मरण करके सफल मनोरथ हो सकता है—यह ध्रुव-निश्चित है। मैं कई ऐसे व्यक्तियों को जानता हूँ, जिन्हें देवीं-देवताओं ने कई बार स्वप्न में सन्देश दिये हैं। मेरे निकट-सम्बन्ध की एक महिला है—श्रीमती पद्मा! भगवान शिव और देवी दुर्गाजी ने उन्हें कई बार आश्वस्त किया है। पूजा के समय कई बार उन्हें स्पष्ट अनुभव हुआ कि शिवजी सामने खड़े वरदान दे रहे हैं और दुर्गाजी अपना त्रिशूल उनके चतुर्दिक घुमाते हुए रक्षा का, सङ्कट-मुक्ति का आश्वासन दे रही हैं। देवी लक्ष्मीजी ने भी 'पद्माजी' पर प्रत्यक्ष कृपा की है। जहाँ एक-एक पैसे की तंगी थी, अचानक ही लक्ष्मीजी ने कृपालु होकर सारे अभाव दूर कर दिये। पहले जहाँ 'पद्माजी' को मानसिक, शारीरिक, आर्थिक समस्याएं पीड़ित किये रहती थीं, देवीजी एवं शिवजी की कृपा से बहुत थोड़े समय में ही उनके सारे सङ्कट दूर हो गये। अभावों से मुक्ति पाकर आज श्रीमती पद्मा सानान्यतया शान्त-सुखी जीवन व्यतीत कर रही है।

देवीजी की उपासना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान है—कोई शक्तिपीठ। परन्तु यदि ऐसे स्थान तक पहुँचना सम्भव नहीं है, तो आस-पास के किसी शान्त-एकान्त देवालय में साधना की जा सकती है। नदी-तट, बरगद-पीपल की छाया, वाटिका, वन-प्रदेश, देव-मन्दिर आदि उपासना के लिए श्रेष्ठ स्थल माने गये हैं। किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि वहाँ शान्ति, शुचिता, और सुरक्षा अवश्य है। यदि ऐसा कोई स्थान नहीं मिल रहा, तो अपने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घर में ही किसी कोठरी-कमरे को लीप-पोत कर शुद्ध करके वहाँ उपासना करनी चाहिए। गृहस्थ-जनों के लिए यह सबसे उत्तम व्यवस्था है। किन्तु जो भी स्थान निश्चित करें, उसे एकान्त, सामान्य प्रकाश और वायुयुक्त, शान्त, पवित्र और सुरक्षित होना चाहिए। साधना-काल में, वहीं, भूमि पर चटाई आदि बिछाकर शयन करना लाभकारी होता है। इससे इष्टदेव का सान्निध्य प्राप्त रहता है। हाँ, इस बात की ओर अवश्य सजग रहना चाहिए कि साधक के अलावा दूसरा कोई व्यक्ति साधना-काल में उस स्थान पर न जाये। कारण कि असावधानी वश, परिवार के किसी सदस्य अथवा बच्चे द्वारा पूजन-सामग्री और प्रतिमा आदि छू लेने से अपवित्रता की स्थिति आ जाती है। कुत्ते-बिल्ली आदि पशु भी उस स्थान पर न जा सकें—इस ओर देखना आवश्यक रहता है।

दिशा—

हम जहाँ भी बैठते हैं, आस-पास की स्थिति चार दिशाओं में विभक्त रहती है—आगे, पीछे, दाँये, बाँये। ब्रह्माण्ड की अवस्थिति को देखते हुए पृथ्वी के धरातल पर रहने वाले जन-समुदाय के लिए—चार दिशाओं की परिकल्पना की गयी है—पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। प्रत्येक दिशा का प्रभाव अलग-अलग है। विकिरण, अवरोध, ऊर्जा, अपहरण जैसे प्रभाव इन चारों दिशाओं में, वायु-तरंगों के माध्यम से सक्रिय रहते हैं। आकाशीय-ग्रह-नक्षत्रों की प्रकाश-रश्मियाँ भी इन्हें प्रभावित करती हैं। पृथ्वी के दोनों शीर्ष-बिन्दु (ध्रुव) भी वातावरण में परिवर्त्तन करते रहते हैं। अतः प्रत्येक दिशा का प्रभाव एक दूसरे से भिन्न रहता है।

हम कोई भी कार्य करें, दिशा की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। पूजा-पाठ और जप-साधना के मामले में भी यह नियम लागू होता है। केवल मृतक-संस्कारों को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में दक्षिणोन्मुख होकर बैठने का निषेध किया गया है। पूजा-पाठ में उद्देश्य के अनुसार तत्सम्बन्धी दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए। वायुगत और विकिरणीय-प्रभाव के अनुकूलन को ध्यान में रखते हुए प्राचीन महर्षियों ने यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि साधक को अपने उद्देश्य के अनुरूप दिशा की ओर उन्मुख होकर जप-तप करना विशेष लाभकारी होता है। यथा—

धनागमन की कामना—इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किये जाने वाले जप-तप साधना के समय साधक को चाहिए कि वह पश्चिम-दिशा की ओर मुँह करके बैठें।

शान्ति-लाभ (स्वास्थ्य-पुष्टि)—के लिए पूर्वोन्मुख होकर जप करना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिचार (मारण, विद्वेषण, उच्चाटन)—वैसे तो अभिचार-कर्म सर्वथा त्याज्य है। परन्तु यदि किन्हीं परिस्थितियों में ऐसा कुछ करना अपरिहार्य हो जाय, तो ऐसे उद्देश्य की पूर्त्ति हेतु साधक को दक्षिण-दिशा की ओर मुँह करके साधना करनी चाहिए।

मुहूर्त्त विवेचन—

देव-स्मरण के लिए, अर्थात् जप-तप, पूजा-पाठ के लिए अहोरात्र शुभ समय होता है। कभी भी देव-स्तुति की जा सकती है। प्रतिक्षण प्रभु का स्मरण करना ही तो, वास्तविक साधना है। परन्तु यदि ऐसा सम्भव नहीं है और किसी विशेष प्रकार की साधना करनी है तो समय का ध्यान (साधना आरम्भ करने के लिए विशेष रूप से) रखना आवश्यक होता है। इसमें एक तथ्य यह भी निहित है कि सूर्य-चन्द्र आदि आकाशीय-ग्रहों की किरणों का प्रभाव सदैव एक-सा नहीं रहता। अन्तरिक्ष का प्रकाश-जनित प्रभाव और भौगोलिक-पर्यावरण भी समय को प्रभावित करता है, अतः साधना के लिए अनुकूल समय को वरीयता देनी चाहिए।

अनुकूल समय वही माना जाता है, जो ज्योतिषीय-सिद्धान्तों की कसौटी पर पूर्णतया शुद्ध और निर्दोष है। काल-शोधन के लिए इन बिंदुओं पर विचार कर लेने से शुभ-मुहूर्त्त का निर्धारण सरल हो जाता है।

लग्न—

आध्यात्मिक-ग्रन्थों में प्रत्येक देवी-देवता की उपासना हेतु प्रारम्भिक समय के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। समय का सर्वश्रेष्ठ अंश लग्न होता है। ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र और आधुनिक खगोल-विज्ञान सब में लग्न का प्रभाव स्वीकार किया गया है। लग्न के सम्बन्ध में ऐसी मान्यता है कि प्रायः सभी देवताओं के लिए एक भिन्न लग्न की स्थिति विशेष अनुकूल सिद्ध होती है। यथा—

विष्णु-साधना हेतु—मेष, वृश्चिक, सिंह, कुम्भ।
शिव-साधना हेतु—मेष, कर्क, तुला, मकर।
देवी-साधना हेतु—मिथुन, कन्या, धनु, मीन।

अतः देवीजी से सम्बन्धित किसी भी अनुष्ठान, पूजन, उपासना आदि के लिए यथा-सम्भव उपर्युक्त लग्न को ही वरीयता देनी चाहिए।

योग—

'योग' भी काल-खण्ड की एक इकाई है। इसके निर्माण में तिथि, लग्न, चन्द्र-स्थिति और नक्षत्रादि का सामूहिक प्रभाव रहता है। कुछ योग

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विशेष रूप से शुभ माने गये हैं। अतः साधना में शास्त्रानुसार योग का विचार भी कर लेना चाहिए। वैसे, दिन-तिथि आदि भी उपेक्षणीय नहीं होते। शुद्ध मुहूर्त्त तो तभी प्राप्त होता है, जब समय की सभी इकाइयाँ अनुकूल स्थिति में हों। योग के विवेचन में आर्ष-ग्रन्थों का निर्देश है कि सात्त्विक (शुभ) साधना के लिए निम्नलिखित योग शुभ तथा अनुकूल परिणामदायक होते हैं—प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सुकर्मा, साध्य, हर्षण, वरीयात, शिव, सिद्धि तथा इन्द्र। किसी भी देवी-देवता की पूजा का प्रारम्भ इनमें से किसी एक योग में करना चाहिए।

दिन—

जैसे यात्रा में दिशा से अनुकूलन करने के लिए दिनों का वर्गीकरण किया गया है, ठीक उसी प्रकार साधना प्रारम्भ करने के लिए उद्देश्य-भेद के आधार पर दिनों को भी अनुकूल-प्रतिकूल बताया गया है। सात्त्विक-साधना के लिए सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं। देवीजी की पूजा हेतु शुक्रवार को विशेष महत्त्व दिया गया है। जहाँ तक अभिचार-साधना की बात है, उसके लिए रविवार, मंगल और शनिवार को विशेष प्रभावी कहा गया है। तामसी-वृत्तियों, कृत्यों के लिए ये तामसी दिन सहायक रहते हैं।

नक्षत्र—

आकाश में फैले 27 तारा-समूहों को पृथक्-पृथक् नक्षत्र की संज्ञा दी गयी है। नक्षत्र का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में अवश्य रहता है। कोई भी जातक जिस नक्षत्र में जन्म लेता है, तत्कालीन नक्षत्र से उसका जीवन अवश्य ही प्रभावित, परिचालित रहता है। व्यवसाय, पूजा, यात्रा, निर्माण-कार्य अथवा अन्य कोई पारिवारिक-सामाजिक कार्य का प्रारम्भ करने के समय नक्षत्र का विचार कर लेना चाहिए। देवोपासना के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र इस प्रकार बताये गये हैं--अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाभाल्गुनी, स्वाती, अनुराधा, पूर्वा तथा उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, पूर्वा तथा उत्तराभाद्रा और रेवती। किसी भी देवी-देवता की उपासना-पूजा प्रारम्भ करते समय इनमें से किसी एक नक्षत्र की स्थिति शुभ-परिणामदायक होती है।

तिथि—

तिथि का निर्धारण, हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में बहुत आवश्यक माना गया है। इसका प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ता है। तिथियों के वर्गीकरण में साधना जैसे किसी भी शुभ-कार्य का प्रारम्भ करने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में, निम्नलिखिय में से किसी एक तिथि को अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिए। अशुभ-तिथि (या समय का कोई भी अंश) में प्रारम्भ किया गया कार्य सफल नहीं होता। शुभ तिथियाँ इस प्रकार है :—

द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी और पूर्णिमा।

कुछ तिथियाँ विशेष रूप में शुभ और प्रभावी मानी जाती हैं। यथा—अक्षय-तृतीया, नाग-पञ्चमी, जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, कार्तिक-कृष्णा त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या (दीपावली)।

देवी-देवताओं से सम्बन्धित कुछ अनुष्ठान विशेष रूप से होली-दीपावली और ग्रहण के अवसर पर ही सफलतादायक होते हैं।

आशय यह है कि कोई भी साधना-उपासना प्रारम्भ करनी हो, स्थानीय पण्डित-पुरोहित या किसी ज्योतिषी से तदनुकूल समय पूछ लेना चाहए। कभी-कभी वातावरण में, आकाशीय-ग्रहों की स्थिति, उनकी किरणों के विषाक्त-प्रभाव तथा अन्य अन्तरिक्षीय-गतिविधियाँ दुष्प्रभाव की सृष्टि कर देती हैं। ऐसी स्थिति में प्रारम्भ किया गया कार्य अवश्य ही निष्फल और विघ्न-ग्रस्त हो जाता है।

सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त—

सत्ताईस नक्षत्रों में सर्वाधिक शुभ और प्रभावशाली 'पुष्य' होता है। केवल विवाह को छोड़कर, अन्य कोई भी कार्य इस नक्षत्र में किया जा सकता है। नक्षत्र के साथ दिन की संगति भी देख लेनी चाहिए। यदि किसी गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो, तो किसी भी प्रकार की साधना के लिए वह सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त होता है। इस योग को 'गुरु-पुष्य' कहते हैं। समस्त प्रकार की आध्यात्मिक-साधनाओं के शुभारम्भ हेतु यह सर्वोत्तम मुहूर्त्त माना गया है। इसी प्रकार रविवार के दिन पुष्य-नक्षत्र की स्थिति को 'रवि-पुष्य' कहते हैं। रवि-पुष्य भी 'गुरु-पुष्य' के समान प्रभावशाली होता है। कुछ ग्रन्थों में ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि सात्त्विक-साधना के लिए 'गुरु-पुष्य' और तान्त्रिक-साधना, जड़ी-बूटी संग्रह, तान्त्रिक-प्रयोग आदि के लिए 'रविपुष्य' का मुहूर्त्त लेना चाहिए। अस्तु, यह निर्विवाद है कि रविपुष्य और गुरुपुष्य दोनों ही अत्यधिक प्रभावी योग हैं। इनके आगे तिथि, लग्न, योग आदि अन्य समय-मान नगण्य हो जाते हैं। अतः देवी-उपासना में यदि नवरात्र तथा अन्य कोई शुभ-मुहूर्त्त अथवा रविपुष्य या गुरुपुष्य योग आदि का दिन ध्यान में रखा जाय तो उत्तम रहता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

4 | प्रयोज्य-सामग्री

परिचय—

किसी भी देवी-देवता की पूजा में कुछ वस्तुएं विशेष रूप से प्रयुक्त होती हैं। कुछ वस्तुएं लगभग सभी की पूजा में आवश्यक रहती हैं, जैसे—जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत, हवन-सामग्री, धूप-दीप, नैवेद्य, मुद्रा आदि। चूँकि इस पुस्तक में हमारा प्रतिपाद्य विषय केवल देवीजी की उपासना का विवरण प्रस्तुत करना है, अतः यहाँ केवल प्रमुख देवी-अवतारों की पूजा-उपासना से सम्बन्धित सामग्री और विधि-विधान का उल्लेख किया जा रहा है। हम यह नहीं कह सकते कि यही विधि सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण है, शेष सब त्याज्य हैं। स्वानुभव के आधार पर विभिन्न प्राचीन मनीषियों ने अनेक विधियों की सफलता प्रमाणित की है। ग्रन्थों में इसीलिए अन्तर दीख पड़ता है। परन्तु वे सब शुद्ध और अपने में पूर्ण हैं। किसी की उपेक्षा या निन्दा नहीं की जा सकती। जैसे एक रोग के निवारण हेतु अनेक औषधियों की खोज की गयी है, वैसे ही—एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक पूजन-पद्धतियों की परिकल्पना की गयी है। अब यह साधक की श्रद्धा और सामर्थ्य पर निर्भर है कि वह किस पद्धति से अपनी साधना पूरी करे। लाभ तो होगा ही।

किसी भी प्रकार की उपासना, तपश्चर्या एवं अनुष्ठान में प्रयोज्य-सामग्री के विषय में निम्नांकित तथ्य ज्ञातव्य हैं :—

जल—

जल ही जीवन है। जीवन का कोई भी भाग या कालखण्ड ऐसा नहीं है, जिसमें जल की आवश्यकता न पड़ती हो। मनुष्य के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जल की आवश्यकता रहती है। मानव-जीवन ही नहीं, अखिल सृष्टि की अस्तित्व-रक्षा में जल का प्रमुख स्थान है। मनुष्य, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी और वनस्पति तक सब जल से ही जीवन धारण करते हैं। यहाँ तक कि भौतिक-पदार्थों (जड़-विज्ञान) में भी 'जल' परम उपादेय माना गया है। अस्तु, पूजा-साधना की सामग्री में जल का प्रमुख स्थान है। उपासना-गृह की लिपाई-पुताई से लेकर देव-प्रतिमाओं के स्नान, चन्दन,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धूप-दीप, हवन और नैवेद्यार्पण तक में जल का प्रयोग बराबर किया जाता है।

साधना प्रसंग में प्रयोजनीय-जल कई प्रकार का होता है—गंगा-जल, सामान्य नदी का जल, कूप-जल, तीर्थ-जल और सरोवर का जल। गंगाजल सर्वोत्तम होता है। आजकल गंगाजल के विषय में अनेक प्रकार प्रवादं फैल रहे हैं। परन्तु सचाई यही है कि इन नगरों का गन्दा पानी और कारखानों का दूषित जल गंगा में गिरकर उसके जल को विषाक्त करता रहता है जो गंगा किनारे बसे हुए हैं। हरद्वार से कलकत्ता तक कई ऐसे नगर हैं, जो अपने प्रदूषित जलोत्सर्जन के लिए कुख्यात हैं। हरिद्वार, फर्रुखाबाद, कानपुर, इलाहाबाद और बनारस का सारा तरल-प्रदूषण गंगा में गिरता है। कल्पना से ही रोमाञ्च हो आता है कि जिस नदी में चमड़े के कारखानों का पानी गिरता हो, शहरों के गन्देनाले संगम करते हों, प्रतिदिन हजारों लाशें प्रवाहित की जाती हों, हजारों चिताएं बुझाकर बहायी जाती हों, वह नदी कब तक और कैसे प्रदूषण-मुक्त रह सकेगी? अतः आज गंगाजल की पवित्रता संदिग्ध हो गयी है। फिर भी जिन्हें सुलभ हो, वे गंगातट के किसी स्वच्छ स्थान से थोड़ा गहराई में जाकर, साफ-सुथरा जल ला सकते हैं। यदि आस-पास में कोई गन्दगी नहीं प्रवाहित हो रही हो तो वहाँ का जल लिया जा सकता है।

जिन्हें गंगाजल उपलब्ध न हो, वे सहज विश्वास के साथ कुएं का या समीपस्थ किसी अन्य नदी, तीर्थ, सरोवर का जल ला सकते हैं।

चाहे जहाँ से जल लिया जाय. उसे शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल और साफ मँजे-धुले बर्त्तन में होना चाहिए। जल-पात्र ढँका रखना चाहिए, ताकि उसमें कूड़ा-करकट और कोई कीट-पतंग न जा सके। पूजा के समय आवश्यकतानुसार पात्र में जल लिया जा सकता है।

चन्दन—

वैसे तो 'चन्दन' एक विशेष जाति के वृक्ष को कहते हैं। उसके काष्ठ को घिसने से सुगन्धित-लेप बनता है। वह लेप देव-प्रतिमा को लगाया जाता है। साधक-जब उसे अपने मस्तक पर भी लगाते हैं। कितनी ही औषधियों में भी उसका प्रयोग होता है। उपयोगिता के आधार पर उस वृक्ष, उसके काष्ठ (लकड़ी) और लेप—सभी को 'चन्दन' कहते हैं। परन्तु प्रयोगानुसार, अध्यात्म (पूजा-पाठ) के क्षेत्र में वे सभी पदार्थ 'चन्दन' माने जाते हैं, जिनके लेप का तिलक की भाँति प्रयोग किया जा सके।

चन्दन का वृक्ष कई जातियों में पाया जाता है। भारत में मैसूर-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राज्य में इसके जंगल हैं। चन्दन की लकड़ी मूल्यवान होती है। लकड़ी पक जाने पर ही सुगन्ध देती है। मौलश्री के पेड़ से बहुत मिलता-जुलता यह वृक्ष देखने में कोई बहुत सुन्दर नहीं होता, परन्तु अपनी गुणवत्ता (सुगन्ध) के आधार पर वनस्पति-जगत् का सबसे मूल्यवान वृक्ष माना जाता है। चन्दन के पेड़ दो रंग की लकड़ी वाले होते हैं—श्वेत और लाल। सफेद चन्दन—शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि पुरुष-वर्गीय देवताओं की पूजा में प्रयुक्त होता है। लाल चन्दन की लकड़ी लाल होती है। इसका लेप भी लाल होता है। यह चन्दन देवी-वर्ग की प्रतिमाओं को अर्पित किया जाता है। लाल चन्दन में सुगन्ध नहीं होती, जब कि सफेद चन्दन अपनी मादक-सुगन्ध के लिए विश्व में लोकोक्ति की तरह प्रचलित है। मान्यता तो यहाँ तक है कि चन्दन के वृक्षों में सर्प लिपटे रहते हैं, कारण कि वे उसकी मादक-सुगन्ध से मोहित होकर उसके पास चले आते हैं। अस्तु, देव-पूजा में चन्दन एक प्रमुख उपादान है। पुरुषवर्गीय देवताओं को श्वेत और देवी-वर्ग के लिए रक्त (लाल) चन्दन का प्रयोग करना चाहिए।

प्रसंग और साधना-विशेष के आधार पर कहीं-कहीं चन्दन काष्ठ के लेप की जगह अन्य पदार्थों से भी लेप तैयार करने का विधान है। केसर, कुमकुम, गोरोचन, हल्दी आदि पदार्थों का लेप भी चन्दन की भाँति प्रयुक्त होता है। किसी-किसी पूजा-साधना में केवल भस्म (हवनकुण्ड की अथवा धूपबत्ती की राख) का सूखा लेप ही चन्दन की पूर्त्ति करता है।

आज के भौतिक-विज्ञानियों ने भी स्वीकार किया है कि चन्दन का लेप त्वचा, वायु, प्रकाश और पर्यावरण में अद्भुत परिवर्तन कर देता है। यह व्यक्ति की मानसिकता को भी तुरन्त प्रभावित करता है। अस्तु, पूजा के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहाँ किस चन्दन के लिए निर्देश किया गया है। देवताओं की रुचि में भी अन्तर होता है, इस कारण उनके पुष्प-परिधान में भिन्नता देखी जाती है। मनीषियों ने अनुभव के आधार पर निर्दिष्ट किया है कि चन्दन का प्रयोग इस प्रकार करें :—

- देवी-पूजा में लाल चन्दन।
- विष्णु-पूजा में पीला चन्दन।
- राम-पूजा में श्वेत-चन्दन।
- शिव-पूजा में श्वेत-चन्दन अथवा भस्म। शिवजी को भस्म से बड़ा प्रेम है। उज्जैन में महाकालेश्वर की प्रतिमा को तो प्रतिदिन ताजी चिता-भस्म का लेप किया जाता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अक्षत—

पूजन-सामग्री में 'अक्षत' को एक प्रमुख घटक माना जाता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अक्षत का शाब्दिक-अर्थ होता है— क्षत न होने वाला, अर्थात् जिसका क्षय न हो—नष्ट न होने वाला, न टूटने वाला, दीर्घजीवी, अमर, शाश्वत और पवित्र। पूजन-सामग्री में अक्षत का आशय है—चावल। धान के दानों को कूट-छीलकर चावल निकाला जाता है। चावल हमारे भोजन का प्रमुख अन्न है। यही चावल के दाने पूजन-क्रिया में प्रसंगानुसार प्रयुक्त हैं। उन्हें 'अक्षत' कहते हैं। सामान्य रूप में चावलों का रंग सफेद रहता है। परन्तु पूजा के लिए उन्हें यथानियम लाल-पीले रङ्गों—कुमकुम या हल्दी, केसर, चन्दन आदि से रँग लिया जाता है। शिव, गणेश और देवी-पूजन में 'अक्षत' अर्पित करना—षोडशोपचार-विधि के अन्तर्गत आता है। अक्षत के प्रयोग में यह सावधानी बरतनी चाहिए कि चावल के दाने टूटे, कटे, घुने अथवा गन्दे न हों। प्रयोग के पूर्व चावलों को धो लेना चाहिए।

पुष्प—

वनस्पति-जगत में हम सैकड़ों प्रकार के फूल देखते हैं। फूल जहाँ एक ओर सृष्टि के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे सुगन्ध भी प्रसारित करते है। करौंदा, मेंहदी, बेर, कटहल, आम जैसे पेड़ों के फूल अपनी सुगन्ध से आस-पास का वातावरण इतना मादक बना देते हैं कि जो भी उधर से निकलता है, तृप्त हो जाता है। कुछ पौधे अपने फूलों के लिए विख्यात हैं। वे रूप, गुण और सुगन्ध तीनों में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इसी वर्ग के कई फूल देवार्चन में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु यहाँ यह तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि सब फूल सब देवताओं के लिए प्रयोज्य नहीं होते। कई फूल कई देव-पूजाओं में वर्जित हैं। यों, सामान्य रूप से कोई भी प्रचलित फूल प्रयुक्त हो सकता है, फिर भी निषेध का ध्यान रखना चाहिए। श्रद्धा के साथ यदि नियम-पालन भी होता रहे तो सोने में सुगन्ध जैसी स्थिति बन जाती है। बेला, चमेली, कुन्द, गेंदा, कमल, गुड़हल, गुलाब, केवड़ा, धतूरा, मदार आदि के फूल देव-पूजन में काम आते हैं। परन्तु सब फूल सबके लिए स्वीकृत नहीं हैं। धतूरा-मदार के फूल केवल शिव-प्रतिमा पर चढ़ाये जाते हैं। इसी प्रकार तगर-पुष्प का प्रयोग सूर्य-पूजा में वर्जित है। देवी-पूजा में कनेर, धतूरा, मदार आदि के पुष्प वर्जित हैं। साधारण रूप में सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गाजी आदि देवी-विग्रहों पर कमल, गुड़हल, गुलाब, गेंदा के फूल चढ़ाये जाते हैं। यों, अपनी श्रद्धा-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सामर्थ्य के अनुसार, साधक कोई भी फूल प्रयोग में ला सकता है। तो भी वर्जित पुष्प नहीं लेना चाहिए। इस विषय में या तो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ से, या फिर किसी योग्य विद्वान्—पण्डित-पुरोहित से पूछ लेना चाहिए। प्रचलित नियमों के अनुसार शिवजी की पूजा में सफेद, विष्णु की पूजा में पीले और देवीजी की उपासना में लाल रङ्ग के पुष्प प्रयुक्त होते हैं। अस्तु, पूजा में देवता की प्रकृति और रुचि के अनुसार ही पुष्पों का निर्णय करना चाहिए।

धूप—

पूजा के समय धूपदानी में अङ्गारे रखकर उस पर कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मिश्रण छिड़का जाता है। इस क्रिया को 'धूप देना' कहते हैं। अङ्गारों पर मिश्रण छिड़कने से सुगन्धित धुआँ उठता है। यह धुआँ सामान्य कोयले के धुएँ की तरह काला न होकर, प्रायः सफेद होता है। वास्तव में धूप-क्रिया हवन-क्रिया का संक्षिप्त रूप है। आज के व्यस्त-जीवन में समय-साध्य हवन-क्रिया—दैनिक-पूजन में सम्भव नहीं है, इसलिए लोग धूप देकर उसकी भावनात्मक पूर्त्ति कर लेते हैं। यह संक्षिप्तता अब तो यहाँ तक बढ़ गयी है कि अङ्गारे और धूप की व्यवस्था के झंझट से बचने के लिए लोग झटपट धूपबत्ती (माचिस के द्वारा) सुलगा देते हैं। धूपबत्ती का प्रयोग भी 1-2 मिनट का समय ले लेता है, इसलिए उससे बचने का विकल्प अगरबत्ती में खोजा गया है। अगरबत्ती सुलगाने में आधे मिनट का समय लगता है। बस, सुगन्धित धुएँ की कमी इससे पूरी हो जाती है। परन्तु जहाँ तक विधि-विहित धूप-क्रिया की बात है, हवन या कम-से-कम अङ्गारों पर धूप देना ही श्रेयस्कर है। धूपबत्ती साधारणतम और अगर-बत्ती निम्नतम सामग्री है। यथा-सम्भव अगरबत्ती का प्रयोग कतई न करके धूपबत्ती अथवा धूपदानी में अङ्गारों पर धूपन-क्रिया को वरीयता देनी चाहिए।

बाजार में हवन-सामग्री के पैकेट बिकते हैं। किसी प्रसिद्ध निर्माता की हवन-सामग्री लेकर, उसमें घी, शक्कर, जौ, तिल, अक्षत मिला देने से उत्तम हवन-सामग्री बन जाती है। यह सामग्री किसी विशेष जप-अनुष्ठान के लिए किये जाने वाले हवन में भी प्रयुक्त हो सकती है। वैसे दैनिक-प्रयोग के लिए बाजार की हवन-सामग्री में केवल घी-शक्कर मिला देने से भी उत्तम हव्य तैयार हो जाता है। किन्तु जब किसी देवी-देवता की विशेष रूप से पूजा की जा रही हो, तब उस पूजन-विधान के अनुसार हवन-सामग्री की व्यवस्था करनी चाहिए। उदाहरण के लिए किसी पूजा में, गूगल से हवन करने का विधान होता है, किसी में लोबान से, किसी में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काष्ठ-विशेष (बरगद की लकड़ी, गूलर की लकड़ी, कोई पत्ता-विशेष, कोई अन्न विशेष आदि) का नियम निर्दिष्ट है। अतः विशिष्ट पूजन के सन्दर्भ में उससे सम्बन्धित हवन-क्रिया और सामग्री की जानकारी कर लेना चाहिए।

अगरबत्ती में बाँस की तीली लगी होती हैं। और चूँकि बाँस का प्रयोग ईंधन के रूप में सर्वथा वर्जित है (यह तो शव के साथ चिता में जलता है) अतः बाँस की तीली से बनी अगरबत्ती अपने दूषित प्रभाव से, धूप-क्रिया को सदोष कर देती है। जिनके लिए अङ्गारों पर धूप देना सम्भव न हो (शहरों में गैस और स्टोव के प्रचलन से चूल्हे समाप्त हो गये है, अतः अङ्गारों का अभाव रहता है) वे किसी अच्छी श्रेणी की धूप-बत्ती का प्रयोग कर सकते हैं।

धूप देने के पीछे केवल आध्यात्मिक-नियम की प्रतिबद्धता ही नहीं है, इसके पीछे एक विज्ञान-सम्मत तर्क भी निहित है— धूपबत्ती की गन्ध और उसका धुआँ वातावरण की विषाक्तता को दूर करके, उसका शुद्धीकरण करता है। विभिन्न कारणों से वायुमण्डल में जो प्रदूषण उत्पन्न होता रहता है: हवन या धूप से निकलने वाला धुआँ उसके आस-पास के वातावरण को मुक्त करके स्वच्छ, निर्मल, प्राणपोषक और स्फूर्तिदायक बनाता है। परीक्षा के लिए देखें—जब हम किसी सड़े हुए फल, अन्न या कीचड़-मिट्टी की बू पाते हैं, तुरन्त जी मिचला उठता है—मिचली आने लगती है और लगभग सभी इन्द्रियाँ अपनी स्वाभाविक-स्थिति के विपरीत व्याकुलता का अनुभव करने लगती हैं। परन्तु जब हम किसी सुगन्धित पदार्थ के निकट होते हैं, हमारी घ्राणेन्द्रिय किसी सुवास का—केवड़ा, चमेली, मेंहदी (हिना) खस, केसर, कस्तूरी, कपूर आदि का स्पर्श करती है, हम तुरन्त ही आनन्द-विभोर हो उठते हैं। आशय यह है कि सुगन्ध और दुर्गन्ध का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य और तत्काल पड़ता है। धूप देने का विधान, वस्तुतः वातावरण के शोधन के उद्देश्य से किया गया है। अतः पूजा के समय, नियमानुसार धूप की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि यदि कोई व्यक्ति नित्य सुबह-शाम अपने घर, कमरे, पूजा-गृह बैठक में, जहाँ भी वह रहता हो, यदि लोबान या गूगल की धूनी दे दिया करें तो उसकी मनोवृत्ति, स्वास्थ्य, आर्थिक-स्थिति और वारिवारिक बातावरण पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव को और अधिक प्रत्यक्ष, सशक्त बनाने के लिए यदि वह धूप देते समय किसी मन्त्र का जाप (उच्चारण) करता रहे तो निश्चित रूप से अलौ-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किक अनुभूति पाता है। आशय यह है कि चाहे जैसे भी हो, किसी न किसी रूप में घर में हवन (धूप-क्रिया) अवश्य होती रहनी चाहिए।

दीप—

'दीपक' को भारतीय-संस्कृति में चेतना, श्री-समृद्धि, ज्ञान और जागरूकता का प्रतीक माना जाता है। इसी कारण जीवन के प्रत्येक आयाम में, प्रकारान्तर से दीपक का उपयोग किया जाता है। यहाँ तक कि मृत्योपरान्त व्यक्ति की समाधि पर भी दीपक जलाया जाता है।

देव-स्थान में, देव-पूजन में, किसी भी माङ्गलिक-कार्य के अवसर पर, जब अनुष्ठान के समय दीपक जलाना अनिवार्य कहा गया है। कहीं साधारण रूप में, कहीं कलश पर रखकर, कहीं दीवट पर, दीपक की उपयोगिता और महत्ता सर्वत्र स्वीकृत है।

साधना-भेद से, दीपक में प्रयुक्त होने वाला स्नेह (चिकनाई) क्या हो, इसके लिए किसी योग्य विद्वान् से पूछ लेना चाहिए। सामान्यतः घी का दीपक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से, आज के मिलावटी और महँगे युग में, घी का दीपक जलाना सामान्य नागरिक के लिए असम्भव जैसा है। ऐसी स्थिति में यदि घी का प्रबन्ध नहीं हो सकता, तो मीठे तेल (तिल या गरी का तेल) का दीपक जलाया जा सकता है। सरसों का तेल भी दीपक में प्रयुक्त होता है। नियमानुसार घी (गौ-घृत की बात तो असम्भव है) का दीप जलायें। नहीं मिल रहा, या सामर्थ्य के बाहर है, तो अपने इष्ट-देवता से अपनी आर्थिक-स्थिति और विवशता का निवेदन करते हुए क्षमा माँग लें और मीठे तेल का (या फिर सरसों के तेल का ही) दीपक जलायें। ध्यान रखने की बात यह है कि साधना-काल में दीपक बुझना नहीं चाहिए, वह निरन्तर जलता रहे। मोमबत्ती, चर्बी का दीपक, मिट्टी के तेल का दीपक (चिमनी या कुप्पी) वर्जित है। ये साधन घरेलू-प्रकाश के लिए भले ही उपयोगी हैं, परन्तु पूजा-पाठ में इन्हें न लेकर, तेल या घी का दीपक ही जलाना चाहिए। बिजली की बत्ती (जीरो-वाट लाल बल्ब) भी मुख्य पूजा-स्थल पर, दीपक का विकल्प नहीं बन सकती। अतः यथाशक्ति घी या तेल का ही दीपक जलाना चाहिए।

अन्धकार तमोगुण का प्रतीक है। अन्धेरे में आसुरी-वृत्तियाँ प्रबल हो उठती हैं। वायव्य-दोष भी उत्पन्न होकर अनेक प्रकार के विघ्न उत्पन्न करते हैं। प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक कहा गया है। प्रकाश अर्थात् ज्ञान के रहते—भय-भ्रम की आशङ्का नहीं रहती। अतः दीपक जलाकर प्रकाश

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फैलाये रखने को शास्त्रीय-मान्यता दी गयी है। चाहे दिन का समय हो या रात का, पूजा-साधना के स्थान पर मध्यम-ज्योति का दीपक अवश्य जलाये रखना चाहिए। यहाँ एक वैज्ञानिक-तथ्य भी द्योतक है—घी अथवा तेल की दीपक की रोशनी अपनी सौम्य-ज्योति से मस्तिक और हृदय को अद्भुत शान्ति और शुचिता प्रदान करती है, जब कि गैस-बत्ती, लालटेन, मशाल और चिमनी का प्रकाश आँखों को—साथ ही, मन-मस्तिष्क को, अप्रत्यक्ष-पीड़ा और अशान्ति उत्तेजना से भर देता है।

नैवेद्य–

किसी भी देवता की पूजा में—धूप-दीप के पश्चात् नैवेद्य-समर्पण का विधान, साधना का अनिवार्य अङ्ग है। नैवेद्य को प्रचलित भाषा में 'भोग लगाना' अथवा 'प्रसाद अर्पित करना' कहते हैं। वैसे, देवतागण वस्तु को नहीं, भावना को देखते हैं, अतः भक्त द्वारा चाहे जो कुछ भी, श्रद्धा-भक्ति से, प्रेम-समादर से अर्पित किया जाये—वे स्वीकार कर लेते हैं। फिर भी, सबकी रुचि एक समान नहीं होती—यह तथ्य देवता और मनुष्य दोनों वर्गों में समान रूप से पाया जाता है। अतः यथासम्भव अपने इष्ट-देव की रुचि का पदार्थ प्रस्तुत करना चाहिए। जहाँ तक देवी-साधना का सम्बन्ध है, देवी के सौम्य रूपों—दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा आदि की पूजा में पञ्च-मेवा का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए। यह भी न हो सके तो केवल गरी, मिश्री के टुकड़े अथवा बताशे ही रखे जा सकते हैं। काली जी की पूजा में अनेक शाक्त-ग्रन्थ बलिदान का समर्थन करते हैं। किन्तु यह सर्वमान्य नियम नहीं है। मैं स्वयं भी उसे ग्रहणीय नहीं मानता। काली जी चाहे जितनी भयानक रूप-रेखा वाली, उग्र और क्रुद्ध मुद्रा में हों, भक्त के लिए वे माता ही हैं। मेरी धारणा है,मांसाहारियों ने, स्वयं की लालसा-पूर्त्ति (मांस-भक्षण के लिए) बलि-विधान बना लिया है, यह शास्त्रीय-तथ्य नहीं है। कालीजी रक्त-पान अथवा मांस-भक्षण से ही तृप्त-प्रसन्न हों, ऐसी बात नहीं है। सौम्य देवी-स्वरूपों वाला नैवेद्य उन्हें भी अर्पित किया जा सकता है। अनेक प्राचीन साधकों ने इस विषय में मध्य-मार्ग की खोज की है। वे बलि-क्रिया तो सम्पादित करते हैं, परन्तु उसमें जीव-हत्या नहीं होती। बकरे की बलि न देकर, वे नारियल को काटते (फोड़ते) हुए काल्पनिक बलि-क्रिया सम्पन्न करते हैं। नारियल को मानवाकार मानकर, वे उसकी बलि देते हैं, ताकि देवी प्रसन्न हो। मैं तो इस भावना का भी विरोधी हूँ। मेरा अपना मत है—नारियल को एक समूचे फल के रूप में देवी को अर्पित किया जाये, फिर उसे फोड़कर प्रसाद रूप में स्वयं को और पिरवारी-जनों को दिया जाये। किन्तु यह भी अकाट्य नियम नहीं

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है। समस्त साधना-उपासना का बिन्दु है—श्रद्धा। श्रद्धा सहित, सर्वथा निर्दम्भ भाव से, स्वयं को देवी के चरणों में पूर्णतया समर्पित करके, भक्त चाहे जिस प्रकार से उनकी पूजा करे, वे दया-ममता पूर्वक उसकी रक्षा करते हुए, वाञ्छित लक्ष्य तक उसे पहुँचा देती हैं। पञ्चमेवा अथवा नारियल की व्यवस्था हो सके तो बहुत ही उत्तम है, नहीं हो सकती तो कोई भी फल, मिष्ठान्न, खाद्य वस्तु, सहज भक्ति और विनय के साथ देवीजी को अर्पित की जा सकती है। घी, दूध, मक्खन, मिश्री, मेवा, फल, अन्न एवं मिष्ठान्न जैसी वस्तु नैवेद्य के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। हालाँकि आज के युग में कितना भी निर्धन व्यक्ति हो, यदि वह देवीजी की शरण लेता है, पूजा-उपासना करता है, तो किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ नैवेद्य अवश्य जुटा सकता है। गरी, छुहारा, किसमिस, चिरौंजी, मखाना, मिश्री, बताशा, गुड़, केला, अनार, अमरूद या कोई भी मधुर फल नैवेद्य के रूप में अर्पित किया जा सकता है। मिश्री और बताशा तो आज सर्वसुलभ मिठाइयाँ हैं। इन्हीं में से एक को लेकर काम चलाया जा सकता है।

हवन—

पूजा में धूप देना, देवता के प्रति एक प्रमुख उपचार-क्रिया है। इसका मूल उद्देश्य होता है, देवता की प्रसन्नता हेतु एक उपादान प्रस्तुत करना—चन्दन, अक्षत, पुष्प की भाँति सुगन्धित-वातावरण की सृष्टि के लिए धूप और प्रकाश उत्पन्न करने के लिए दीप का प्रयोग किया जाता है। कुछ विद्वान् धूप को ही हवन का विकल्प मान लेते हैं। परन्तु वास्तव में धूप और हवन में मौलिक अन्तर है। धूप में देवता का स्मरण करते हुए सुगन्धित धूम्र की उत्पत्ति की जाती है, धूपबत्ती, अगरबत्ती अथवा अङ्गारों पर कोई सुगन्धित द्रव्य छिड़क कर धुआँ उत्पन्न किया जाता है और तदुपरान्त धूपदान उठाकर आरती की भाँति देवार्चन किया जाता है। हवन-क्रिया इससे नितान्त भिन्न होती है। उसमें विधिवत् वेदी-निर्माण करके, आम अथवा काष्ठ-विशेष की अग्नि में निर्धारित मन्त्रोच्चार करते हुए 'स्वाहा' शब्द के साथ हवन-सामग्री हव्य के रूप में डाली जाती है।

हवन-सामग्री का निर्माण उस देवता तथा उपासना से सम्बन्धित नियमों के अनुसार किया जाता है। प्रत्येक देवता के लिए हवन का मन्त्र भिन्न होता है। साथ ही, आहुतियों की संख्या भी अलग-अलग होती है। यों, बहुत से समर्थ गृहस्थ-जन दैनिक-पूजा में भी पूर्व व्यवस्था के अनुसार, 11-21-51 आहुतियाँ देकर हवन करते रहते हैं। अतः जैसी सुविधा हो, जैसी व्यवस्था सम्भव हो, उसी के अनुसार उपासना-क्रिया में हवन का विधान करना चाहिए। किसी-किसी देवता के लिए हवन-सामग्री में दुर्लभ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अथवा अति सामान्य वस्तुओं की संयोजना का निर्देश रहता है। अतः इस विषय में अपने उपास्य-देव से सम्बन्धित पूजन-क्रिया को किसी स्थानीय पण्डित-पुरोहित अथवा अनुभवी गृहस्थ से समझ लेना चाहिए। मैं साधु-महात्माओं का निन्दक नहीं हूँ, उनके प्रति बड़ी आस्था रखता हूँ, परन्तु ये जो गली-गली गेरुवा वस्त्रधारी बाबा साधु वेश बनाये घूम रहे हैं, ये केवल नाटक के विदूषक हैं। इन्हें देव-स्तुति का एक श्लोक भी नहीं आता। ये मात्र अपने वाग्जाल, आडम्बर और वेश-विलास के सहारे, श्रद्धालु-मूर्खजनों को (विशेषकर महिलाओं को) प्रभावित करके अपना पेट पालते रहते हैं, बस। इनसे किसी प्रकार का आध्यात्मिक परामर्श लेना, स्वयं को दिग्भ्रमित करना है।

समिधा–

प्रत्येक उपासना में हवन के लिए काष्ठ-विशेष का विधान होता है। यह नहीं कि लकड़ी के नाम पर कोई भी लकड़ी प्रयुक्त करली जाय। आम, गूलर (उदुम्बर), वट (बरगद), पलाश (ढूल) जैसे वृक्षों की लकड़ी प्रसङ्ग-भेद से भिन्न-भिन्न देवताओं के लिए किये जाने वाले हवन में प्रयुक्त होती है। कब कहाँ क्या आवश्यक है और क्या निषिद्ध है, यह सब बातें किसी से समझ लेना चाहिए। दैनिक-पूजा में सामान्य अङ्गारों पर किये जाने वाले संक्षिप्त हवन (धूप-क्रिया) में भी यह बात ध्यान में रखने की है कि वे अङ्गारे कण्डा या बाँस, बबूल, पत्थर के कोयले, रासायनिक पदार्थ, कूड़ा-करकट, रबर, कागज, घास-फूँस या चमड़े को जलाकर न बनाये गये हों। यथा सम्भव किसी फल वाले वृक्ष आम आदि की लकड़ी का अङ्गार लेना चाहिए। घरों में प्रायः आम, नीम, महुआ, पलाश, बरगद की लकड़ी जलायी जाती है, इनके अङ्गारे लिये जा सकते हैं। सबसे उत्तम व्यवस्था तो यह है कि थोड़ी आम की लकड़ी लेकर रखली जाये और उसी से आवश्यकतानुसार अङ्गारे बना लिये जायें। आम की लकड़ी का कोयला भी प्रयुक्त हो सकता है। पूजा के समय उसे घी या किसी भी साधन से जलाकर (मिट्टी के तेल से नहीं) अङ्गार बनाया जा सकता है। इस प्रकार हवन-क्रिया के लिए समिधा रूप में प्रयुक्त की जाने वाली लकड़ी और हवन-सामग्री की समुचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

दान-दक्षिणा–

किसी भी प्रकार की पूजा-साधना हो, उसके लिए किये गये हवन के पश्चात् यथा-सामर्थ्य 1, 5, 7, 11 या इससे अधिक ब्राह्मणों, बालक-बालिकाओं को भोजन अवश्य कराना चाहिए। स्मरण रहे कि यह सब

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कृत्य सहज श्रद्धा-विनय-भाव से किये जायें। आडम्बर, अहङ्कार अथवा अपकार जैसी भावना मन में आते ही सारी साधना खण्डित हो जाती है, अतः भोजन, दान के समय मन में तनिक भी अहं न रखकर सहज सामान्य अथवा परम विनीत मनःस्थिति में रहना चाहिए। भोजन-दान के लिए कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। तो भी इतना अवश्य ध्यान में रखें कि जो भी खाद्य-पदार्थ दिया जाय, वह स्वच्छ और शुद्ध होने के साथ सुस्वादु भी हो। पूड़ी, मिठाई, खीर जैसा कुछ भी भोजन दिया जा सकता है।

व्यवस्था कुछ ऐसी हो कि जिस समय आपकी हवन-क्रिया समाप्त प्रायः हो, रसोई में भोजन भी बन रहा हो, ताकि आप हवनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन करा सकें।

भोजन कराते समय वाणी-व्यवहार पर सन्तुलन रखें। कटुता या क्रोध-शोक का आभास न होना चाहिए। भोजन करने वाले से विनम्रता पूर्वक, स्नेह-सम्मान के स्वर में पूछ लेना चाहिए कि उसे और क्या चाहिए। इस तरह प्रेम-श्रद्धापूर्वक उसे भोजन-तृप्ति देकर, पान-इलायची जैसा कुछ दें, फिर चलते समय उसे सामर्थ्य के अनुसार एक रुपये से लेकर 51 या 101 तक जो भी सम्भव हो, दक्षिणा दें और अपनी भूल-चूक के लिए क्षमा-याचना करते हुए—कृपा की लालसा प्रकट करें। स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि यदि कोई सच्चरित्र और सौम्य ब्राह्मण भोजनोपरान्त सहज प्रसन्न मन से, प्रस्थान के समय कोई आशीर्वाद दे दे तो वह लगभग प्रत्यक्ष घटित हो जाता है। हालाँकि आज के युग में ऐसा धीरज संयम सम्भव नहीं रहा, फिर भी साधकजन करते ही रहते हैं। मानसिक-चिन्ता, चञ्चलता पर अंकुश हो जाये—बस, सारी व्याधि दूर हो जाती है। पूजा-पाठ, जप-तप, साधना-उपासना तभी सार्थक होते हैं, जब साधक परम तन्मय भाव से उसमें लीन हो।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5 | आसन और माला

आसन—

आसन का अर्थ है—वह आधार वस्तु, जिस पर साधक स्थिर होकर बैठता है। सामान्यतः लकड़ी का पीठा, पाटा, चटाई आदि को आसन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। परन्तु अध्यात्म के क्षेत्र में पूजा-पाठ के लिए ये आसन वर्जित हैं। प्राचीन मनीषियों ने वनस्पति-शास्त्र की भाँति पदार्थ विज्ञान में भी पारङ्गति प्राप्त की थी और इस आधार पर उन्होंने अपने अनुभवों से सिद्ध किया था कि किस वस्तु के आसन पर बैठने की कैसी शारीरिक-मानसिक प्रतिक्रिया होती है, कौन-सा आसन कैसा प्रभाव उत्पन्न करता है। इसकी व्याख्या में कहा गया है—

रेशमी (कौशेय) आसन का प्रयोग शुभ होता है। अर्थात् रेशमी आसन पर बैठकर साधना करने से साधक की तमाम व्याधियाँ-परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। किन्तु सूती आसन पर बैठना अशुभ है। यहाँ मतभेद भी है, कुछ लोग सूती आसन को शुभ मानते हैं। ऊनी आसन सर्व-सम्मति से लाभकारी होता है। कुश (घास-विशेष) का आसन बहुत ही श्रेष्ठ और प्रभावशाली होता है। इसी प्रकार मृगचर्म तथा व्याघ्र-चर्म के आसन भी शुभ माने गये है। वैसे, आसनों का निर्धारण साधना-विशेष (लक्ष्य-विशेष) के आधार पर करना चाहिए। आसन में पदार्थगत प्रभाव तो होता ही है, उसके रङ्ग का प्रभाव भी पड़ता है। सफेद आसन शान्तिदायक होता है, बहुरङ्गी ऊनी आसन साधना में सिद्धि प्रदान करता है, लाल रङ्ग का आसन देवी अवतारों की उपासना में विशेष लाभकारी रहता है। विशेष रूप से महामाया देवी की आराधना करते समय ऊनी आसन, कामाख्या की साधना में मृगचर्म का, शिव, विष्णु और त्रिपुरसुन्दरी की साधना में कुश का आसन प्रयोग करना विशेष लाभदायक रहता है।

आसनों के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रकार उल्लेख किया गया है :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"वंशासने तु दारिद्र्यं, पाषाणे व्याधि सम्भवः ।
धरण्यां दुःख सम्भूति, दौर्भाग्य छिद्रि दारुजे ।।"
(—पञ्चरात्र संहिता)

"काम्यार्थं कम्बलं चैव, श्रेष्ठं च रक्त कम्बलम् ।
कुशासने मन्त्रसिद्धिः, नात्र कार्या विचारणा ।।"
(—ब्रह्मपुराण)

"तूल कम्बल वस्त्राणि, पट्ट व्याघ्र मृगाजिनम् ।
कल्पयेदासनं धीमान, सौभाग्य ज्ञान सिद्धिदम् ।।
कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्भासाप्ति व्याघ्र चर्मणि ।
वस्त्राजिनें व्याधि नाशः कम्बले दुःख मोचनम् ।।
अभिचारे नीलवर्णं च रक्तं वश्यादि कर्मणि ।
शान्तिके कम्बलः प्रोक्तं, सर्वस्मिन्नपि कम्बलः ।।"
(—पुरश्चरण दीपिका)

प्रत्येक आसन, अपनी भौतिक-संरचना के आधार पर कुछ विशिष्ट प्रभाव से संयुक्त होता है। पदार्थगत प्रभाव को देखते हुए, आसनों का फल-निर्देश इस प्रकार किया गया है :--

"सर्वसिद्धौ व्याघ्रचर्म, ज्ञानसिद्धौ मृगासनम् ।
वस्त्रासनं रोग हरं, बेत्रजं श्री विवर्धनम् ।।
कौशेय पौष्टिकं प्रोक्तं, कम्बलं दुःख मोचनम् ।
स्तम्भने गज चर्मस्यान, मारणे माहिषं तथा ।।
मेषचर्म तथोच्चाटे, खाङ्गिनं वश्यकर्मणि ।
विद्वेषे जाम्बुकं प्रोक्तं, भवेत् गोचर्म शान्तिके ।।"
(—पुरश्चरण चन्द्रिका)

उद्देश्यानुकूल आसन—

प्रायः साधकजन किसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए ही साधना करते हैं। यहाँ उद्देश्य-भेद के आधार पर आसनों का वर्गीकरण किया जा रहा हैं। किस कार्य के लिए कौन-सा आसन उपयोगी और सिद्धिदायक होगा, इसका निर्धारण निम्नलिखित रूप में, प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध है :—

- कार्य में सफलता-प्राप्ति हेतु की जाने वाली साधना में—मृगचर्म का आसन।
- आरोग्य-लाभ के लिए—कुश का आसन।
- कामना-पूर्त्ति हेतु—ऊनी आसन (कम्बल)।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

- अर्थ-लाभ (धन-प्राप्ति हेतु)—रेशमी (कौशेय) आसन।
- सम्मोहन-वशीकरण—कृष्ण मृगचर्म का आसन।
- शत्रु-नाश हेतु—वाघम्बर (व्याघ्र-चर्म) का आसन।
- मारण, विद्वेषण, उच्चाटन (अभिचार)—अजा-चर्म (बकरे की खाल) का आसन।
- मोक्ष-प्राप्ति के निमित्त—वस्त्र (सूती कपड़ा) का आसन।
- ज्ञान-प्राप्ति हेतु—कुश का आसन।
- भाग्योदय हेतु—रेशमी आसन।
- दाम्पत्य-सुख के लिए—ऊनी आसन।
- वैभव-सम्पदा हेतु—सिंहचर्म का आसन।
- सन्तान-प्राप्ति के लिए—कुश का आसन।

निषिद्ध आसन–

गाँवों-नगरों में काम-काज के अवसर पर प्रायः नाई-बारी लोग यजमान (साधक) के लिए पत्तल को उलट कर आसन के रूप में बिछा देते हैं, और वह उसी पर बैठकर अपनी पूजा-उपासना पूरी करता है। सत्यनारायण भगवान की कथा एवं अन्य व्रत-पूजन, हवनादि, क्रिया-कर्म आदि के अवसर पर मैंने स्वयं पचासों बार पत्तल के आसनों पर लोगों को बैठे देखा है। घास-फूँस, तिनकों से भी चटाई-नुमा आसन बनाकर प्रयोग में लाये जाते हैं। बाँस की खपच्चियों से भी बैठने के लिए आसन बनते हैं। परन्तु साधना-क्षेत्र में ये तीनों—पत्तल, घास-फूस और बाँस के आसन वर्जित हैं।

इनके सम्बन्ध में प्रतिक्रिया का उल्लेख इस प्रकार मिलता है :—

- बाँस द्वारा निर्मित आसन का प्रयोग दरिद्रता उत्पन्न करता है—"वंशासने तु दारिद्र्यं....."
- पत्थर के आसन (शिलाखण्ड, चौकी, पीठा, कुर्सी, बेंच आदि) पर बैठकर साधना करने वाला व्यक्ति रोग-ग्रस्त हो जाता है—"पाषाणे व्याधि सम्भवः।" यदि पत्थर पर बैठना ही है (वह क्षेत्र पर्वतीय हैं), तो उस पर कोई शुभ-आसन (कम्बल, कुशासन, कौशेय, मृगचर्म) आदि बिछा लेना चाहिए।
- पत्तल को आसन के रूप में (पतरी पर बैठकर) प्रयुक्त करने वाले साधक की मनो-शान्ति भङ्ग हो जाती है—"पल्लवे चिन्त विभ्रमः।"

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

- नङ्गी भूमि (धरती) पर बैठकर जप-साधना करना वर्जित है नङ्गी धरती साधक के शरीर की सारी ऊर्जा खींचकर उसे दुर्बल बना देती है। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित रहता है—"धारण्यां दुःख सम्भूति....."
- घास-फूस के तिनकों से बनाया गया आसन भी शुभ नहीं होता। उसके लिए निषेध है कि घुनी-सड़ी लकड़ी का आसन और तिनकों का आसन—यह सब घोर दरिद्र की उत्पत्ति करते हैं।

अतः चाहे जैसे भी हो, उपर्युक्त निषिद्ध आसनों का प्रयोग, नहीं करना चाहिए। साधना, इष्टदेवता, उद्देश्य और देश-काल के अनुरूप सुलभता को ध्यान में रखते हुए, कोई भी शुभ-आसन प्रयोग किया जाये।

सारे ऊहापोह और अनिश्चय, आशङ्का से मुक्ति पाने के लिए सर्वश्रेष्ठ आसन यही दो हैं—कुश का आसन और ऊन का आसन।

माला—

साधकों के लिए 'माला' एक अति आवश्यक वस्तु है। इसका निर्माण विभिन्न प्रकार के दानों से होता है। किसी एक वस्तु के दानों (प्राय, वानस्पतिक-पदार्थ) को धागे में पिरोकर हार की आकृति दे दी जाती है। उसी को 'माला' कहते हैं। माला के दाने 'मनका' कहलाते हैं। प्रत्येक मनका भिन्न प्रभाव से युक्त होता है। मनके—वनस्पति, फलों के बीज, काष्ठ, मूलांश (जड़ के टुकड़े), पत्थर, रत्न, धातु आदि से बनाये जाते हैं। उद्देश्य-विशेष के लिए मनका-विशेष की स्वीकृति दी गयी है।

सामान्य रूप से माला-निर्माण (मनके बनाने) में निम्नलिखित वस्तुओं के (कोई भी एक—आवश्यकतानुसार) मनके प्रयुक्त होते हैं :—

1. मूँगा	7. चाँदी	13. स्फटिक
2. मोती	8. सोना	14. रत्नीय पत्थर
3. रुद्राक्ष	9. वैजयन्ती	15. हरीका
4. तुलसी	10. कमलगट्टा	16. हड्डी
5. स्फटिक	11. पुत्रजीगा	17. रेशम
6. कुशग्रन्थि	12. शंख	18. हल्दी

उद्देश्य और माला—

मन्त्र-जप की संख्या पूरी करने के लिए 'माला' सबसे उत्तम, आवश्यक और प्रभावशाली उपादान हैं। जप के समय मानसिक एकाग्रता और मन्त्र-जप के साथ-साथ अंगुलि-सञ्चालन के द्वारा [illegible]

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDAL
LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
ACC No. 3312

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भी माला सर्वाधिक उपयोगी होती है। माला में 108 दाने होते हैं। यह संख्या अनेक पौराणिक, वैज्ञानिक और दार्शनिक तथ्यों की स्वीकृति से निर्धारित है। यदि कोई व्यक्ति किसी मन्त्र का दस माला जप करता है: तो यह अर्थ निकलता हैं कि उसने 1080 बार मन्त्र का जप किया। प्रति माला, एक-सौ मन्त्र की गणना का हिसाब लगाकर 100 माला जप करने से उस मन्त्र का 10,000 जप पूरा हो जाता है। माला के अभाव में इस संख्या की निश्चित स्थिति सम्भव नहीं है। कैसे भी माला जपते समय उँगलियों का संचालन एक क्रम और निश्चित स्थिति में होता है, जो सीधे ब्रह्मरन्ध्र को, श्वास-प्रश्वास को और चिन्तन-क्रिया को प्रभावित करता है। अतः मन्त्र-जप के समय माला का उपयोग बहुत सावधानी से, नियम-पूर्वक करना चाहिए। माला जपते समय शारीरिक-स्थिति, जप की गति, मन्त्र का उच्चारण (वह मौन या मुखर चाहे जैसा हो) बहुत सन्तुलित रहना चाहिए। 27 या 54 दानों की माला को एक पूरक विकल्प ही कहा जा सकता है, पूर्ण माला की वास्तविक मनका-संख्या 108 ही है। सुमेरु का दाना प्रत्येक माला में अलग से होता है, वह चाहे 27 दानों की हो, या 54 की या 108 की। कुछ विशेष साधनाओं में मनकों की संख्या पर मतान्तर भी प्राप्त होता है। यथा—कामना-पूर्ति के हेतु 27 या 108 दानों की माला रखना चाहिए। अर्थ-प्राप्ति (द्रव्य) के लिए 30 दानों की, अकस्मात् उत्पन्न समस्याओं के लिए 54 दानों की माला श्रेष्ठ मानी गयी है। अभिचार-साधना में 15 दानों की माला प्रयुक्त होती है, मेरा मत है कि सात्त्विक-साधना के लिए, वह चाहे जिस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए की जा रही हो. एक सम्पूर्ण माला अर्थात् 108 मनकों वाली माला का ही प्रयोग करना चाहिए।

तान्त्रिक-ग्रन्थों में उद्देश्य-विशेष की पूर्त्ति के लिए पदार्थ-विशेष की माला प्रयुक्त करने का निर्देश प्राप्त होता है। कुछ विशिष्ट प्रयोजनों और उनसे सम्बन्धित मालाओं का विवरण इस प्रकार है :—

विष्णु-कृपा-प्राप्ति के लिए—

भगवान विष्णु को लक्ष्मीपति और समस्त विश्व के पालनकर्त्ता होने का गौरव प्राप्त है। वे चराचर के स्वामी और पूर्णब्रह्म हैं। उनकी उपासना से साधक कोई भी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। विष्णु-पूजा में वैजयन्ती की माला सर्वश्रेष्ठ कही गयी है। वैसे, तुलसी अथवा चन्दन (श्वेत) की माला भी उत्तम होती है और विष्णु-भक्त उसे बड़ी श्रद्धा से प्रयोग करते हैं। ये सभी मालाएं जप के लिए तो उत्तम हैं ही, इन्हें धारण करने से भी बहुत लाभ होता है। किन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि धारण की जाने वाली--जप में प्रयोजनीय मालाएं, दोनों एक ही जाति की होने पर भी, अलग-अलग होनी चाहिए। जप की माला - केवल जप के लिए तथा धारणीय माला– केवल धारण करने के लिए ही उचित कही गया है।

गणेश-उपासना में–

विघ्न-विनाशक, विद्या-बुद्धि के दाता और धन-वैभव तथा कल्याण की वृद्धि करने वाले श्री गणेशजी को देवताओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त है। कोई भी मङ्गल-कार्य हो, सबसे पहले गणेशजी की पूजा-स्तुति की जाती उनकी साधना में मन्त्र-जप के हेतु गज-दन्त (हाथी-दाँत) अथवा लाल-चन्दन की माला उत्तम होती है। किसी विशेष प्रयोजन पर हल्दी की माला भी प्रयुक्त हो सकती है।

तारा-साधना में–

देवी दुर्गाजी का एक रूप 'तारा' भी है। यह भी बहुत प्रभावशाली देवी हैं। तारा-साधकों को शंख की माला श्रेयस्कर कही जाती है। चूंकि तारा की गणना दश महाविद्याओं में होती है, अतः ये देवी का प्रामाणिक-अवतार है। इनकी पूजा में तनिक भी प्रमाद न होकर, पूर्ण श्रद्धा, नियम और विधान का पालन करना चाहिए।

धन-प्राप्ति (अर्थ-लाभ) के लिए–

चाहे जिस देवता की पूजा की जा रही हो, कुछ विद्वानों के मतानुसार यदि उस साधना का उद्देश्य धन-प्राप्ति है, तो साधक को चाहिए कि वह मन्त्र-जप में मूंगे की माला का उपयोग करें।

दुर्भाग्य-नाश के लिए–

यदि किसी व्यक्ति पर कोई अभिशाप है, वह पातक-ग्रस्त अथवा दुर्भाग्य से पीड़ित है, तो उन व्याधियों के निवारण हेतु की जाने वाली साधना में मन्त्र-जप के लिए 'कुशमूल' (कुशा नामक घास की जड़ की गाँठों को मनके के रूप में पिरोकर बनायी गयी) की माला सर्वोत्तम होती है।

सन्तान प्राप्ति (पुत्र-कामना) के लिए–

यदि कोई साधक सन्तान-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी दैवी-शक्ति की उपासना करता है, तो उसके लिए यह विशेष फलदायी होगा कि वह पुत्र-जीवा की माला से अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप करे। पुत्रजीवा—'यथा नाम, तथा गुणः' मानी गयी है। अतः सन्तान की कामना रखने वालों के लिए उत्तम होगा कि वे 'पुत्रजीवा' माला का प्रयोग करें।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सात्विक-कामना-पूर्ति हेतु—

दशकर्म के अन्तर्गत परिगणित शान्ति अथवा पुष्टि-कर्म (सामान्य सात्त्विक-कामनाओं की पूर्ति हेतु) के लिए साधक को चांदी की (चाँदी के बने मनकों वाली) माला का प्रयोग करना चाहिए।

सांसारिक-वैभव अथवा मोक्ष-प्राप्ति के लिए—

यदि कोई साधक सांसारिक-वैभव, भौतिक-सम्पदा, सुख-विलास की लालसा-पूर्ति के लिए किसी देवता का मन्त्र-जप करता है, अथवा मोक्ष-प्राप्ति के लिए कोई उपासना करता है तो उसके लिए चाहिए कि वह लाल चन्दन की माला का प्रयोग करे।

सामान्यतया—

रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती है। यह समस्त प्रकार की साधनाओं में प्रयोग की जा सकती है (अभिचार-साधना को छोड़कर)। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, त्रिपुरा, गणेश, शिव, विष्णु, कृष्ण, रामचन्द्र, दत्तात्रेय आदि अनेक देवी-देवताओं की उपासना में, रुद्राक्ष-माला पर मन्त्र-जप किया जा सकता है। यह सर्व प्रकार से शुभ, सिद्धि-प्रदायक, रक्षाकारी और अलौकिक दैवी-शक्ति सम्पन्न होती है। किन्तु यह तथ्य भी स्मरण रखना चाहिए कि तामसी-साधना में (यक्षिणी, भैरवी, कपाली आदि की उपासना) रुद्राक्ष की माला का प्रयोग वर्जित है। रुद्राक्ष की भाँति, पुत्रजीवा और कमलगट्टा की माला का प्रयोग भी अभिचार-साधनाओं में वर्जित है। मोती की माला भी प्रयुक्त होती है (सात्त्विक साधनाओं में), परन्तु आज के युग में उसकी यल्पना भी नहीं की जा सकती। 'मोती' एक मूल्यवान रत्न है। साथ ही, शुद्ध मोती सुलभ भी नहीं होता, तब उसकी माला बनाने की बात ही असम्भव-सी लगती है। सामान्य व्यक्ति के लिए तो वह स्वर्णरूप है। अतः अपने उद्देश्य और इष्टदेव के लिए उचित-निर्दिष्ट माला का प्रयोग ही श्रेष्ठ होता है। प्रयोग-भेद से ये मालाएं सात्त्विक-साधना हेतु उत्तम कही गयी है—

1. रुद्राक्ष माला
2. राजमणि माला
3. लालचन्दन माला
4. शंख माला
5. मूँगा माला
6. कमलगट्टा माला
7. तुलसी माला
8. अकीक माला
9. श्वेत-चन्दन माला
10. हल्दी की माला
11. मोती माला
12. वैजयन्ती माला
13. पुत्रजीवा माला

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इनमें सर्वश्रेष्ठ मालाएं हैं—रुद्राक्ष, चन्दन और तुलसी। साधक अपनी सुविधानुसार इनमें से कोई भी एक माला ले सकते है। दैनिक-पूजा में जप हेतु ये बहुत ही उत्तम होती हैं।

माला कैसे जपें ?

दैनिक-पूजा के रूप में तो कोई भी माला, सहज ढङ्ग से जपी जा सकती है, परन्तु किसी विशेष-उद्देश्य की पूर्ति के लिए—साधना-विशेष की सफलता के लिए—माला जपने के भिन्न-भिन्न नियमों का निर्देश प्राप्त होता है। माला जपने में उँगलियों की सक्रियता ही मनकों का सञ्चालन करती हैं। किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, किस साधना में, माला के मनके किस उँगली से सरकाये जाने चाहिए—इस विषय पर प्राचीन ग्रन्थों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। साधना और जप-तप के आदि मनीषियों ने बताया है कि साधक को चाहिए कि वह अपने उद्देश्य के आधार पर माला जपने का नियम पालन करे। इनके अनुसार—

आकर्षण-सम्मोहन के लिए—

यदि किसी साधक की लालसा है कि वह किसी व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को अपनी ओर आकर्षित करे, दूरस्थ व्यक्ति के मन में अपने प्रति आकर्षण का भाव उत्पन्न करे, किसी को अपनी ओर सम्मोहित करे, अनुकूल बनाये, वैचारिक मतभेद को मिटाकर उसे अपना समर्थक बना ले, तो ऐसे सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साधक को चाहिए कि वह पूजा. साधना के समय मन्त्र-जप में इस बात का ध्यान रखे कि आकर्षण सम्बन्धी जप में माला फेरने के लिए अनामिका (मध्यमा और कनिष्ठिका के बीच की उँगली) और अँगूठे का प्रयोग करें। अर्थात् आकर्षण सम्बन्धी जप के लिए माला फेरने में सिर्फ दो उँगलियों—अनामिका और अँगूठे का प्रयोग करना चाहिए।

स्तम्भन-वशीकरण के लिए—

यद्यपि कुछ विद्वानों के मतानुसार स्तम्भन और वशीकरण (सम्मोहन भी) जैसे कर्म 'अभिचार' की श्रेणी से आते हैं, परन्तु उद्देश्य-भेद से ये कृत्य सौम्य भी हो सकते हैं। अस्तु, चाहे जैसी भावना और स्थिति हो, स्तम्भन तथा वशीकरण जैसे प्रयोगों के लिए किये जाने वाले मन्त्र-जप हेतु माला सरकाने में अँगूठे का सञ्चालन करना चाहिए। आशय यह है कि अँगूठे के सहारे माला के मनके सरकाये जायें।

पुष्टि-कर्म (शान्ति, कल्याण । सौम्य-कृत्य)—

शान्ति कर्मों—स्वास्थ्य, आरोग्य, समृद्धि, श्रद्धा-भक्ति, लोक-हित,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देव-स्मरण, आध्यात्मिक-सिद्धि आदि के लिए किये जाने वाले जप में भी अँगूठे द्वारा माला का सञ्चालन किया जाता है।

अभिचार कर्मों में—

उच्चाटन, विद्वेषण आदि कृत्य 'अभिचार' कहे जाते हैं। इनकी पूर्त्ति के लिए माला जपने में तर्जनी और अँगूठे को सञ्चालित करना चाहिए।

मारण प्रयोग, 'अभिचार कर्मों' का चरम-बिन्दु और निन्द्यतम रूप है। इसे नहीं करना चाहिए। यह उत्य हत्याकाण्ड जैसा पातक माना जाता है। वैसे प्रसङ्ग-पूर्त्ति के लिए संकेत में लिख रहा हूँ---मारण प्रयोग की सिद्धि हेतु किये जाने वाले जप में अँगठे और कनिष्ठिका के द्वारा माला का सञ्चालन करना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

6 देवी-साधना : नियम और निषेध

साधना—

देवी अथवा किसी भी देवता या दैवी-तत्त्व की साधना का विषय हो, उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए 'श्रद्धा' सबसे पहले और सर्वाधिक आवश्यक होती है। श्रद्धा के अभाव में, चाहे जैसे विधि-विधान से उपासना की गयी हो, वह निरर्थक ही सिद्ध होती है। आस्था, विश्वास, निष्ठा और भक्ति—यह सब उसी 'श्रद्धा' के प्रतिरूप हैं। श्रद्धा के बाद विधि का महत्त्व माना गया है। विधि की व्याख्या में विधान, नियम, पद्धति आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। विधि के पश्चात् निषेध की ओर भी देखना चाहिए। यदि निषेध के सम्बन्ध में साधक को ज्ञान नहीं है और विधिवत् उपासना करते हुए भी, भ्रम से कहीं किसी निषेध का उल्लंघन कर जाता है, तो उसकी साधना खण्डित हो जाती है। यही कारण है कि ऐसे साधना, उपासना आदि कार्यों में गुरु की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी है।

गुरु अपने ज्ञान और अनुभव से साधक का मार्ग-दर्शन करता रहता है। केवल पुस्तक पढ़कर साधना की पद्धति समझ में आ जाये, ऐसा सबको सम्भव नहीं होता। यदि पाठक—योग्य विद्वान् और अनुभवी है, तब तो वह पुस्तक के माध्यम से पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर लेगा, परन्तु सामान्य व्यक्ति के लिए, पुस्तक से अधिक गुरु का प्रत्यक्ष निर्देश बिशेष रूप से लाभकारी रहता है।

अब यह बात अलग है कि वह गुरु कैसा, कितना योग्य अनुभवी और सात्त्विक मनोवृत्ति का है। यदि सचमुच वह एक आदर्श-गुरु के गुणों से सम्पन्न हैं, तो अवश्य ही साधक को अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। परन्तु यदि वह गुरु केवल आडम्बर-सेवी, स्वार्थ और लोभ से युक्त कोई सामान्य सांसारिक-व्यक्ति है, तब उसका निर्देशन कोई सुप्रभाव नहीं डाल सकेगा। आजकल के अधिकांश गुरु और स्वामी ऐसे ही हैं। भव्य वेशभूषा और मधुर वागजाल के बावजूद न तो वे साधना के बारे में कुछ जानते हैं, और न साधक को सफलता ही दिला पाते हैं। उनका लक्ष्य मात्र यह रहता है कि किसी तरह साधक अपने समस्त परिवारी-जनों के सहित उनका अन्ध-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त बन जाये और घर की भारी रकम उन्हें अर्पित करके बराबर दास-वृत्ति अपनाये हुए उनकी सेवा करता रहे। ऐसे छद्माचरण और आडम्बर के लिए आज भारत के कितने ही तथाकथित सन्त, जो स्वयं को 'अवतार' अथवा 'भगवान' घोषित करते हैं, विदेशों तक कुख्यात हैं। देखने में वे दाढ़ी, चोटी, जटाजूटधारी, भगवा वस्त्र पहनने वाले, प्रवचन में ज्ञान-ध्यान और अपनी करामातों का रोचक वर्णन करते हुए, स्वयं को अलौकिक पुरुष सिद्ध करते हैं, परन्तु वास्तव में वे माया-मोह में लिप्त, पक्के व्यवसायी, षड़यन्त्री, और व्यापारी होते हैं। ऐसे महापुरुषों से साधक को कोई आध्यात्मिक-लाभ नहीं हो पाता।

गुरु का विकल्प-

गुरु का अर्थ है, ज्ञान देने वाला! जो भी व्यक्ति हमें ज्ञान के पथ पर अग्रसर कर सके, हमें दिशा-निर्देश देकर लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक बन सके—वही गुरु है। आज के घोर भौतिक और आस्थाहीन युग में गुरु और साधक—दोनों वर्ग लुप्त होते जा रहे हैं। फिर भी जहाँ जो हैं, वे अपनी निष्ठा, साधना, संयम और ज्ञान के बल पर आध्यात्मिक-क्षेत्र में सफल-मनोरथ होते रहते हैं। भौतिक-समृद्धि ही सब कुछ नहीं होती, शान्ति और सन्तुष्टि का स्थान उससे कहीं ऊपर है। अस्तु, यदि किसी साधक को कोई साधना करनी है और आस-पास में कोई योग्य विद्वान् ब्राह्मण-पुरोहित या साधु-सन्त नहीं है, तो उसके लिए विकल्प रूप में निर्देश है कि वह अपनी पुस्तक, जिसे पढ़कर वह साधना की ओर उन्मुख हुआ है, को देवीजी की प्रतिमा मानकर पूर्ण निष्ठा से उसे पढ़ ले। फिर किसी शुभ-मुहूर्त्त में साधना प्रारम्भ करे। गुरु के रूप में वह शिवजी की और जगन्माता के रूप में पार्वतीजी की स्तुति-पूजा करके मानसिक रूप में उन्हीं को अपना गुरु मान ले। फिर पुस्तक पढ़कर उसके निर्देशों का पालन करते हुए साधना प्रारम्भ करें। पूरी साधनावधि में उसे यह दृढ़ प्रतीति रखनी चाहिए कि शिव और पार्वतीजी मेरे दाँये-बाँये विराजमान हैं और प्रत्येक कार्य को सुधार रहे हैं और मैं उनकी कृपा से निर्विघ्न आगे बढ़ता जा रहा हूँ।

यदि साधक शिवजी का नहीं, बल्कि अन्य किसी देवता का उपासक है, तो अपने उन्हीं इष्टदेवता को गुरु मानकर उपासना प्रारम्भ कर सकता है। जिन्हें ऐसी मानसिक-स्थिरता और किसी देवता-विशेष के प्रति समर्पण भावना नहीं है, वे तत्काल किसी भी देवता की, या केवल दुर्गाजी की शरण ले सकते हैं। आशय यह है कि मनुष्य रूप में गुरु की प्राप्ति सम्भव न हो तो, किसी देवी-देवता की मानसिक-आराधना करते हुए उसी को गुरु के रूप में स्वीकार कर लेना श्रेयस्कर रहता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधना का समय—

वैसे तो किसी भी साधना के लिए प्रातःकाल का समय सर्वश्रेष्ठ होता है, परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में एक निश्चित समय को वरीयता देने का विधान है। किसी साधना में सायंकाल, किसी में अर्द्ध-रात्रि का समय, किसी में प्रभात-बेला और किसी में दोपहर का निर्देश किया गया है। अतः जहाँ जिस समय का संकेत दिया गया हो, वहाँ उसी समय में साधना करनी चाहिए। हाँ, प्रारम्भ करने के दिन शुभ-मुहूर्त्त अवश्य हो। शुभ मुहूर्त्त के लिए स्थानीय-पण्डित, पुरोहित से पूछ लेना अच्छा रहता है। यदि सुविधा हो तो देवी-साधना के लिए नवरात्र का समय लेना चाहिए। वासन्ती और शारदीय-नवरात्र को देव्योपासना के लिए सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त माना गया है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के दिन 'नवरात्र' कहे जाते हैं,यह अवधि प्रत्येक दृष्टि से प्रत्येक कार्य के लिए परम शुभ मानी गयी है। कोई भी साधना इस समय आरम्भ की जा सकती है। साधना ही नहीं, कितने ही सामाजिक-कार्य, निर्माण तथा व्यवसाय आदि इस अवधि में बड़ी आस्था से आरम्भ किये जाते हैं। देवी-पूजा के लिए तो यह कालावधि सर्वोत्तम कही गयी हैं। दुर्गाजी के किसी भी रूप-अवतार की पूजा-उपासना के लिए नवरात्र का समय परम कल्याणकारी, सफलतादायक, सहज-सिद्ध और मङ्गलमय होता हैं। अतएव साधकजन प्रायः देवी सम्बन्धी अनुष्ठान नवरात्र में ही करते हैं। वैसे, वर्ष के मध्य से कभी भी पुरोहित से पूछकर किसी शुभ दिन से साधना प्रारम्भ की जा सकती है। वे लोग नक्षत्र, तिथि, योग आदि की गणना करके सरलता से शुभाशुभ की सूचना दे देते हैं। पंचाङ्ग-जन्त्री देखकर भी शुभाशुभ समय का पता लगाया जा सकता है। परन्तु किसी अभ्यस्त पण्डित से पूछ लेना अधिक निरापद रहता है, कारण कि वे लोग ज्योतिष की बारीकियों को सामान्य-व्यक्ति की अपेक्षा अधिक समझते हैं। हालाँकि पण्डितों में भी मतभेद रहता है। कोई विद्वान् दिन को वरीयता देते हैं, कोई तिथि को. कोई योग को और कोई नक्षत्र को। उत्तम यह होगा कि सभी दृष्टियों से विचार कर, कोई प्रबलतम और शुद्धतम मुहूर्त्त निकाला जाय। मुहूर्त्त का प्रभाव सुनिश्चित होता है। शुभ-मुहूर्त्त में आरम्भ किया गया कार्य सफलता और सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रखता है, जबकि अशुभ-मुहूर्त्त में आरम्भ कार्य सदैव विघ्न-ग्रस्त रहता है। उसमें सफलता तो संदिग्द होती ही है, और भी कई प्रकार के व्याघात उत्पन्न कर साधक को पीड़ित करते रहते हैं। इसलिए जब भी कोई साधना

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(कोई भी कार्य) आरम्भ करना हो, उसके लिए शुभ-मुहूर्त्त—दिन, तिथि आदि की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

प्रयोज्य वस्तुएं—

प्रत्येक साधना में कुछ विशेष सामग्री प्रयुक्त होती है। इसके विषय में भली-भाँति जानकारी करके वह समस्त वस्तुएं पहले से सँजो लेना चाहिए, जैसे आसन, माला, फूल, चन्दन, चित्र, प्रतिमा, यन्त्र, हवन-सामग्री और नैवेद्य आदि।

साधना-विधि—

किसी भी पूजा-उपासना में उसकी विधि, नियम, करणीय, त्याज्य तथा अन्य निर्देशों का पालन अवश्य करना चाहिए। वैसे, तो समन्वय की दृष्टि से कई प्रकार के सरलतम विधान भी बताये गये हैं, परन्तु यदि नियम-पालन के साथ, जो कि अपेक्षाकृत कष्टसाध्य होते हैं, साधना की जाय तो अति उत्तम होता है। अस्तु: यह सब साधक की शारीरिक-क्षमता, वातावरण, आर्थिक-स्थिति, साधनों की उपलब्धता तथा उसकी योग्यता और मानसिकता पर निर्भर है। एक ही नियम सबके लिए आवश्यक और अकाट्य नहीं है। सारभूत तथ्य यह है कि पूर्व श्रद्धा और संयम-नियम के साथ साधना की जाय।

साधना-सम्बन्धी कुछ विशेष तथ्य सर्व-स्वीकृत हैं, अतः उनके प्रति साधक को अवश्य ही सजग रहना चाहिए। देवी के चाहे जिस रूप की (किसी भी देवता की) उपासना करनी हो, इन बिन्दुओं की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए :—

1. स्थान, 2. समय, 3. प्रतिमा-प्रतीक. 4. आसन, 5. माला, 6. मन्त्र, 7. न्यासादि, 8. हवन, 9, दान, 10. निषेध।

संक्षेप में इनका विवरण इस प्रकार है :—

व्यावहारिक दृष्टि से, आज के व्यस्त-युग में साधना के लिए वांछित वातावरण और स्थान मिलना कठिन हो गया है, क्योंकि जिस युग में अध्यात्म-साधना के नियम निर्धारित किये गये थे, आज का वातावरण उससे नितान्त भिन्न है। यान्त्रिक-विस्तार से उत्पन्न प्रदूषण, कोलाहल, शारीरिक-व्याधियाँ और विकृत-मानसिकता का कहीं नाम भी नहीं था। अतः वर्त्तमान परिवेश को देखते हुए प्राचीन नियमों-परम्पराओं से उसका सामञ्जस्य बिठाया जाये। कारण कि अब न तो पहले जैसी शान्ति है, न सुरक्षा। प्राकृतिक परिवेश भी वैसा नहीं रह गया। आज तो यह हालत है कि अपनी सुन्दरता, अगाध जल-राशि: अद्भुत प्रभाव और पावनता के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लिए प्रसिद्ध गङ्गा भी गन्दी और जुगुप्साकारी दीख रही है। सिर्फ गङ्गा ही नहीं, यमुना, घाघरा, सोन, वेतवा, नर्मदा आदि किसी भी नदी का प्रवाह और प्रभाव अब पहले जैसा नहीं रहा। इसी प्रकार पर्वतीय अञ्चलों में भी अब न तो पहले जैसी शान्ति है, न वह पावनता। वे तनस्पतियाँ और पशु भी नहीं रहे। सर्वत्र तथा-कथित विज्ञान की दानवी-संस्कृति मानवीय-सम्वेदनशीलता, चरित्र और नैतिकता को पददलित करके अट्ट-हास कर रही है। यही स्थिति सागर-तटों की भी है। संस्कृत-काव्यों में वर्णित उपवन, वन-प्रस्तर, जलाशय, मन्दिर, पर्वताञ्चल और नदी, सागर-तट, सब अपनी प्राकृतिक-सम्पदा से सर्वथा वञ्चित, कृत्रिम-सौन्दर्य का शव-परिधान खड़े हैं। शान्ति, शुचिता, सुरक्षा और आत्म-तुष्टि के स्थान पर अब वहाँ उपद्रव, प्रदूषण, हिंसा-हत्या, कोलाहल और लोभ-चिन्ता का उग्ररूप दृष्टिगत होता है। अतः साधना के लिए प्राचीन नियमों से हटकर व्यावहारिक-मार्ग अपनाना ही श्रेयस्कर होगा।

साधना के नियम--

देवी-साधकों के लिए नियम पालन अनिवार्य होता है। किसी भी देवी-रूप की पूजा-उपासना कर रहे हों, यह आवश्यक है कि तन-मन पर पूर्ण संयम रखकर, नियमपूर्वक उक्त साधना की जाये। तभी उसका अनुकूल परिणाम दृष्टिगत होता है। नियम-विरुद्ध की गयी साधना, न सेवल निष्फल हो जाती है, वरन् उससे हानि की आशङ्का भी रहती है। यहाँ कुछ विशिष्ट नियमों का उल्लेख किया जा रहा है। इनका पालन किसी भी देवी-देवता की उपासना में अनिवार्य होता है।

- साधना के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करते समय उसकी शुद्धता, सुरक्षा, वायु, प्रकाश, एकान्त, निर्विघ्नता आदि पर विचार कर लेना चाहिए।
- आसन पर बैठने के पूर्व ही, उपासना में प्रयोज्य सभी वस्तुएं सहेज कर रख ली जायें, ताकि बीच में उठना न पड़े।
- जप के समय चित्त स्थिर रहे। मन इधर-उधर न जाकर, इष्टदेवता पर ही केन्द्रित रहे।
- साधना-काल में साधक का रहन-सहन, भोजन, विश्राम और चिन्तन पूर्णतया सात्विक हो। श्रृङ्गार, विलास, कामुकता, तामस और लोभ आदि से मन को सर्वथा अछूता रखना चाहिए।
- नित्य निवृत्ति के पश्चात्, प्रतिदिन नियमित रूप में साधना करें। मन्त्र-जप की संख्या भी नियमित रहे। उसमें रोज-रोज परिवर्त्तन नहीं होना चाहिए। पहले से ही तय करलें कि मुझे इतने दिनों तक प्रति-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिन इतनी संख्या (माला) में अपने इष्टदेव का मन्त्र जपना है। फिर तदनुसार दैनिक-पूजा में उस संख्या की पूर्त्ति करते रहें।

- चाहे जिस देवी (या देवता) की साधना की जाये, मन्त्र-जप के पूर्व यथासम्भव उसकी पूजा (पञ्चोपचार-षोड़शोपचार) यथा-विधि अवश्य करें।
- भोजन या जलपान के रूप में कोई पदार्थ ग्रहण करने के पूर्व उसे इष्ट-देव को अर्पित करें, तदुपरान्त उसे प्रसाद के रूप में लें।
- मन्त्र-जप में उच्चारण शुद्ध, स्पष्ट और सन्तुलित-स्वर में हो। मानसिक अथवा उपांशु, चाहे जिस विधि से जप करें, उसमें एकरूपता तथा नियम-निर्दाह के प्रति सजग रहें।
- साधना-काल में ब्रह्मचर्य, एकान्त, सत्सङ्ग, गुरु-सेवा, परोपकार, मौन, इष्ट-चिन्तन. स्वल्पाहार, देव-प्रार्थना, तीन बार स्नान, भूमि-शयन और मन्त्र-जप के प्रति पूर्ण आस्था-भाव—इन सबका पालन करना चाहिए।
- मन्त्र-जप में गति चाहे जैसी हो—मन्द अथवा तीव्र, परन्तु उच्चारण में शुद्धता अवश्य होनी चाहिए।
- जप के समय मन में इष्टदेवी के प्रति अभङ्ग श्रद्धा, अविचल विश्वास, दृढ़-निश्चय, पूर्ण तन्मयता और इष्टदेव की प्रत्यक्ष अनुभूति का अडिग-विश्वास निरन्तर बना रहना चाहिए।
- मन्त्र-जप के आरम्भ में इष्टदेवी का आह्वान और अन्त में विसर्जन प्रतिदिन अवश्य करते रहें।

बाधा-निवारण—

साधना में स्थान, वातावरण अथवा शारीरिक-स्थिति सम्बन्धी विघ्न आ जाने की आशङ्का रहती है। अतः उसके निवारण हेतु प्रारम्भ में ही उपाय कर लेना चाहिए। किसी भी देवी-देवता की उपासना करनी हो, मन्त्र-जप के पूर्व ही 'स्थान-बन्धन' और 'मुख-शोधन' कर लेने से किसी प्रकार के विघ्न की सम्भावना नहीं रह जाती। स्थान-बन्धन के लिए सम्बन्धित देवता का मन्त्र जपते हुए, साधक को एक जल-रेखा अपने आसन के चारों ओर खींच देनी चाहिए। इसी प्रकार मुख-शोधन के लिए आसन पर बैठकर, साधना (मन्त्र-जप) प्रारम्भ करने के पूर्व, दस बार इष्टदेव से सम्बन्धित मन्त्र का उच्चारण कर लेने से शारीरिक-दोष (छींक, खाँसी, जम्हाई, अँगड़ाई, तन्द्रा, अङ्ग-स्फुरण) शान्त हो जाते हैं। यह नियम देवी-देवता सबकी उपासना पर लागू होता है। नीचे कुछ प्रमुख देवी-स्वरूपों

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की उपासना से सम्बन्धित 'स्थान-बन्धन' और 'मुख-शोधन' के मन्त्र लिखे जा रहे हैं :—

इष्टदेवी	स्थान-बन्धन	मुख-शोधन
1. दुर्गा	क्रीं ॐ क्रीं	ऐं ऐं ऐं
2. लक्ष्मी	ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ	श्रीं
3. बगलामुखी	ऐं ह्लीं ह्ली ऐं	ऐं ह्लीं ऐं
4. तारा	ॐ श्रीं ॐ	ह्रीं ह्रं ह्रीं
5. मातङ्गी	ॐ ऐं ॐ	ऐं ॐ ऐं
6. त्रिपुरसुन्दरी	श्रीं ॐ ॐ श्रीं	ॐ
7. धनदा	ॐ श्रीं घ्रं श्रीं ॐ	ॐ
सामान्यतः किसी भी देवता के लिए	ॐ श्रीं	ॐ

निषेध—

पूजा-पाठ, जप-तप और ध्यान-धारणा के लिए, जहाँ विभिन्न प्रकार के नियमों का निर्देश मिलता है, वहीं कुछ बातों का निषेध भी किया गया है। निषेध और नियम की अवधारणा के पीछे मुख्यतः करणीय और अकरणीय कृत्यों का विवेचन ही मुख्य बिन्दु है। वैसे भी, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम देखते हैं कि किसी भी स्थिति में सब कुछ अनुकूल और स्वीकार्य नहीं होता। अतः यह जानकारी होना बहुत आवश्यक है कि हम कार्य कर रहे हैं (सांसारिक अथवा आध्यात्मिक) उसके क्या नियम हैं, क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। देवी-उपासना के दौरान जब कोई साधक जप-तप या पूजा-पाठ कर रहा हो, उसे निम्न निषेधों को ध्यान में रखना चाहिए। निषेध पर ध्यान न देने से जाने-अनजाने अनेक प्रकार की त्रुटियाँ हो जाती हैं, जिससे साधना में दोष आ जाता है। वह खण्डित होकर, साधक को समस्त लाभ से वञ्चित कर देती है। यही नहीं, कभी-कभी तो वह सङ्कट-ग्रस्त भी हो जाता है। अतः प्रत्येक साधक को इन बिन्दुओं की ओर सजग रहना चाहिए :—

- साधना का स्थान शुद्ध, एकान्त, निरापद हो। अपवित्र स्थान, अथवा वस्त्र, अपवित्र वातावरण और मानसिकता—जप-काल में निषिद्ध है।
- मन्त्र-जप, स्तोत्र-पाठ, ध्यान, प्राणायाम, स्तुति, ग्रन्थ-पाठ आदि में स्वर, गति और उच्चारण के प्रति सावधान रहना चाहिए। इनमें तनिक भी त्रुटि न होने पाये।
- मन्त्र-जप के समय उच्चारण में सहजता को त्यागकर लयबद्ध सङ्गीतात्मक पाठ वर्जित है। इसी प्रकार झूमना, शरीर हिलाना, अङ्ग-सञ्चालन भी त्याज्य है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

- साधना के समय, जप के समय, सम्पूर्ण अनुष्ठान-काल में, सिले हुए वस्त्र नहीं पहिनने चाहिए।
- अपना कोई वस्त्र, आसन, पादुका, माला, पात्र, बिस्तरा, मूर्त्ति, पाठ्य-ग्रन्थ अथवा पूजा का अन्य कोई उपादान किसी को नहीं देना चाहिए।
- वैसे तो सदैव ही, अन्यथा साधना-काल में अवश्य ही—काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अमर्ष, अपराध-चिन्तन, भय, भ्रम, लोभ, उत्तेजना, दुश्चिन्ता और कलुष से मन-मस्तिष्क को सर्वथा-मुक्त रखना चाहिए।
- रुग्ण-शरीर, अस्थिर मनोदशा, पीड़ा, चोट, विक्षिप्तता और अश्रद्धा, अविश्वास, द्विविधा, अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति में जप-तप या पूजा-पाठ नहीं करना चाहिए।
- कोलाहल, उपद्रव, धुआँ, रुदन, चीत्कार, कलह, युद्ध, आक्रमण, हिंस्र-पशुओं की आशङ्का, शत्रु-भय, रोग, शोक, मृत्यु, अविश्वास, अपमान, घृणा, उपेक्षा, दुर्घटना, अग्निकाण्ड और तूफान आदि के वातावरण में, अथवा इनमें से किसी की आशङ्का होने वाले स्थान पर जप-तप नहीं करना चाहिए।
- मल-मूत्र विसर्जन की इच्छा, श्वास, खाँसी, शारीरिक सम्वेग, मूर्च्छा, उन्मत्तता,ज्वर या अस्थिरता-जनक स्थिति में जप नहीं करना चाहिए। ये स्थितियाँ साधना में बाधक होती हैं।
- मन्त्रानुष्ठान, तपश्चर्या अथवा किसी प्रकार की साधना हो, उसमें ब्रह्मचर्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। अतः देवी-साधना के लिए भी यह अनिवार्य है कि साधना-काल में ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन अवश्य करें। इसके लिए पूरे तौर पर सजग रहना चाहिए। ब्रह्मचर्य-व्रत की रक्षा के लिए—अश्लील दृश्य, कामुक-विचार, नारी-सम्पर्क, असत्य-भाषण, प्रलाप, निन्दा, नग्नता, मादक-पदार्थों का सेवन, गरिष्ठ-तामसिक-भोजन, सङ्गीत, नृत्य, अश्शील-साहित्य का पठन या श्रवण, शृङ्गार-दर्शन—यह सब त्याज्य हैं।
- साधना के दिनों में बहुत सादगी से रहना चाहिए। क्षौर-कर्म, तैल-मर्दन, प्रसाधन, शृङ्गार आदि वर्जित हैं।
- मन्त्र-जप के समय न तो माला भूमि पर गिरे, न पैरों से उसका स्पर्श होने पाये। जप के समय माला के दानों (मनकों) को नाखूनों से नहीं छूना चाहिए।
- साधना पूर्व-सङ्कल्प की पूर्त्ति किये बिना,बीच में अधूरी साधना छोड़ देना अनुचित है। अपनी सामर्थ्य को देखते हुए ही सङ्कल्प करें, फिर हर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तरह, प्रसन्न मन और पूरी श्रद्धा-निष्ठा से उसे पूरा करना चाहिए। साधना का खण्डित होना दोष है।

- साधना, चिन्तन, एकाग्रता आदि के समय प्रायः आसुरी-वृत्तियाँ छद्म रूप में आकर मन को चञ्चल करने लगती हैं। अनेक प्रकार की बाधाएं आकर साधक की निष्ठा को डिगाने लगती हैं। ऐसी स्थिति में साधक को बहुत धैर्य, संयम, विवेक और सहिष्णुता से रहना चाहिए।
- साधना वाले स्थान और उसके निकट का वातावरण पूर्णतया सुरक्षित एवं शान्त हो। वहाँ कुत्ता, बिल्ली, उल्लू, गधा, कोढ़ी, पापी, विकलाङ्ग, दरिद्र, हत्यारा, चाण्डाल, विधवा गीध, चील, सियार, राजद्रोही, अपवित्र, गुप्तचर, अभिशप्त, षड़यन्त्री, दुष्ट, दुर्वासनी, विक्षिप्त, मदान्ध, कामातुर अथवा भिखारी का प्रवेश, दर्शन अथवा स्पर्श—यह सब वर्जित हैं। अतः इनसे बचाव के लिए पहले से ही पूरी व्यवस्था कर लेनी चाहिए।
- पूजनोपरान्त बची हुई सामग्री इधर-उधर न फेंकें। उसे किसी सात्त्विक रूप में प्रयोग करना चाहिए। बचा हुआ नैवेद्य बालकों में और अक्षत आदि पक्षियों में वितरित कर देना चाहिए। बचा हुआ जल सूर्य के अर्घ्य में, या नीम, पीपल, आम जैसे किसी शुभ-वृक्ष पर चढ़ा देना चाहिए। पूजा का जल इधर-उधर फेंकना वर्जित है।
- साधना-काल में देवी-दर्शन अथवा अन्य किसी प्रकार की अलौकिक-अनुभूति की चर्चा किसी से न करें। आकस्मिक-दृश्य, सुगन्ध, रोमाञ्च, उद्वेग, स्पर्श-बोध, ऊर्जा, स्वर, सन्देश, संकेत, देव-दर्शन, मूर्त्ति में कोई परिवर्त्तन, जीवान्तता, सञ्चालन, वार्त्तालाप जैसी कोई अनुभूति होने पर उसे नितान्त गुप्त रखें। वह साक्षात् देव-कृपा होती है। भयानक-प्रसङ्ग से यदि मन विचलित हो उठे तो किसी सात्त्विक विद्वान् ब्राह्मण अथवा गुरु का परामर्श लेना चाहिए। वैसे, इष्टदेव का स्मरण सारी बाधाएं दूर कर देता है।

नैवेद्य के विभिन्न प्रयोग

नैवेद्य का अर्थ है— इष्टदेवता के सम्मुख भोजन, जलपान के रूप में कोई खाद्य पदार्थ प्रस्तुत करना। बाद में वही पदार्थ प्रसाद रूप में साधक स्वयं तथा उसके परिवारी-जन ग्रहण करते हैं। जहाँ तक नैवेद्य में पदार्थ का सम्बन्ध है, देवता सर्वसमर्थ और सर्वव्यापी होते हैं। उन्हें हम तुच्छ-मानवों से किसी व्यञ्जन-मिष्ठान्न की अपेक्षा नहीं रहती। खीरमोहन,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रबड़ी, कलाकन्द और मोहनभोग आदि पदार्थ हम क्षुद्रजनों के लिए दिव्य वस्तुएं हैं, परन्तु देववर्ग के लिए वे सब नगण्य हैं। वस्तुतः देवी-देवता श्रद्धा को वरीयता देते हैं। कितनी ही ऐसी कथाएं प्रचलित हैं, जिनमें भक्त द्वारा अर्पित की गयी नितान्त क्षुद्र-त्याज्य वस्तु को भी देवता ने सहर्ष स्वीकार किया। कारण यह था कि भक्त ने परम आस्था और आत्म-समर्पण की भावना से वह वस्तु देवता को समर्पित की थी। फिर भी साधक-जन यथा-सामर्थ्य अपने इष्ट को सांसारिक दृष्टि से उत्तमोत्तम पदार्थों का नैवेद्य प्रस्तुत करते हैं। ऐसी स्थिति में, प्राचीन मनीषियों ने वस्तुगत प्रभाव और तान्त्रिक-विवेचन के आधार पर, स्वानुभव से कुछ विशिष्ट नैवेद्य पदार्थों के प्रयोग को विशेष प्रभावकारी बताया है। नैवेद्य-निर्धारण की यह क्रिया (विशेष रूप से देवी-पूजा के सन्दर्भ में) समयानुसार (मुहूर्त्त अथवा काल-खण्ड) परिवर्तित भी होती रही है। यहाँ हम सारांश रूप में—महीना, तिथि, नक्षत्र, करण के अनुभार अर्पित किये जाने वाले नैवेद्य का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। साधकजन अपनी श्रद्धा-सामर्थ्य के अनुसार इसकी व्यवस्था कर सकते हैं। वैसे, यह कुछ न हो सके तो अनन्य आस्था के आधार पर, कोई भी सुलभ, सात्त्विक पदार्थ देवीजी को नैवेद्य रूप में अर्पित किया जा सकता है।

मास क्रम से प्रयोज्य नैवेद्य—

चैत्र (शुक्ल तृतीया)—महुआ के वृक्ष की पूजा करके कोई भी पाँच पदार्थों का खाद्य।

वैशाख	,,	गुड़ मिलाकर, घर में ही किन्हीं चार खाद्य पदार्थों का नैवेद्य बनाएं।
ज्येष्ठ	,,	शहद मिलाकर, ,, ,, ,, ,,
आषाढ़	,,	महुए का रस मिलाकर, ,, ,, ,,
सावन	,,	दही मिलाकर, ,, ,, ,, ,,
भादों	,,	शक्कर मिलाकर, ,, ,, ,, ,,
क्वार	,,	खीर मिलाकर, ,, ,, ,, ,,
कार्तिक	,,	दूध मिलाकर, ,, ,, ,, ,,
अगहन	,,	फेनी, मलाई, खोया मिलाकर, ,, ,,
पौष	,,	दही और मट्ठा मिलाकर, ,, ,,
माघ	,,	खीर, दही मिलाकर, ,, ,, ,,
फाल्गुन	,,	नारियल (यथासम्भव कच्ची गरी) मिलाकर, कोई भी चार खाद्य पदार्थों को मिलाकर नैवेद्य बनायें और अभीष्ट देवी को अर्पित करें।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिवस-क्रम से नैवेद्य निर्देश—

सप्ताह में सात दिन होते हैं। देवीजी की दैनिक-पूजा करने वाले साधकों के लिए निर्देश मिलता है कि यदि वे प्रतिदिन, निर्धारित क्रम से देवी को नैवेद्य अर्पित करें, तो विशेष लाभ उठायेंगे। यथा—

रविवार	....	खीर
सोमवार	....	दूध
मङ्गलवार	....	केला
बुधवार	....	मक्खन (नवनीत)
गुरुवार	....	शक्कर (प्रायः कच्ची शक्कर)
शुक्रवार	....	मिश्री (दाना शक्कर)
शनिवार	....	गो-घृत

नैवेद्य योग्य फल—

कुछ विद्वानों (मेरा विश्वास है अरण्य-वासी ऋषियों) ने देवी-पूजा में नैवेद्य के लिए फलों की प्रस्तुति सर्वोत्तम मानी है। इनके निर्देशानुसार ये फल देवी को अर्पित किये जा सकते है :—

ककड़ी, कटहल, कूष्माण्ड (पेठा वाला कुम्हड़ा), केला, जामुन, आम, नारियल, सन्तरा, अनार, बेर, आँवला, नीबू, कसेरू।

नैवेद्य में प्रयोज्य अन्न-मिष्ठान—

तिल, चिउड़ा, चना, चूरमा, पुआ, लड्डू तथा गोरस—दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, मलाई, खीर, घी। शहद और गुड़ अथवा मेवे (गरी, छुहारा, किसमिस, काजू आदि) भी उत्तम नैवेद्य हैं।

काल-खण्ड (करण) के अनुसार—

ज्योतिष-शास्त्र में विभिन्न काल-खण्डों की विवेचना की गयी है। ऐसा ही एक समयमान 'करण' हैं। ग्यारह करणों में प्रत्येक के लिए देवी पूजा में प्रस्तुत किये जाने वाले उपयुक्त नैवेद्य का निर्देश इस प्रकार किया गया है :—

करण	नैवेद्य
बव	कसेरू
वालव	कूष्माण्ड
कौलव	मलाई, फेनी, सेवईं
तैतिल	मोदक-लड्डू
गर	पापड़

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वणिज	लड्डू
विष्टि	पुआ, घी की पूड़ी
शकुनि	तिल
चतुष्पाद	दही
नाग	घी
किंस्तुघ्न	शहद

तिथि के अनुसार नैवेद्य-क्रम—

तिथि	नैवेद्य	दान देने योग्य वस्तु
प्रतिप्रदा	फूलों का हार पहनायें	घी
द्वितीया	शक्कर-मिश्री	शकर
तृतीया	दूध	दूध
चतुर्थी	पुआ, मालपुआ	पुआ
पञ्चमी	केला	केला
षष्ठी	शहद	शहद, मिष्ठान्न
सप्तमी	गुड़	लड्डू
अष्टमी	नारियल	नारियल
नवमी	लाजा (खील)	लाजा
दशमी	काला तिल	काला तिल
एकादशी	दही	दही-मक्खन
द्वादशी	चिउड़ा	चावल-धान
त्रयोदशी	चना	चना
चतुर्दशी	सत्तू	घी-सत्तू
पूर्णिमा	खीर	खीर

इस नैवेद्य-क्रम का फल यह बताया जाता है कि इससे साधक को रोग, दरिद्रता, शत्रु-भय, कलह, दुःख से मुक्ति मिलती है। वह सुख-शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए देवी-देवताओं का कृपा-पात्र बना रहता है।

नक्षत्र-क्रम के आधार पर नैवेद्य—

ज्योतिष-शास्त्र में नक्षत्रों की संख्या 27 मानी गयी है। ये सभी नक्षत्र एक क्रम से गतिशील रहते है। एक के बाद दूसरा आता रहता है। देवी-पूजा में एक विधान यह भी मिलता है कि जिस नक्षत्र में पूजा की जा रही हो, तदनुसार नैवेद्य अर्पित करने से एक विशेष प्रभाव की सृष्टि होती है, जो साधक के लिए परम कल्याणकारी सिद्ध होती है। नक्षत्र-क्रम से नैवेद्य का विवरण इस प्रकार बताया गया है :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नक्षत्र	प्रयोज्य-सामग्री
1. अश्विनी	घी
2. भरणी	काले तिल
3. कृत्तिका	शकर, मिश्री
4. रोहिणी	दही
5. मृगशिरा	दूध
6. आर्द्रा	मलाई
7. पुनर्वसु	दही का शर्बत (लस्सी)
8. पुष्य	लड्डू
9. आश्लेषा	सेवईं, फेनी
10. मघा	पेठा, कूष्माण्ड, खोया
11. पूर्वाफाल्गुनी	कसेरू, हलुआ
12. उत्तराफाल्गुनी	पापड़
13. हस्त	घेवर, पुआ
14. चित्रा	पकौड़ी
15. स्वाती	गोरस-कोकरस
16. विशाखा	घी में भुना बेसन
17. अनुराधा	शहद
18. ज्येष्ठा	चूरमा
19. मूल	गुड़
20. पूर्वाषाढ़ा	चिउड़ा
21. उत्तराषाढ़ा	अंगूर
22. श्रवण	खजूर
23. धनिष्ठा	अनार
24. शतमिषा	पुआ
25. पूर्वाभाद्रा	मक्खन (नवनीत)
26. उत्तराभाद्रा	मूँग के लड्डू
27. रेवती	बेसन के लड्डू

प्रसङ्ग-पूर्त्ति के लिए, प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित यह नियम और व्यवस्था यहाँ प्रस्तुत करदी गयी है, वैसे व्यक्तिगत रूप में मेरी मान्यता है कि किसी भी देवी-देवता को श्रद्धापूर्वक कोई भी सात्विक खाद्य-पदार्थ—फल, मिष्ठान्न, मेवा अर्पित किया जा सकता है। वे सब कुछ परम प्रसन्न मन से स्वीकार कर लेते हैं। देवता—पदार्थ-भेद नहीं, स्वाद-भेद नहीं, केवल भक्त की श्रद्धा, आस्था और समर्पण-भावना देखते हैं, बस!

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7 | देवी-उपासना के विविध आयाम

परिचय—

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है—भगवती दुर्गाजी के अनेक रूप और नाम हैं। तदनुसार उनकी उपासना की विभिन्न पद्धतियाँ प्रचलित हैं। यह साधक की श्रद्धा एवं निष्ठा पर निर्भर है कि वह किस नाम-रूप की उपासना करे, और उसके लिए किस पद्धति को अपनाये ?

आदिशक्ति के विभिन्न रूपावतार हैं—सात्त्विक, राजसिक और तामसिक। सरस्वती देवी सात्त्विक रूपों में सर्वोपरि है। राजसिक रूपों में देवी का प्रमुख रूप लक्ष्मी है। इसी प्रकार तामसिक अवतारों में काली जी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। प्रकारान्तर से इन तीनों शक्तियों के अनेक रूपावतार, उनके आख्यान, प्रभाव, महत्त्व और उपासना के विधान प्रचलित हैं। यह विषय अपने-आप में इतना विशद है कि कोई विद्वान् यदि एक ग्रन्थ में इन सबका साङ्गोपाङ्ग वर्णन करना चाहे, तो यह उसके लिए एक असम्भव कल्पना ही होगी। यहाँ कुछ अति प्रचलित देवी-रूपों की उपासना-विधि संक्षेप में लिखी जा रही है। जन-सामान्य में ये देवी-उपासनाएं बहुत प्रचलित हैं और अनेक साधकों ने इनकी अलौकिकता, प्रभावशीलता का अनुभव भी किया है। शास्त्रीय विधि-विधान का अपना विशेष महत्त्व है। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से आज के युग में वह सम्भव नहीं रहा। अतः मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए, श्रद्धा-निष्ठा को वरीयता देकर सहज-साध्य विधि द्वारा उपासना की जाये—यही श्रेयस्कर है। यहाँ कुछ विशिष्ट देवी-रूपों की पूजा-उपासना की सरलतम विधियाँ प्रस्तुत हैं। पाठक-जन धैर्य और विश्वास के साथ किसी भी देवी की शरण लेकर लाभ उठा सकते हैं, ऐसा निश्चित प्रायः है।

दुर्गाजी की उपासना का विवरण विभिन्न ग्रन्थों में बड़े विस्तार से प्राप्त होता है। इन सबका सार-तत्त्व यह है कि 'नवार्ण-मन्त्र' दुर्गा साधना का सर्वश्रेष्ठ, सर्वाधिक प्रभावी और सरलतम आयाम है। यदि कोई साधक श्रद्धा, शुचिता और संयमपूर्वक इस मन्त्र के द्वारा दुर्गाजी की पूजा करे, तो निश्चित है कि उसे अपने लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यहाँ यह बात

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ध्यान में रखने की है कि साधक का लक्ष्य औचित्य और सम्भावना की सीमा में होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपासना करता है कि सूर्य और चन्द्रमा आकाश से उतरकर उसके दरवाजे पर आ खड़े हों, अथवा वह स्वयं समस्त पृथ्वीमण्डल का शासक हो जाय, तो ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। कारण कि ऐसा होता, न तो सम्भावना के भीतर आता है, न इसका कोई औचित्य है। अतः प्रकृति-विरुद्ध कल्पना न करके, अपने सहज जीवन से सम्बन्धित कोई ऐसी कामना की जानी चाहिए, जो सांसारिक-दृष्टि से असम्भव, अनुचित न हो और जिसका लाभ साधक तथा जन-सामान्य को भी प्राप्त हो सके। उपासक के लिए 'सर्वभूत हिते रताः' का सिद्धान्त सदैव शुभ होता है।

नवार्ण मन्त्र-साधना

दुर्गाजी की उपासना में 'नवार्ण-मन्त्र' को सर्वाधिक महत्ता प्राप्त है। इस मन्त्र को दुर्गाजी का शाब्दिक-प्रतिरूप माना जाता है। इस मन्त्र में नौ अक्षर हैं। नौ वर्णों के योग से संरचित होने के आधार पर यह 'नवार्ण' मन्त्र कहलाता है। यह परम प्रभावी मन्त्र है। निर्गुण और सगुण, निराकार और साकार—दोनों ईश्वरीय-सत्ताओं की साधना का यह सुगम सोपान है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना 'गायत्री' मन्त्र से और सगुण-साकार ब्रह्म की उपासना इस 'नवार्ण' मन्त्र से की जाये तो विशेष प्रभावशाली होती है। अस्तु, नवार्ण-मन्त्र का महत्त्व और प्रभाव सर्वमान्य है, इसमें कहीं संशय नहीं। यह असंदिग्ध रूप में अलौकिक प्रभाव-सम्पन्न मन्त्र है, और किसी भी विधि से इसकी साधना-उपासना करके लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

मूल नवार्ण-मन्त्र—

शास्त्रीय-विधि के अनुसार कुछ मन्त्रों में—मूल-मन्त्र के प्रारम्भ में 'ॐ' को संयुक्त कर देना चाहिए। अधिकांश मन्त्रों में जप आरम्भ करने के पूर्व प्रथम उच्चारण में 'ॐ' अवश्य जोड़ा जाता है। प्रथम उच्चारण के उपरान्त सामान्य रूप में मूल-मन्त्र का जप होता है। किसी-किसी मन्त्र में प्रथम उच्चारण के बाद भी, हर बार 'ॐ' सहित मूल-मन्त्र का जप किया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रसङ्गानुसार किसी विद्वान् पुरोहित अथवा ग्रन्थ का मार्ग-निर्देशन प्राप्त कर लेना चाहिए। जहाँ तक 'नवार्ण-मन्त्र' का सम्बन्ध है, जप के समय इसके प्रथम उच्चारण में तो 'ॐ' का संयोजन होता है, बाद में मूल मन्त्र ही जपने का विधान है। मूल मन्त्र इस प्रकार है :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'

इसमें 'ॐ' का संयोजन करने पर यह रूप बनता है—

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'

साधना-विधि—

नवार्ण-मन्त्र की साधना जटिल है। परन्तु शास्त्रीय तर्क-वितर्क में न पड़कर व्यावहारिक दृष्टि से, कम से कम इतना तो करना ही चाहिए कि सामान्य नियमों का निर्वाह हो जाये। वैसे, कोई भी साधक कभी भी शुद्ध होकर, कहीं बैठ जाये और एकाग्र-चित्त होकर इस मन्त्र का जप करे, तो भी लाभ होता है। परन्तु नियमों का भी अपना महत्त्व है। अतः यथा-सम्भव नियमों का पालन भी करना चाहिए। नवार्ण-मन्त्र की सरलतम साधना-विधि इस प्रकार है :—

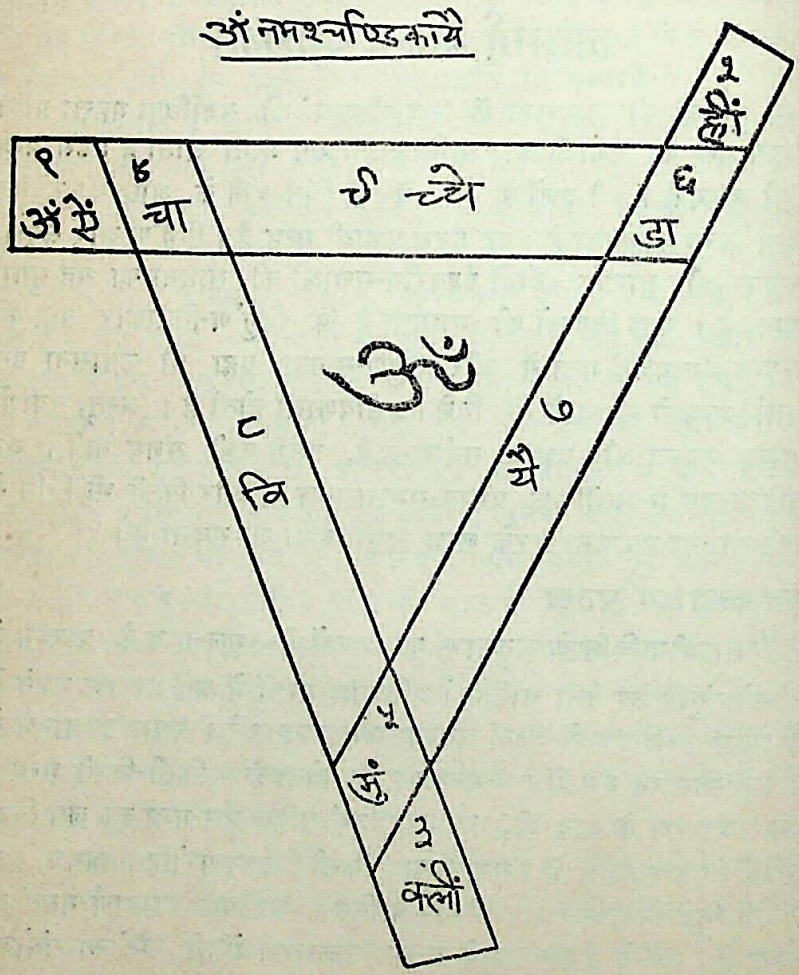

नवार्ण-यन्त्र

सबसे पहले ताँबे के पत्तर पर, अथवा भोजपत्र पर नवार्ण-यन्त्र की रचना करें। यदि ताम्रपत्र पर उत्कीर्णन हो सके, तो अति उत्तम है,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्यथा लाल चन्दन और अनार की कलम से यन्त्र बना लिया जाये। यन्त्र की आकृति त्रिकोण युक्त होनी चाहिए (आगे चित्र देखें), उसके मध्य में 'ऐं ह्रीं क्लीं' अङ्कित हो। मन्त्र के शेष 6 वर्ष 1-1 करके क्रमशः प्रत्येक कोण में लिखे जायें। यथा--

स्मरण रहे कि यन्त्र-रचना और साधना का आरम्भ किसी शुभ-मुहूर्त्त में ही करना चाहिए। इसके लिए स्थानीय पुरोहित से पूछ सकते हैं। शुभ दिन-मुहूर्त्त में यन्त्र-रचना करके पूजन करें और तदुपरान्त मन्त्र जपें। पूर्ण विधि नीचे लिखी जा रही है।

प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर, पूजा-स्थल को लीप-पोतकर शुद्ध करलें। पूजा की सारी सामग्री सहेज कर रख लें। कलश, प्रतिमा, चित्र, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, माला, आसन,हवन-सामग्री आदि की पूर्व व्यवस्था करके ही पूजा पर बैठें, ताकि बीच में उठना न पड़े।

सर्वप्रथम आसन पर बैठकर (पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके) नवार्ण-यन्त्र की रचना करें, फिर उसे थाली में रखकर शुद्ध जल से स्नान करायें। स्नान का अर्थ है--उसके चारों कोनों पर जल को स्पर्श करालें। जल छिड़कने या धोने से तो उसकी पूरी स्याही धुल जायेगी। अतः स्नान के प्रतीक स्वरूप उसके कोनों पर जल छिड़क दें (स्पर्श करादें) बस! इसके बाद उसे लाल कपड़े के आसन पर स्थापित करके लाल चन्दन और पुष्प चढ़ायें। धूपबत्ती दें और दीपक जलाकर आरती करें। सामर्थ्य के अनुसार पञ्चोपचार या षोड़शोपचार पूजन करें। ऐसा सम्भव नहीं है तो केवल स्नान, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप से ही पूजा करलें। आरती करने के बाद नैवेद्य चढ़ायें फिर यन्त्र के ठीक सामने--'ॐ देवीं दीपाधाराय यन्त्राय नमः' मन्त्र पढ़कर--वह आरती का दीपक, यदि स्थान है, तो यन्त्र के ठीक मध्य में, अथवा उसके बाहर, सामने की ओर रख दें। अक्षत का प्रयोग भी करना चाहिए। ध्यान रहे कि आसन पर बैठने के समय से ही सम्पूर्ण पूजन तक, साधक निम्नलिखित मन्त्र मन ही मन जपता रहे।

नमो देव्यै महादेव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताःस्मताम्॥

इसके पश्चात् मन ही मन यह अडिग विश्वास करके, कि श्री दुर्गा जी इस यन्त्र में आकर विराजमान हो गयी हैं, और मेरी पूजा-प्रार्थना स्वीकार कर रही हैं, एक निश्चित संख्या में नित्य मन्त्र-जप का सङ्कल्प लेना चाहिए। साथ ही, यह प्रार्थना भी करलें कि 'हे माता! मैं आपकी पूजा करना चाहता हूँ। इसमें जो भी त्रुटि, विघ्न, भ्रम और दोष उत्पन्न

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो, उसे क्षमा करें, और मुझे ऐसी शक्ति दें कि मैं सम्पूर्ण श्रद्धा-भक्ति से आपका स्मरण कर सकूँ।' इस प्रकार सम्पूर्ण जप की एक निश्चित संख्या और दैनिक-जप की निश्चत संख्या का सङ्कल्प करके, सम्भव हो तो न्यास आदि सहित अथवा ऐसे ही सहज-भाव से, दोषों के प्रति देवी से क्षमा-याचना और विघ्नों से रक्षा का निवेदन करते हुए, मूल नवार्ण-मन्त्र का जप करें।

जप के लिए लाल चन्दन अथवा रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करें। आसन कुश का, ऊन का अथवा रेशमी रहना चाहिए। जप के समय साधक यह कल्पना करले कि माता दुर्गाजी मेरे सामने इसी यन्त्र में बैठी हुई हैं। यदि इतनी तन्मयता न हो सके तो दुर्गाजी का सुन्दर चित्र या प्रतिमा, यन्त्र के पास रख लेना चाहिए। ऐसी स्थिति में यन्त्र-पूजा के साथ उस प्रतिमा या चित्र की भी पूजा आवश्यक होती है।

संकल्पानुसार समय और मन्त्र-जप की संख्या पूरी हो जाने पर इसी नवार्ण-मन्त्र को जपते हुए, 108 बार (यथा-सम्भव अधिक भी) शुद्ध हवन-सामग्री की आहुति देते हुए हवन करना चाहिए। हवनोपरान्त एक या पाँच कन्याओं को यथा-सामर्थ्य भोजन, वस्त्र और दक्षिणा देकर सम्मानित करना चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध करने का प्रारम्भिक, किन्तु अनिवार्य नियम है। इसके बाद नित्य एक माला जप करते रहने से माता दुर्गाजी की कृपा तुरन्त और अवश्य प्राप्त होती है। संयम और धैर्य के साथ यदि कोई साधक इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहे तो अपनी दैनिक-चर्या करते हुए भी, एक सप्ताह की साधना में सफल-मनोरथ हो सकता है। वैसे, यदि 21 दिनों में एक लाख मन्त्र-जप करके, पूर्ण व्रत संयम के साथ, हवन और दान की क्रिया भी निर्विघ्न पूरी करली जाये तो अत्युत्तम होगा।

विशेष ध्यान देने की बात यह है कि पूजा के दौरान, साधना-काल में साधक को अनेक प्रकार की अलौकिक अनुभूतियाँ होती रहती हैं। परन्तु उनकी चर्चा किसी से नहीं करनी चाहिए। वे अनुभूतियाँ, वे दृश्य भगवती दुर्गा की कृपा के संकेत होते है।

मन्त्र-जप आरम्भ करने के पूर्व दुर्गाजी का ध्यान करने के लिए निम्नाङ्कित श्लोक का पाठ करना चाहिए।

विद्युद्दाभ समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितां भीषणाम् ।
कन्याभिः कर वालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम् ।।
हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम् ।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसी प्रकार जप पूरा हो चुकने पर, दैनिक-साधना में भी, दुर्गाजी से क्षमा-प्रार्थना कर लेनी चाहिए। यथा—

आह्वानं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरी॥
श्री दुर्गायै नमः।

नवार्ण-मन्त्र के विशिष्ट-प्रयोग

विधि—

वैसे तो किसी भी शुक्रवार या अष्टमी के दिन से यह उपासना आरम्भ की जा सकती है, पर उत्तम यह होगा कि किसी पण्डित-पुरोहित से कोई शुभ-मुहूर्त्त ज्ञात कर लिया जाय। नवरात्रि की अवधि देवी-उपासना के लिए सर्वोत्तम होती है, किन्तु यदि उतनी प्रतीक्षा करना सम्भव नहीं है तो किसी पण्डित से शुभ दिन पूछकर इसे प्रारम्भ कर सकते हैं। सामग्री के रूप में दुर्गाजी का चित्र (सम्भव हो तो लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा या काली सभी महाशक्तियों के चित्र) परम आवश्यक हैं। मूर्त्ति अथवा यन्त्र से भी काम चल सकता है। लाल चन्दन, लाल पुष्प, अगर, धूप, लाल वस्त्र, अक्षत, नैवेद्य, घृत-दीप आदि की व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए। एकान्त-पवित्र स्थान में देवी की पूजा करके लाल चन्दन की माला से मन्त्र-जप करना विशेष लाभप्रद होता है। वैसे, अन्य मालाएं भी प्रयुक्त होती हैं।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वराय ऋषयः, गायत्री उष्णिक् अनुष्टुपः छन्दांसि, महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वत्यः देवता, नन्दजा शाकम्भरी भीमाः शक्तयः रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि, ह्रौं कीलकम्, अग्नि वायु सूर्यस्तत्वानि, सकल कार्य निर्देश जपे विनियोगः।

ध्यान

उद्यत भानु सहस्र कान्तिमरुणं क्षौमा शिरोमालिकाम्।
रक्तालिप्त पयोधरां जपवटीं विद्यां भीतिं वराम्॥
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसत् शीतांशु तुल्यप्रभाम्॥
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगताधार भूता महाम्॥

मन्त्र-जप—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आवश्यकता और प्रयोग-भेद के आधार पर इस मन्त्र के अनेक रूप निर्मित किये गये हैं। साधक अपनी कामना के अनुसार इनमें से कोई भी मन्त्र नियमित रूप से जपकर लाभान्वित हो सकता है। विनियोग और ध्यान-स्तुति सभी प्रयोगों में समान है।

सर्वार्थ-सिद्धि का नवार्ण-मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

ॐ ग्लौं हुँ क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चायुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

नवार्ण मोहन-मन्त्र—

ॐ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (··· नाम····) क्लीं क्लीं मोहनम् कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र के रिक्त-स्थान में वाञ्छित व्यक्ति का नामोच्चारण करें।

नवार्ण वशीकरण मन्त्र—

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (···नाम···) वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (··· नाम····) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण स्तम्भन मन्त्र—

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (···· नाम ····) ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्रीं जिह्वां कीलय ह्रीं बुद्धि विनाशाय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा।

नवार्ण विद्वेषण मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै (··· नाम····) विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण मारण मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (··· नाम ····) रं रं खे खे मारय मारय शीघ्रं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

विशेष विधि—

1: **मोहन-मन्त्र** की साधना में ताम्र-कलश में सात कुओं का जल लेकर उसमें आम का पल्लव रखें। नित्य स्थान के समय यह जल शरीर पर छिड़कें। शरीर पर पीले वस्त्र हों, माथे पर पीला चन्दन हो, जप के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समय मुँह पश्चिम की ओर हो और आसन भी पीले रङ्ग का हो। मन्त्र-की जप-संख्या कम से कम सवालाख होनी चाहिए। बारह लाख जप का पूर्ण और निश्चित प्रभाव होता।

2. वशीकरण साधना के लिए किसी जलाशय के समीप, श्वेत आसन पर, दक्षिण की ओर मुँह करके, श्वेत वस्त्र धारण किये हुए, बीस दिनों तक सवा लाख (पूर्ण संख्या बीस लाख) जप करने से सफलता मिलती है।

3. उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण तथा **मारण** के प्रयोग अभिचार-कर्म माने गये हैं, जिनकी गणना पातक-कर्म में होती है। अतः नैतिक-आचरण की दृष्टि से ऐसे प्रयोगों की विधि सार्वजनिक रूप में प्रकाशित करना उचित नहीं हैं। अपरिहार्य स्थिति में किसी सुयोग्य विद्वान् से इस विषय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सिद्ध दुर्गा-मन्त्र-साधना

परिचय—देवी दुर्गाजी के अनेक नाम-रूप हैं। प्रत्येक का अपना महत्त्व है। साधक उनके किसी भी नाम-रूप की वन्दना करके लाभान्वित हो सकता है। यहाँ सिद्ध दुर्गा-मन्त्र की साधना-विधि लिखी जा रही है। इस सरल और संक्षिप्त विधि से भी यदि कोई साधक निष्ठापूर्वक उपासना करे, तो वह अवश्य ही माता दुर्गाजी की कृपा का पात्र बन सकता है।

सिद्ध दुर्गा मन्त्र—

ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।

साधना-विधि—

नवरात्र में अथवा किसी भी शुभ-मुहूर्त्त में, इस साधना को आरम्भ करके पूरे 41 दिनों तक नियम-संयम के साथ दैनिक पूजन और मन्त्र-जप करना चाहिए। प्रतिदिन 80 माला जपने का नियम है। इस प्रकार 41 दिनों तक 80 माला नित्य, फिर 8 माला 9 दिनों तक नित्य जपना चाहिए। कुल 50 दिनों की साधना होती हैं। उसके बाद 50वें या इक्यावनवें दिन उसी मन्त्र को पढ़ते हुए 108 बार आहुति देकर हवन करना चाहिए। इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस सिद्ध दुर्गा-मन्त्र का प्रभाव अचूक होता है। यदि साधक ने पूर्ण संयम के साथ 51 दिनों तक नियमित मन्त्र-जप और हवन की क्रिया पूरी करली है, तो वह कभी भी इस मन्त्र को पढ़कर, दूब से जल छिड़कते हुए निम्न बाधाओं का निवारण कर सकता है—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
भौतिक-आपदाएं, कोई भी संकट, भूतादि ग्रहों की पीड़ा, प्रेत-पिशाच बाधा, दुर्भाग्य, नवग्रह-पीड़ा, रोग-बीमारी, शत्रु-पीड़ा आदि।

सर्वप्रथम दुर्गाजी की प्रतिमा-चित्र अथवा यन्त्र प्राप्त करें। उसे लाल रङ्ग के कपड़े पर आसीन करके स्नान करायें, लाल चन्दन, पुष्प, धूप-दीप दें। नैवेद्य अर्पित करें, फिर निम्नलिखित स्तुति द्वारा दुर्गाजी का ध्यान करें :—

अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजल जलधर श्यामलां हस्त पद्मां।
शूलं बाणं कृपाणं त्वसि जलज गदा चाप पाशान् वहन्तीं॥
चन्द्रोतंशां त्रिनेत्रां चितसृणिरसिभाखेटं विभ्रतीभिः।
कन्याभिः सेव्यमाना प्रतिभट भयदां शूलिनीं भावयामः॥

इस ध्यान-स्तुति का पाठ करने के बाद, परम तन्मय भाव से उपर्युक्त सिद्ध दुर्गा-मन्त्र का जप करना चाहिए।

विशेष—

सिद्ध दुर्गा-साधना के कुछ विशेष नियम हैं। इनका पालन करना आवश्यक है। सर्वप्रथम शुद्ध स्थान पर आसन बिछाकर, पूजा की तैयारी करें। सारी सामग्री पहले से वहाँ रख लें। ताम्रपत्र पर श्री-यन्त्र बनवा लें, या भोजपत्र पर बनालें। काठ के पीढ़े पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर श्री-यन्त्र स्थापित करें। यदि श्री-यन्त्र न मिल सके, तो दुर्गाजी का चित्र या मूर्त्ति स्थापित कर लेना चाहिए। आशय यह है कि दुर्गाजी की रूपाकृति सामने रहने से मानसिक-तन्मयता बनी रहती है। यन्त्र या मूर्त्ति-चित्र, जो भी हो, उसकी चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपादि से पूजा करके पूर्वोक्त ध्यान-स्तुति और तदन्तर मन्त्र-जप करें। जप के समय घी का दीपक दुर्गाजी के सम्मुख जलाये रखना चाहिए। आज के युग में घी का दीपक सम्भव नहीं रह गया, अतः विकल्प के रूप में मीठे तेल का दीपक जलाकर काम चलाया जा सकता है। यह भी ध्यान में रखने की बात है कि इस उपासना के लिए ऊनी आसन ही प्रयोज्य होता है। माला कोई भी ले सकते हैं—लाल चन्दन की, कुशाग्रन्थि की अथवा रुद्राक्ष की। रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती है। जप के लिए अर्द्ध-रात्रि का समय उत्तम होता है।

जैसे मन्त्र-जप के पूर्व ध्यान-स्तुति की जाती है, ठीक उसी प्रकार मन्त्र-जप समाप्त होने पर, पूजा से उठने के पूर्व, क्षमा-याचना करते हुए दुर्गाजी की कोई स्तुति पढ़नी चाहिए। स्तुति पढ़ने या याद करने में असुविधा हो तो केवल 'श्री दुर्गायै नमः' का सात बार जप करके देवी-प्रतिमा को क्षमा-याचना हेतु प्रणाम करना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कभी भी, किसी भी आवश्यकता पर, इसे पढ़ते हुए, तत्कालीन समस्या पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

जय दुर्गा-मन्त्र साधना

परिचय—

दुर्गाजी की उपासना के लिए यह भी एक बहुत प्रसिद्ध और प्रभावी मन्त्र है। दस अक्षरों से रचित होने के कारक्त यह 'दशाक्षर-मन्त्र' कहा जाता है।

मूल मन्त्र—

॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि ठः ठः स्वाहा ॥

साधना-विधि—

किसी भी शुभ-मुहूर्त्त में यह साधना आरम्भ की जा सकती है। दुर्गाजी की प्रतिमा, चित्र अथवा यन्त्र का पूजन करके नित्य इस मन्त्र का जप करना चाहिए। इसकी कुल जप-संख्या, (सिद्धि के लिए) एक लाख है। साधक अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक निश्चित समय में (एक या डेढ़ महीना) यह संख्या पूरी कर सकता है। जप पूरा हो चुकने पर हवन और दान, (ब्राह्मण-कन्या को भोजन) भी आवश्यक होता है।

दैनिक रूप में दुर्गाजी की पूजा करके, अङ्गन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास करना चाहिए। यहाँ व्यावहारिक दृष्टि से लिख रहा हूँ—आज के भागमभाग के युग में, व्यक्ति इतना अस्थिर और क्लान्त है कि वह शास्त्रीय-पद्धति से जटिल साधना नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में यदि साधक परम श्रद्धा-भाव से, देवीजी से साधना को निर्विघ्नता, सुरक्षा, शान्ति और सफलता-प्राप्ति के लिए अपनी भाषा, अपने वाक्यों में मौन-निवेदन करले, तो भी कल्याण होता है। वैसे, प्रसङ्ग-पूर्त्ति के लिए, इस मन्त्र की करन्यासादि विधि लिखे दे रहा हूँ—

करन्यास—

ॐ दुर्गे अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ दुर्गे तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ दुर्गे मध्यमाभ्यां वौषट्।
ॐ भूतरक्षिणी अनामिकाभ्यां हुं।
ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि अस्त्राय फट्।

शास्त्रीय पद्धति यह है कि प्रत्येक साधना में सभी न्यास अङ्ग, कर, हृदय आदि अवश्य किये जाएं। न्यास के पश्चात् सम्बन्धित देवता की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
ध्यान-स्तुति पढ़कर, तदुपरान्त मूल-मन्त्र का जप आरम्भ करना चाहिए। किन्तु यह नियमावली इतनी जटिल है कि सामान्य गृहस्थ, जो प्रायः अशिक्षित या अल्प-शिक्षित होता है, यह न्यासादि की बाध्यता पूरी नहीं कर सकता। मेरा अपना अनुभवाधारित मत है कि अपने शब्दों में देवता की प्रार्थना करके, निर्विघ्न साधना के लिए प्रार्थना करली जाये और शुद्ध-पवित्र स्थान पर एकाग्र-चित्त बैठकर मन्त्र का जप किया जाये, तो भी साधना फलीभूत होती है। वस्तुतः देवता श्रद्धा ही देखते हैं, बाह्याचार का उनकी दृष्टि में कोई महत्त्व नहीं। वास्तव में न्यास आदि शारीरिक-क्रियाएं हैं—योग-साधना के संक्षिप्त रूप। इनसे शारीरिक-मानसिक सन्तुलन और शुचिता की स्थिति बनी रहती है। परन्तु जब कोई साधक संस्कृत नहीं जानता, नहीं बोल पाता, तो वह क्या करे? ऐसी स्थिति में समन्वय-मार्ग ही श्रेयस्कर रहता है। देवता की प्रार्थना करके मन्त्र-जप आरम्भ करदें, बस यही पर्याप्त है। 'जय दुर्गा साधना' में मन्त्र जप आरम्भ करने के पूर्व इस स्तुति द्वारा देवीजी का ध्यान कर लेना चाहिए।

ध्यान-स्तुति—

कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलि बद्धेन्दु रेखाम्।
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखं मपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्॥
सिंहस्कन्धाधिरूढ़ां त्रिभुवनमखिलं तेजसां तूरयन्तीम्।
ध्यायेत् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृत्तां सेवितां सिद्धिकामैः॥

इस स्तुति-पाठ के पश्चात् मन्त्र जपना चाहिए। मन्त्र-जप की समाप्ति पर पुनः कोई दुर्गा-स्तुति अथवा 'श्री दुर्गायै नमः' का नौ बार जप करके प्रणाम करना चाहिए।

दरिद्रता-नाशक दुर्गा मन्त्र-साधना

परिचय—

नीति-शास्त्र में लिखा है—'...सर्वे गुणाः काञ्चन माश्रयन्ति' अर्थात् जहाँ धन (लक्ष्मी) है, वहीं समस्त गुण भी वास करते हैं। अर्थात् जो धनी हैं, वही समस्त गुणों से युक्त माना जाता है, भले ही वह दुर्गुणी अथवा निरा मूर्ख ही क्यों न हो। भाव यह है कि संसार में धन ही वह प्रधान साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक-जगत् के सारे सुख प्राप्त कर पाता है। धन के अभाव में धर्म की साधना भी नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में, निर्धन व्यक्ति की समस्याओं की कल्पना सहज ही की जा सकती है। जिसके पास धन नहीं है, वह अपना जीवन-निर्वाह कैसे करेगा? भोजन,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
वस्त्र, दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत, यज्ञादि तथा परोपकार—यह सारे कृत्य धन पर ही आश्रित हैं। यदि धन नहीं है, तो इन कार्यों की पूर्त्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

धन का अभाव दरिद्रता का जनक होता है। दरिद्रता अनेक प्रकार के दुःखों की जननी होती है। दरिद्रता में ही मनुष्य अपराध-कर्मों की ओर झुक जाता है। मानवीय-गुणों को नष्ट करने में दरिद्रता सबसे आगे आती है। दरिद्र-व्यक्ति का जीवन अनेक प्रकार की विसङ्गतियों से त्रस्त रहता है। उसे नाना प्रकार की चिन्ताऐं भतभीत-भ्रमित बनाये रहती हैं। ऐसी स्थिति में धन ही एक मात्र विकल्प होता है, जो उसके कष्टों का निवारण कर सकता है। परन्तु धन की प्राप्ति सहज नहीं होती। पूर्व-जन्म के कृत्य, वर्त्तमान जीवन का सौभाग्य और पारिवारिक-वातावरण तथा साधन—यह सब व्यक्ति को धनी या निर्धन बनाने में प्रमुख कारक होते हैं। परन्तु दैवी-विधान सर्वोपरि होता है। देवता की कृपा से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। देवता ही तो मनुष्य के भाग्य-विधायक होते हैं। वे जब भी चाहें, व्यक्ति को कुछ भी दे सकते हैं। इसीलिए लोग देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, ताकि उनकी कृपा से सङ्कट-निवारण हो सके।

देवी दुर्गाजी संसार की आदि-शक्ति, आदि-माता और रक्षक हैं। भक्तजन उनकी उपासना करके विविध प्रकार के मनोरथ निवेदित करते हैं। श्रद्धा-भक्ति के साथ की गयी दुर्गाजी की उपासना निश्चित रूपेण कल्याणकारी होती है। दुर्गाजी के अनेक रूप और पूजन-विधान हैं। साधक-जन अपनी आस्था और आवश्यकतानुसार उनकी उपासना करते रहते हैं। यहाँ दुर्गाजी का एक ऐसा मन्त्र लिखा जा रहा है, जो दरिद्रता, दुःख, भय, भ्रान्ति और अन्य प्रकार के शारीरिक-मानसिक दुःख दूर कर देता है। आवश्यकता इस बात की है कि साधना श्रद्धापूर्वक, एकाग्रचित्त होकर और शुद्ध-एकान्त स्थान में, परम तन्मयता के साथ की जाए। दारिद्र्य, दुःख, भयहारी दुर्गा-मन्त्र की सरलतम साधना-विधि आगे लिखी जा रही है।

मूल मन्त्र—

ह्रीं दुं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तौ,
स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि।
यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह,
पवमानवीतंजहि दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या॥
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्तां स्वाहा।

किसी-किसी ग्रन्थ में यह मन्त्र इस रूप में भी लिखा गया है :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ताः ॥

ऊपर वाली स्तुति में कुछ विशेष शब्द जुड़े हुए हैं, जो मन्त्र की गुरुता को बढ़ा रहे हैं। अतः यथासम्भव उसी (प्रथम) का जप करना चाहिए। यों, उच्चारण सुगम होने के नाते, असमर्थ और दुर्बल-जनों को नीचे वाली स्तुति का अवलम्ब भी लाभकारी हो सकता है। दोनों में दुर्गा जी का स्तवन और दरिद्रता, दुःख, भय के निवारण की प्रार्थना की गयी है। उपास्य-देवता और साधक की कामना—दोनों में एक ही है, अतः दोनों ही स्तुतियाँ (मन्त्र) लाभकारी हैं।

साधना-विधि—

किसी शुभ-मुहूर्त्त में पूजा का स्थान तथा समस्त प्रयोजनीय सामग्री सहेज लें, फिर स्नानोपरान्त आसनादि की शुद्धि करके देवी दुर्गाजी का ध्यान करते हुए, मन्त्र-साधना का विनियोग करें। यह साधना कुछ जटिल अवश्य है, परन्तु उतनी प्रभावी भी है। यों यदि कोई साधक शास्त्रीय-विधि का पालन करने में असमर्थ है, तो यह सहज भाव से देवी की स्तुति और अपनी विवशता के लिए क्षमा-याचना करते हुए, केवल मन्त्र-जप से ही लाभान्वित हो सकता है। परन्तु जहाँ तक सम्भव हो, प्रत्येक साधक को शास्त्रीय-विधि का पालन अवश्य करना चाहिए।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री दुर्गेस्मृतेति मन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, शाकम्भरी शक्तिः, वायु कीलकं, मम सकल संकेत कष्ट दारिद्र्य दुःख भय परिहारार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—

श्री विष्णुः ऋषये नमः सिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।
महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि।
शाकम्भरी शक्त्यै नमः नाभौ।
वायु कीलकाय नमः पादयोः।

मम सकल संकेत कष्ट दारिद्र्य परिहारार्थं विनियोगाय नमः कराञ्जलौ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करन्यास—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह अंगुष्ठाभ्यां नमः।

स्वस्थै स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह तर्जनीभ्यां नमः।

दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह पवमानवीतं जहि मध्यमाभ्यां नमः।

सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह पवमानवीतं जहि अनामिकाभ्यां नमः।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह पवमानवीवं जहि दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह पवमानवीतं जहि। दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या स्वाहा करतलं करपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान-स्तुति—

विद्युद्दाभसमप्रभां मृगपति स्कन्ध स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम्॥
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

ध्यान-स्तुति के पश्चात् पूर्व-लिखित मूल-मन्त्र का जप करना चाहिए। जप की संख्या प्रतिदिन कम से कम एक माला (108 बार) अवश्य रहे। हो सके तो 5, 7, 9, 11 माला तक प्रतिदिन जप लें। कुल संख्या दस हजार वा सङ्कल्प करना चाहिए। जप पूरा हो जाने पर हवन और दान भी करें। वैसे, इस मन्त्र का सहज भाव से दैनिक-जप भी बहुत लाभकारी होता है।

महिष-मर्दिनी दुर्गा-मंत्र-साधना

परिचय—

एक समय महिषासुर नामक दैत्य ने अपने उत्पात से देवताओं को इतना आतङ्कित किया था कि उनकी रक्षा के लिए दुर्गाजी को आगे आना पड़ा था। उस राक्षस को मारने के बाद श्री दुर्गाजी का 'महिष-मर्दिनी'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
नाम प्रसिद्ध हो गया। महिषासुर देवताओं का शत्रु था। उसका वध करके देवी ने समस्त लोक को अभय कर दिया था। उनका 'महिष-मर्दिनी' नाम आज भी शत्रु-भय को नष्ट करने में समर्थ हैं। यही कारण है कि किसी भी प्रकार के सङ्कट, विरोध अथवा विघ्न की स्थिति में साधकजन महिषमर्दिनी दुर्गाजी का स्मरण करते हैं। कोई भी क्लेश हो—शारीरिक-कष्ट, भूत-ग्रहादि की पीड़ा, प्रेत-पिशाच की बाधा, दुर्भाग्य, कलह, हिंसक-पशु, शत्रु अथवा अन्य किसी प्रकार के विरोधीं से पीड़ा मिल रही हो, इन सबके शमन में महिषमर्दिनी दुर्गा का स्मरण निश्चित प्रभाव दिखाता है।

मूल महिषमर्दिनी दुर्गा-मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं महिषमर्दिनी स्वाहा।

विधि—

उपर्युक्त दुर्गाजी की अन्य साधनाओं की भाँति इसे भी किसी शुभ-मुहूर्त्त में आरम्भ करना चाहिए। शास्त्रीय-विधि में तो इसकी जप संख्या 8 लाख बतायी गयी है और 8 लाख ही आहुति देने का विधान है। परन्तु मेरी धारणा है कि यह एक असम्भव कल्पना है और आज के युग में तो पूरे तौर पर असम्भव है। 8 लाख जप करने, और 8 लाख आहुतियाँ देने की बात लिखकर सम्भवतः किसी विद्वान् ने इसे गोपनीय और कुछ विशिष्ट लोगों तक ही सीमित रखने के उद्देश्य की पूर्त्ति की है। मेरा मत है—साधक कोई भी संख्या, अधिकतम जप के लिए निश्चित करले—5 हजार, 7 हजार, या 11 हजार, 21 हजार आदि। फिर नियमित जप द्वारा उसे पूरी करे। जप पूरा हो जाने पर यथा-सामर्थ्य अधिकतम अथवा कम से कम 108 आहुतियाँ देकर हवन करे। इस प्रकार सहज-सम्भव मार्ग का अनुसरण करके वह निश्चित फल पा सकता हैं। प्रतिबन्ध यही है कि साधना जो भी थोड़ी-बहुत की जाए, पूर्ण श्रद्धा के साथ हो। संयम, शुद्धता, एकाग्रता और नियमित रूप से जप—यह साधना के अनिवार्य अङ्ग हैं। इस मन्त्र की यदि विधिपूर्वक साधना की जाय तो चाहे जैसी शत्रु-बाधा हो, उससे मुक्ति मिल जाती है। प्रचण्ड शक्ति वाला शत्रु भी इससे परास्त हो जाता है।

करांग्न्यास—

इस मन्त्र को सिद्धि करने के लिए देवी-प्रतिमा की पूजा करके, मन्त्र-जप का निर्देश किया गया है। जप आरम्भ करने के पूर्व न्यास और ध्यान-स्तुति भी करना चाहिए। ध्यान के लिए दुर्गाजी का चित्र या मूर्त्ति सामने रख लेने से मानसिक-एकाग्रता बनी रहती है। ध्यान के पूर्व न्यास

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का विधान भी अपरिहार्य बताया जाता है। इस मन्त्र के लिए करांगन्यास का उल्लेख इस प्रकार किया गया है :—

महिषं हिंसके हुँ फट् .....अंगुष्ठाभ्यां नमः।
महिषं शत्रो हुँ भट् .....तर्जनीभ्यां नमः।
महिषं ह्रेषय ह्रेषय हुँ फट् .... मध्यमाभ्यां वषट्।
महिषं हन हन देवि हुँ फट्... अनामिकाभ्यां हुँ फट् स्वाहा।
महिषसूदिनि हुँ फट्..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

अस्तु, मैं न्यास आदि पर विशेष बल नहीं देना चाहता। कारण कि यह सब पण्डितों का वाग्-विलास है। मेरा उद्देश्य है—देवी-साधना को सर्वजन के लिए सुलभ रूप में प्रस्तुत करना। न्यासादि का वर्णन चर्वित-चर्वण और अपने पाण्डित्य तथा शास्त्रों की दुहाई देते हुए साधना को जटिल, अप्रयोज्य बनाये रखने का पाखण्ड मात्र है। आज के युग में, अच्छे-अच्छे एम. ए. पास शुद्ध हिन्दी में पत्र तक नहीं लिख पाते हैं। ऐसी स्थिति में आज का आर्थिक-सामाजिक सन्त्रास झेल रहा मानव, जो सामान्य शिक्षित ही है, कैसे यह संस्कृत-शब्दावली कण्ठस्थ कर सकता है? फिर इतना समय ही कहाँ है कि वह इतनी घटिल साधना कर सके। अतः मेरे विचार से तो देवी-प्रतिमा की पूजा करके, उनके दर्शन, ध्यान, स्तवन के साथ, क्षमा-याचना करते हुए, मूल-मन्त्र का जप आरम्भ कर देना चाहिए। दैनिक रूप में निश्चित संख्या पूरी करके, थोड़े दिनों में मन्त्र का पुरश्चरण किया जा सकता है। जप पूरा हो चुकने पर कुछ हवन और दान भी करना चाहिए।

गारुडोपल सन्निभां मणि मौलि कुण्डल मण्डिताम्।
नौमि भाल विलोचनां महिषोन्मत्ताङ्ग विषेदुषीम्॥
शंख चक्र कृपाण खेटक वाण कार्मुक शूलकाम्।
तर्जनीमपि विभ्रती निज बाहुभिः शशि शेखराम्॥

श्री लक्ष्मी साधना

संसार की सारी सम्पदा, धन-वैभव, सोना-चांदी और रत्नादि सब लक्ष्मीजी का ही व्यापक रूप है। लक्ष्मीजी धन की, सम्पत्ति की देवी हैं। हैं। मनुष्य के पास भौतिक रूप में जो भी धन है—भूमि-धन, पशु-धन, अन्न-धन, द्रव्य-धन, धातु-धन अथवा वृक्ष-धन या अन्य अचल-सम्पत्ति—वह सब लक्ष्मीजी का ही लीला-विलास है। संसार का भौतिक-सुख उन्हीं की कृपा पर अवलम्बित है। लक्ष्मीजी भगवान विष्णु की शक्ति (पत्नी) हैं। विष्णु भगवान समस्त सृष्टि के पालनकर्त्ता हैं (ब्रह्मा को सृष्टिकर्त्ता

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और शिव को समापक, संहारक माना गया है)। सहज सिद्ध है कि जीव-जगत् का पालन वही कर सकता है, जिसके पास प्राण-पोषक, निर्वाह-दायिनी क्षमता हो। विष्णु की वह क्षमता श्री लक्ष्मीजी हैं। संसार का धन-वैभव उनका प्रतिरूप है। इस प्रकार अखिल विश्व के मानवों को भोजन-वस्त्र की आपूर्त्ति तथा सुख-वैभव के अन्य साधन लक्ष्मीजी की कृपा से ही प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि सांसारिक-जीवन में धन (अर्थ-सम्पत्ति) को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। धनाभाव की स्थिति में व्यक्ति स्वयं अपना पोषण नहीं कर सकता, फिर उससे दान-धर्म, हवन-भण्डारा और परोपकार की आशा कैसे की जा सकती है ?

लक्ष्मीजी कृपालु हो जायें तो मनुष्य क्षणों में ही रङ्क से राव हो जाता है। उसे प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह जो भी काम करता है, उसमें लाभ होता है। खेती, नौकरी, व्यापार और उद्योग-धन्धे—सभी सफल होते हैं और उसकी आर्थिक-स्थिति दिनों-दिन सबल होती जाती है। इस प्रकार लक्ष्मीजी का कृपा-पात्र होकर वह थोड़े ही समय में वैभव-सम्पन्न हो जाता है। दान-पुण्य, परोपकार, तीर्थ-यात्रा, भोज, भण्डारा, हवन, पूजन—सब उसके लिए सहज सुलभ हो जाते हैं। क्योंकि ये सारे कार्य धन से ही पूरे होते हैं और जिस पर लक्ष्मीजी की कृपा हो जाये—उसे धन की क्या कमी ? फिर जहाँ धन है, वहीं संसार के सारे गुण हैं—'सर्वे गुणाः काञ्चन माश्रयन्ति।'

श्री लक्ष्मीजी के विषय में अनेक प्रकार की धारणाएं प्रचलित हैं। यथा—

- लक्ष्मी ब्राह्मण के पास नहीं रहती।
- लक्ष्मी कहीं भी स्थायी रूप में निवास नहीं करती। यह देवी चञ्चला है। आज यहाँ, कल वहाँ। स्थान-परिवर्त्तन इसका व्यसन जैसा है।
- लक्ष्मी मुख्यतः वणिक्-जनों के पास रहती है, या फिर नरेशों-राजाओं के पास।
- जो लक्ष्मी के पीछे भागता है, लक्ष्मी उससे दूर-दूर रहती है।
- जो व्यक्ति लक्ष्मी की उपेक्षा, तिरस्कार, निर्मोह का भाव रखता है—लक्ष्मी उसकी ओर आकृष्ट होती है।
- जहाँ लक्ष्मी के माध्यम से अनेक प्रकार के सत्कर्म किये जा सकते हैं, वहीं लक्ष्मी के पीछे अनेक दुष्काण्ड भी होते रहते हैं।
- लक्ष्मी का कृपापात्र-व्यक्ति सरस्वती से उपेक्षित रहता है।
- लक्ष्मी के साथ कृपणता और अहङ्कार की भावनाएं जुड़ी रहती हैं।
- लक्ष्मी की पूजा से विष्णु और अन्य सभी देवता कृपालु रहते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

- जहाँ लक्ष्मीजी का निवास होता है, कोई सांसारिक-क्लेश नहीं रहने पाता।
- लक्ष्मी—प्रसन्नता उत्साह, चैतन्यता, अपनत्व, मोह-ममता और सांसा-
रिकता की सृष्टि करती है।
रिकता की सृष्टि करती है।
- लक्ष्मी अहङ्कार की जननी है।
- लक्ष्मी साहस, आत्म-विश्वास और धैर्य का पोषण करती है।
- जहाँ लक्ष्मी रहेगी; वहाँ त्याग, उदारता, वैराग्य, मुक्ति और निश्चिन्तता का अभाव रहता है।
- लक्ष्मी के कारण पारिवारिक-सामाजिक विघटन होता है।
- राज्यों के उत्थान-पतन, वैभव-पराभव और निर्माण अथवा नाश में लक्ष्मी की स्थिति प्रमुख होती है।
- लक्ष्मी संसार की पोषक-देवी है। जीवन-निर्वाह के लिए न्यूनाधिक, जो कुछ भी साधन मनुष्य को प्राप्त हैं, वे सब लक्ष्मी की ही देन हैं। प्रकारान्तर से वे लक्ष्मी के रूप हैं।
- लक्ष्मी में लक्ष (एक लाख) गुण निहित हैं।
- लक्ष्मी की रुष्टि-तुष्टि से ही व्यक्ति रङ्क और राव बनता है।
- लक्ष्मी मानव-जीवन का प्रकाश है (दरिद्रता जीवन का अन्धकार है)।

इनसे कई बातें परस्पर विरोधी हैं, परन्तु न्यूनाधिक रूप में, सभी में कुछ न कुछ सत्यता (यथार्थ) है। तो भी लक्ष्मीजी की प्रभाव-क्षमता, उनकी कृपा की आवश्यकता, मानव-जीवन में उनकी अविच्छिन्नता उपादेयता से इन्कार नहीं किया जा सकता। व्यावहारिक-जगत् में हम देखते हैं कि लक्ष्मी-सम्पन्न (धनवान्) व्यक्ति ही समाज में सम्मान्य होते हैं। यह स्थिति आज की नहीं, वरन् एक चिर-प्राचीन सत्य है। शताब्दियों पूर्व, 'आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य' (मौर्य-साम्राज्य के संस्थापक और विश्व-विश्रुत राजनीति-परक ग्रन्थ 'अर्थ-शास्त्र' के प्रणेता) ने अपने 'नीति-ग्रन्थ' में लिखा था—

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीना,
स पण्डितः स श्रुतिवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीया,
सर्वे गुणाः काञ्चन माश्रयन्ति॥

इससे स्पष्ट होता है कि मानव का सामाजिक-जीवन अर्थ-प्रधान है। जो व्यक्ति धन-वैभव से सम्पन्न है, वही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफ-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लता पा सकता हैं। दरिद्रता तो जीवन का अभिशाप है। आज भी लोग साधारण बातचीत में कहने लगते हैं– 'गरीबी महापाप है।'

आशय यह है कि जीवन में सुख-सुविधा, सम्मान और अन्य अनेक शारीरिक-मानसिक उपलब्धियों के लिए व्यक्ति के जीवन में धन (लक्ष्मी) की सर्वाधिक आवश्यकता और उपयोगिता है। इसे नकार कर कोई व्यक्ति सुखी और व्यवस्थित-जीवन नहीं व्यतीत कर सकता।

लक्ष्मी-प्राप्ति के अनेक साधन हैं—नौकरी, व्यापार, कृषि और उद्यम। ये सात्त्विक-साधन है। चोरी, डकैती, व्यभिचार, अपहरण, लूट, ठगी और इसी तरह के अन्य दुष्कृत्य भी धनार्जन के लिए किये जाते हैं, परन्तु ये तामसिक होते हैं। इनकी उपलब्धियाँ श्रेयस्कर नहीं होतीं। समाज में इन्हें अनैतिक, औचित्य-विरुद्ध और निन्दनीय कहा जाता है। इस प्रकार के कार्य-व्यवहार 'अपराध' की श्रेणी में आते है, जो समाज और शासन दोनों की दृष्टि में दण्डदनीय घोषित हैं। अतः लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए धनार्जन के लिए सदैव सात्त्विक, सामाजिक-मान्यता प्राप्त और नैतिक-साधनों को ही अपनाना चाहिए।

हम देखते हैं कि एक ही प्रकार का व्यापार, नौकरी अथवा अन्य कोई उद्योग-धन्धा करने वाले विभिन्न व्यक्ति समान रूप में लाभान्वित नहीं होते। कोई चौगुना लाभ उठाता है, कोई हानि सहने को विवश होता है। इसका कारण है, लक्ष्मीजी का कृपाभाव। वह जिस पर जैसी कृपा करती हैं, उसे वैसी ही उपलब्धि होती है। छोटा-सा धन्धा करके भी लोग करोड़-पति हो जाते हैं और करोड़ों की लागत से प्रारम्भ किया गया व्यवसाय अन्ततः निश्शेष हो जाता है। क्यों ? यह सब लक्ष्मीजी का लीला-विलास है। वे जब जिसे जैसा चाहें, वैसा ही उत्थान-पतन दे सकती हैं। इसी कारण लोग लक्ष्मीजी की पूजा करते हैं, ताकि वे प्रसन्न रहें और उनकी कृपा से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती रहे।

पौराणिक-मान्यता—

लक्ष्मीजी के अनेक नाम हैं। उनके पर्यायवाची शब्दों में एक है—सिन्धुसुता (सागरपुत्री) अर्थात् समुद्र की बेटी। पौराणिक-कथाओं में यह सन्दर्भ बहुत प्रसिद्ध है कि एक बार देवों-दानवों ने मिलकर सागर-मन्थन किया था। उस मन्थन-क्रिया से, चौदह वस्तुएं समुद्र से उद्भूत (प्राप्त) हुई थीं। लक्ष्मीजी भी उन्हीं चौदह रत्नों में से एक थीं। दक्षिणा-वर्त्ती शंख भी उसी सागर-मन्थन से प्राप्त हुआ था। इसी कारण उसे 'लक्ष्मी-सहोदर' कहा जाता है। रत्नों का बँटवारा होने पर 'श्री' अर्थात्

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लक्ष्मीजी भगवान् विष्णु को प्राप्त हुईं और उनकी पत्नी (अर्द्धाङ्गिनी) के रूप में सदा-सर्वदा के लिए उनकी 'विश्वम्भरा-शक्ति' बन गयीं।

लक्ष्मी-उपासना—

भौतिक सुख-समृद्धि और धन-वैभव की कामना-पूर्त्ति के लिए श्री लक्ष्मीजी की उपासना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। विभिन्न ग्रन्थों में लक्ष्मी-पूजन की अनेक विधियाँ वर्णित हैं। यहाँ कुछ अति सरल, सहज-साध्य और त्वरित प्रभावी मन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है। दैनिक रूप में लक्ष्मी जी की पूजा ओर इन मन्त्रों का जप करने से साधक को अवश्य ही लाभ की अनुभूति होगी।

महालक्ष्मी मंत्र

परिचय—

लक्ष्मीजी के सभी मन्त्र प्रभावी हैं, और सबका फल यही होता है कि वे साधक की आर्थिक-समस्याओं को समाप्त करके उसे धन-सम्पत्ति

श्री महालक्ष्मीजी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और वैभव-विलास प्रदान करते हैं। भले ही नामानुसार विनियोग, ध्यान-स्तुति और जप-मन्त्र में कुछ शब्दान्तर है, किन्तु उनके प्रभाव में कोई भेद नहीं है। किसी भी मन्त्र का जप करने वाले साधक पर लक्ष्मीजी की कृपा-दृष्टि अवश्य होती है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी मन्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, श्री बीजम्, नमः शक्तिः, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

ॐ सिन्दूरारुण कान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यबारांनिधिम्,
कोटीराङ्गद हार कुण्डल कटि सूत्रादिभिर्भूषिताम्॥
हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्ज युगला दर्शौ वहंतीं परा।
मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः॥

जप-मन्त्र—

- ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।
- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

सिद्धलक्ष्मी मंत्र

ॐ अस्य श्री सिद्धलक्ष्मी मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री महालक्ष्मी, महाकाली, सरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम सर्व क्लेश पीड़ा परिहारार्थं सर्वदुःख दारिद्र्य नाशार्थं सर्व-कार्य सिद्धयर्थं च श्री सिद्धलक्ष्मी मन्त्र जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्।
त्रिनेत्रा खड्गशूलाभी पद्मचक्रे गदाधराम्॥
पीताम्बर धरां देवीं नानालङ्कार भूषिताम्।
तेजः पुञ्जधरां श्रेष्ठां ध्यायेत् बालकुमारिकाम्॥

जप-मन्त्र—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(शुभ-मुहूर्त्त में प्रारम्भ करके, इस मन्त्र को स्फटिक की माला पर एक लाख 21 दिनों में, जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। जप-काल में गो-घृत का दीपक जलता रहे, तथा साधक कुशासन (कुशा नामक घास से निर्मित) पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे, यह आवश्यक है।)

वसुधा-लक्ष्मी मंत्र

विनियोग—

ॐ अस्य श्री वसुधालक्ष्मी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, निवृद् गायत्री छन्दः, वसुधा श्रीं देवता, ग्लौं वीजम्, ह्रीः शक्ति,, ममाभीष्ट प्राप्त्यै जपे विनियोगः।

ध्यान स्तुति—

कल्पद्रुमाधो मणि वेदिकायां,
समास्थिते वस्त्र विभूषणाढ्ये।
भूमिश्रियौ वाञ्छित वामदक्षौ,
सञ्चिन्तयेत् देव मुनीन्द्र वन्द्ये॥

जप मन्त्र—

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नम्। प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।

'महाकाल-संहिता' में भगवती वसुधादेवी का यह अद्भुत प्रभावी महामन्त्र वर्णित है। सामर्थ्यानुसार 11, 21, 51 माला जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मन्त्र-जप—

जय लक्ष्मी महं ध्याये समासीना कमलोपरि,
विद्युत् कनक वर्णाभां मुक्तादाम विराजिताम्।
पृथुलोत्तुङ्ग वक्षोजां लोचन त्रियान्वितां,
चतुर्भुजां पद्मयुगं वरामय मथापि च॥
दधतीं कौस्तुभोद्भासि हृदयां चिन्तयेत्पराम्,
प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं वसुधा लक्ष्मी नमः॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठा–लक्ष्मी मंत्र

विनियोग–

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषि,, उपष्टि छन्दः, ज्येष्ठालक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान स्तुति–

उद्यद् भास्कर सन्निभास्मितमुखी रक्ताम्बरा लेपना,
सतकुम्भं धन भाजनं सृणिमथोपाशं करैर्बिभ्रती।
पद्मेस्था कमलेक्षणा, दृढ़कुचा सौन्दर्य वारांनिधिः,
ध्यातव्या सकलाभिलाष फलदा श्री ज्येष्ठालक्ष्मीरियम् ॥

जप-मन्त्र–

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

द्वादशाक्षर–लक्ष्मी मंत्र

विनियोग–

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी मन्त्र, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजम्, नमः शक्तिः, सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति–

पूर्व वर्णित महालक्ष्मी-मन्त्र वाली ध्यान-स्तुति करें।

जप-मन्त्र–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।

दशाक्षर–लक्ष्मी मंत्र

विनियोग–

ॐ अस्य श्री लक्ष्मी बीजमन्त्रस्य, भृगु ऋषिः, निवृच्छन्दः, श्री लक्ष्मीः देवता मम धनाप्तये जपे विनियोगः।

(आगे लक्ष्मीजी के 'चतुर्थाक्षर' तथा 'एकाक्षर' मन्त्र लिखे गये हैं, उनका भी विनियोग यही है। ध्यान-स्तुति और मन्त्र भिन्न-भिन्न होंगे।)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ध्यान-स्तुति--

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताब्जैः बिभ्रती,
दानं पद्म युगामये च वपुषा सौदामिनी सन्निभा।
मुक्ताहार विराजमान पृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी,
पायाद्वः कमला कटाक्ष विभवैरानन्दयन्ती हरिम् ॥

जप मन्त्र—

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।

चार अक्षरों का लक्ष्मी मन्त्र

विनियोग

पूर्व वर्णित।

ध्यान स्तुति—

माणिक्य प्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्ताग्राहित रत्नकुम्भ सलिलैरासिच्यमानां मुदा ॥
हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुज युगा भीतिर्दधानां हरेः।
कान्तां कांक्षित पारिजातलतिकां वन्दे सरोजासनाम् ॥

जप-मन्त्र—

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं।

एकाक्षर लक्ष्मी-मन्त्र (बीज-मन्त्र)

विनियोग—

पूर्व वर्णित।

ध्यान स्तुति—

ॐ कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानाश्रियम् ॥
विभ्राणां वरमब्ज युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षोमाबद्ध नितम्बबिम्बलसितां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥

जप मन्त्र—

श्रीं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लक्ष्मी स्तोत्र

परिचय—

आज के भौतिक-युग में ही नहीं, सदैव-सर्वत्र सामाजिक-जीवन में अर्थ अर्थात् धन को प्रमुखता दी गयी है। अर्थ के अभाव में अनर्थ हो जाता है, कारण कि प्रायः समस्त सांसारिक-कार्यों में धन की आवश्यकता रहती है। धन, सम्पत्ति, द्रव्य, रुपया, पैसा, सोना-चाँदी, रत्न और वैभव—यह सब अर्थ के ही पर्याय हैं। इनके रहते व्यक्ति को किसी प्रकार का भौतिक-अभाव अथवा कष्ट नहीं होता। दान, धर्म, पूजा, अतिथि-सेवा, परोपकार, यज्ञ, हवन, तीर्थाटन और अन्य सभी प्रकार के लोकोपयोगी-कार्य एकमात्र धन पर ही आधारित रहते हैं। धन न हो तो कुछ भी नहीं किया जा सकता। इसीलिए संसार में अर्थ को प्रधानता दी गयी है।

धन-सम्पत्ति की स्वामिनी श्री लक्ष्मीजी हैं, जो भगवान् विष्णु की पत्नी हैं। उनकी कृपा प्राप्ति के लिए लोग भाँति-भाँति के उपाय पूजा-पाठ और जप-तप करते हैं। यहाँ एक बहुत ही सरल स्तोत्र प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके नियमित पाठ से माता लक्ष्मी की अनुकम्पा प्राप्त होती है, (पुस्तक में लक्ष्मी-साधना के अन्य मन्त्र भी यथा-स्थान सङ्कलित हैं)। यदि कोई साधक देवी लक्ष्मी का प्रतिदिन पूजन (चित्र या प्रतिमा का) करते हुए 21 या 11 बार, दोनों समय (दोपहर को तथा सन्ध्या को) उस स्तोत्र का पाठ करे तो निश्चय ही वह आर्थिक-सङ्कटों से मुक्ति पा सकता है।

ध्यान रखने की बात है कि ऐसी कोई भी साधना परम श्रद्धा, विनय शुचिता के साथ करनी चाहिए। मैं पाठ करता हूँ तो मुझे बदले में अमुक फल की प्राप्ति अवश्य हो—ऐसी सौदेबाजी देवाराधना में उचित नहीं होती। पूजा-पाठ करें, देव-स्मरण करें, विनय करें, फिर जो कुछ आपका वास्तविक सङ्कट है, दूर हो जायगा। जितनी कृपा के आप पात्र हैं, अवश्य मिलेगी। इसलिए अभीष्ट की पूर्त्ति न होने पर भी सन्तुष्ट रहना चाहिए क्योंकि वस्तुतः उसमें कोई न कोई कल्याण का कारण निहित रहता है।'

विधि—

सन्ध्या समय (आरती की बेला में) या मध्य-रात्रि में स्नान करके शुद्ध एकान्त स्थान में घी का दीपक जलाकर लक्ष्मीजी की पूजा करें और लाल आसन पर, लाल वस्त्र पहिनकर, लाल चन्दन या मूँगे की अथवा रुद्राक्ष की माला से यदि 21 बार नित्यप्रति इस स्तोत्र का पाठ किया जाय,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तो 31 दिनों की साधना से देवी की कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य और सात्त्विक दिनचर्या आवश्यक है।

स्तोत्र का पाठ करने के पूर्व चित्र या प्रतिमा को प्रणाम करते हुए लक्ष्मीजी का ध्यान करें। ध्यान के लिए यह श्लोक उत्तम है :—

अरुणकमल संस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा,
करकमल धृतेष्टा भीतियुग्माम्बुजाता।
मणिमुकुट विचित्राऽलंकृता कल्पजालै,
सकल भुवन माता सन्ततः श्रीः श्रियै नः॥

इसके पश्चात् मन्द स्वर में शुद्ध उच्चारण के साथ निम्नलिखित स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। पाठ के समय सुगन्धित धूप और कलश पर घृत-दीप जलता रहना आवश्यक है।

लक्ष्मी स्तोत्र—

ॐ क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे,
शुद्ध सत्त्व स्वरूपे च कोपादि परिवर्जिते।
उपमे सर्व साध्वीनां देवीनां देवपूजिते,
त्वया विना जगतसर्वं मृत्युतुल्यं च निष्फलम्॥
सर्व सम्पत् स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी,
राज्यैश्वर्याधि देवि त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः।
कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धु कन्यका,
स्वर्गे च त्वं महालक्ष्मीर्मर्त्यं लक्ष्मीश्च भूतले॥
वैकुण्ठे च महालक्ष्मी देवदेवी सरस्वती,
गङ्गा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः।
कृष्णप्राणाधिदेवि त्वं गोलोके राधिका स्वयम्,
रासे रासेश्वरी त्वं च वृन्दावन वने वने॥
कृष्णाप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चन्दनकानने,
विरजा चम्पक वने शैलशृंगे च सुन्दरी।
पद्मावती पद्मवने मालती मालती वने,
कुन्ददन्ती कुन्दवने सुशीला केतकीवने॥
कदम्बमाला त्वं देवी कदम्ब काननेऽपि च,
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मी गृहे गृहे॥

। ॐ श्रीं श्रियै नमः।

इस स्तोत्र को 21 या 11 बार पढ़ चुकने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र की 1 माला (108 दाने की) फेरना चाहिए :—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जप मन्त्र—

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

पूर्व सङ्कल्प के अनुसार निश्चित अवधि तक पाठ-साधना पूरी कर चुकने के बाद 'ॐ श्रीं श्रियै नमः' मन्त्र के द्वारा 108 आहुतियाँ देकर हवन करना चाहिए। हवन के पश्चात् सामर्थ्यानुसार 1, 3, 5 या 7 ब्राह्मण-कन्याओं को श्रद्धापूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए।

इस प्रकार की गयी लक्ष्मी-साधना के प्रभाव से साधक अर्थ-सङ्कट से मुक्त होकर समृद्धि और ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

श्री सरस्वती-साधना

प्राणिमात्र में जो भी ज्ञान, तर्क, चिन्तन, निर्णय, अनुभव, अभिव्यक्ति और भावप्रकाश की क्षमता है, उसके पास स्वर, वाणी वाग्मिता, गायन, भाषण आदि की जो भी शक्ति है, उसकी अधिष्ठात्री, स्वामिनी, नियन्त्रण करने वाली यही देवी सरस्वतीजी हैं। आदिशक्ति के तीन प्रमुख अवतारों में इनका स्थान प्रथम है। ये सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी की पत्नी मानी जाती हैं। समस्त जगत् में जो भी ध्वनि और उसका प्रभाव है, वह सब सरस्वतीजी का ही लीला-विलास है। वाणी, वाक्, ब्रह्माणी, गिरा, जिह्वेश्वरी, कण्ठेश्वरी, शारदा, वीणापाणि, हंसवाहना आदि विभिन्न नामों से भक्तजन इनका स्तवन करते हैं। ज्ञान, विद्या, वाणी, सङ्गीत, भाषण, विद्वता, लेखन, काव्य-सृजन आदि विषयों में सर्वाधिक सहायता देने के लिए सरस्वतीजी विख्यात हैं। इनसे पराङ्मुख होकर, इनकी उपेक्षा, अवमानना करके यदि कोई व्यक्ति विद्वता प्राप्त करने की कल्पना करे, तो इसे उसका मूर्खतापूर्ण अहङ्कार ही कहा जायेगा।

भारतीय कवि-समाज और साहित्य-सेवी वर्ग ने आदि-काल से ही सरस्वतीजी का स्तवन किया है। बिना इनकी कृपा के वाणी और लेखनी में जीवन्तता, प्राणमयता आ ही नहीं सकती। गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'रामायण' की रचना के प्रारम्भ में ही इनकी स्तुति की है :—

'बन्दे वाणी विनायकौ।'

अर्थात्—मैं वाणीदेवी (सरस्वतीजी) और विघ्न-विनाशक विनायक देवता (गणेशजी) की वन्दना करता हूँ।

आदि-कवि बाल्मीकिजी को भी सरस्वती-कृपा ने ही 'विश्व-कवि'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होने का सौभाग्य प्रदान किया था। कालिदासजी को इतनी मान-महत्ता प्राप्त होने के मूल में भी देवी सरस्वतीजी की कृपा ही रही है। कामायनी जैसे अपवाद को छोड़कर, किसी भी प्राचीन-अर्वाचीन काव्य-ग्रन्थ को देखें, प्रारम्भ में गौरी-गणेश (सरस्वती और गणेश) की वन्दना अवश्य मिलेगी। बोलते तो सभी हैं, पर किसी-किसी की वाणी—वाग्मिता सम्मोहनकारी है, किसी की वाणी करुणाजनक और किसी की कलहकारी होती है। यह सब देवी सरस्वतीजी का लीला-विलास है। इतिहास में कई व्यक्ति देवी सरस्वती के कृपा-पात्र के रूप में प्रसिद्ध हो गये हैं, जैसे—राजा बीरबल।

उपासना की आवश्यकता—

मनुष्य को संयमित-जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मस्तिष्क से प्राप्त होती है। मस्तिष्क को यह शक्ति ज्ञान से प्राप्त होती है। ज्ञान अर्थात् जानकारी-विवेक के लिए बुद्धि का होना आवश्यक है और बुद्धि की दात्री अथवा विधायिका—यही सरस्वतीजी हैं। अतः सांसारिक-जीवन के किसी भी क्षेत्र—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में अग्रसर होने, सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में ज्ञान-विवेक आवश्यक हैं। अतः ज्ञान-विवेक, प्रतिभा, बुद्धि-स्मरण-शक्ति, वाक्-शक्ति, चिन्तन और निर्णय-शक्ति प्राप्त करने के लिए एकमात्र यही सरल उपाय है कि देवीजी की उपासना की जाये। यह बात अलग है कि कोई व्यक्ति ज्ञानार्जन करके कवि बनना चाहता है, कोई सङ्गीतज्ञ, कोई वक्ता, कोई लेखक, चित्रक, दार्शनिक अथवा उपदेशक। परन्तु ये सभी क्षेत्र, सभी मार्ग सरस्वतीजी के द्वारा ही अनुशासित होते हैं। अतः उनकी कृपा प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति अपनी कामनानुसार वाञ्छित क्षेत्र में अवश्य सफल हो जाता है। बहुत-से लोग (प्रायः अधिकांश) ऐसे होते हैं, जो इस जन्म में बिना देवी-उपासना के ही तमाम उपलब्धियों से मण्डित रहते हैं। वास्तव में वे पूर्वजन्म के अपने सुकृतों का फल इस जन्म में पाये रहते हैं। उनको जन्म-जन्मान्तर की साधना के प्रभाव से, देवी की कृपा प्राप्त रहती है। विवेकी-जन उस पूर्व-प्राप्त कृपा के प्रति, इस जन्म में भी देवी का स्तवन-पूजन और दर्शन-चिन्तन करते रहते हैं।

विद्यार्थी-समुदाय, वैज्ञानिक, साधक तथा अन्य वर्गों के लोगों का भी सरस्वतीजी की कृपा से परम कल्याण होता है। यही कारण है कि प्रत्येक साहित्यिक-समारोह में, विद्या-केन्द्र में, शोध और अनुसन्धान के प्रारम्भ में वाणीदेवी (सरस्वतीजी) का स्तवन किया जाता है। कुछ भी न करना हो, तो भी सामान्य गृहस्थ-जीवन में भी सरस्वतीजी का बड़ा महत्त्व है। अतः उनके प्रति जन-जन में श्रद्धा, सम्मान और भक्ति का भाव रहना ही चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपासना की सरल विधि—

आर्ष-ग्रन्थों में देवी-देवताओं की उपासना के जो शास्त्रीय नियम प्राप्त होते हैं, आज के युग में असाध्य प्रायः हैं। न तो वे पूजन-उपादान हैं, न वैसा शान्त-सुरक्षित वातावरण, न उतना समय है, और न ही साधक में दीर्घकालीन संयम की क्षमता। जिस युग मे शास्त्रीय-नियमों का निर्धारण हुआ था, उसमें और वर्त्तमान युग में धरती-आकाश का, आग और पानी का, अमृत और विष का, सत्य और मिथ्या का अन्तर है। तव आज की परिस्थितियों में पूर्व निर्दिष्ट नियमों का पालन कैसे, कहाँ तक हो सकता है ? ऐसी स्थिति में समन्वय का मार्ग ही श्रेयस्कर होता है। वाह्याडम्बर, नियमों की क्लान्तिकारी रूढ़िवादी जटिलता, और अस्थिर मनोदशा—यह सब साधना को भङ्ग-भ्रष्ट करने वाले तत्त्व हैं। अतः इनके पीछे न पड़कर, सहज सात्त्विक भावना से, परम श्रद्धा-भक्ति से, शुचिता-पूर्वक. जैसे भी हो सके—देवोपासना करनी चाहिए। सारा शास्त्रीय-विधान, भक्त की अटूट श्रद्धा और अडिग आत्म-विश्वास के सामने परास्त हो जाता है। विनय, आत्म-समर्पण, अहङ्कार रहित सेवा-पूजा, देवता का नाम-जप, चिन्तन—यही सबसे बड़ी और फलदायक साधना है। अतः साधक को चाहिए कि वह देवी सरस्वती की उपासना में पूर्ण तन्मयता के साथ—उनकी स्तुति, ध्यान, मन्त्र-जप आदि करे। प्रणति और पूर्ण समर्पण ही सायुज्य की आधार-भूमि है।

सरस्वतीजी की उपासना के लिए उनकी प्रतिमा, चित्र अथवा मन्त्र को दर्शन-पूजन का आधार बनाकर प्रतिदिन नियमित रूप से साधना करनी चाहिए। सर्वप्रथम प्रतिमा को स्नान करायें, फिर वस्त्र धारण करायें। लाल चन्दन, सिंदूर, कुमकुम आदि अर्पित करें, पुष्पाञ्जलि दें, धूप-दीप और नैवेद्य प्रस्तुत करें। इसके पश्चात् कोई ध्यान-स्तुति का छन्द पढ़ें और तव माला के माध्यम से सरस्वती-मन्त्र का जप आरम्भ करें। पूर्व सङ्कल्प के अनुसार जप-संख्या पूरी हो जाने पर हवन तथा ब्राह्मण-भोजन की व्यवस्था करें।

सरस्वतीजी के ये मन्त्र बहुत प्रसिद्ध और प्रभावी हैं :—

सरस्वती मन्त्र, वाग्देवी मन्त्र, विद्यादेवी मन्त्र, नील-सरस्वती मन्त्र और एकाक्षरी मन्त्र।

नीचे प्रत्येक मन्त्र की जप-विधि प्रस्तुत है :—

सरस्वती मन्त्र—

वद् वद् वाग्वादिनी स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विनियोग–

ॐ अस्य सरस्वती मन्त्रस्य, कण्व ऋषिः, विराट् छन्द, वाग्वादिनी देवता, ममसर्वेष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

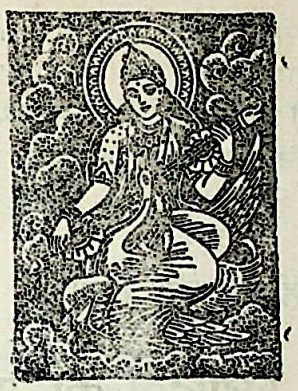

श्री सरस्वतीजी

ध्यान स्तुति—

तरुण सकलमिन्दो विभ्रति शुभ्र कान्ति,
कुचभर नमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे।
निजकरकमलोद्यत् लेखनी पुस्तक श्री,
सकल विभव सिद्ध्यै पातु वाग् देवता नः॥

विनियोग और ध्यान के उपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का जप करना चाहिए।

श्री वाणीदेवी का मन्त्र

परिचय—

वाणी और स्वर को शक्ति, सम्मोहन, प्रभाव और अमोघता देने की क्षमता वाग्देवी के पास है। वही 'वाणीदेवी' कही जाती हैं। यह सरस्वती के पर्याय रूप में है। इन्हें 'गिरा' भी कहा जाता है। गायक, कवि, भाषण-कर्त्ता, प्रवक्ता, उपदेशक और तार्किक-जनों के लिए वाणीदेवी की कृपा अनिवार्य होती है। इसके अभाव में वे प्रतिभा रहते हुए भी बोल नहीं पाते। बोलते भी हैं, तो उसका प्रभाव नहीं पड़ता। स्वर और शब्दों में (वाणी में) प्राण-तत्त्व तथा प्रभाव-तत्त्व इन्हीं गिरादेवी की कृपा से उत्पन्न होता है। अतः जो लोग उपरोक्त क्षेत्रों में रहते हैं, वे वाणीदेवी की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपासना अवश्य करते हैं। महाकवि कालिदास की सिद्धि और प्रसिद्धि का एकमात्र आधार यही था कि वाणीदेवी उन पर कृपालु थीं। अकबर के नव-रत्नों में विख्यात 'राजा वीरबल' अपनी वाक्-शक्ति के लिए सर्वत्र मान्य थे। कारण कि उन्हें सरस्वतीजी का आशीर्वाद प्राप्त था। आज भी कोई-कोई वकील, प्रोफेसर, उपदेशक और सन्त-महात्मा ऐसे हैं, जिनकी वाणी में जादू का-सा सम्मोहन है। अस्तु, वाणीदेवी की उपासना के लिए पूर्व-वर्णित सपस्वती की उपासना-विधि अपनायी जाती है। उसके पश्चात् जप के लिए निम्नलिखित मन्त्र का जप किया जाता है:—

मन्त्र-जप—

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

विद्यादेवी का मन्त्र

परिचय—

विद्या, ज्ञान, प्रतिभा, बौद्धिक-क्षमता, धारणा-शक्ति और अनेक विषयों (वेद, शास्त्र, न्याय, दर्शन अध्यात्म आदि) में पारङ्गति प्राप्त करने की कामना रखने वाले साधक विद्यादेवी की उपासना करते हैं। इनकी उपासना भी वही सरस्वतीजी की उपासना है, केवल जप-मन्त्र भिन्न है।

जप-मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री ऐं वाग्वादिनी भगवती अर्हन्मुख निवासिनी सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा, ऐं नमः।

नीलसरस्वती-मन्त्र

परिचय—

सरस्वती-उपासना के मन्त्रों में इसे बहुत ही प्रभावी और महत्त्व-पूर्ण माना जाता है। इस मन्त्र को सिद्ध करने वाला व्यक्ति भाषण के क्षेत्र में कभी परास्त नहीं हो सकता। तर्क, शास्त्रार्थ, वाद-विवाद, उपदेश आदि के अवसर पर किसी भी विषय में धाराप्रवाह बोल सकता है। वाणी और विद्या के क्षेत्र में यह सर्वाधिक प्रभावशाली मन्त्र है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विनियोग—

ॐ अस्य महाविद्या मन्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, सरस्वती देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

पूर्व-वर्णित सरस्वती-मन्त्र वाली स्तुति पढ़ें। अथवा—

सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणापुस्तक धारिणी।
हंस वाहन संयुक्ता, विद्यादानं करोतु मे॥

जप-मन्त्र—

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं श्रीं,
नलिनावतारे सरस्वती द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौंः सौंः ह्रीं स्वाहा॥

श्री सरस्वती का एकाक्षर-मन्त्र

परिचय—

पूर्व-वर्णित विधि के अनुसार सरस्वती-मन्त्र का विनियोग और ध्यान-स्तुति करने के पश्चात् इस मन्त्र को जपना चाहिए। यह तथा अन्य सभी देवी-मन्त्र यदि दीपावली की रात्रि में सिद्ध किये जायँ, तो बहुत प्रभावी रहते हैं।

जप-मन्त्र—

ऐं।

श्री कालीजी मन्त्र-साधना

परिचय—

आदि-शक्ति श्री भगवती के तीन प्रमुख रूप माने गये हैं—लक्ष्मी, सरस्वती और काली। वस्तुतः यह तीनों देवियाँ, तीनों रूप एक ही मूल-शक्ति (आदि-विद्या, आदि-भगवती) के विभिन्न रूप हैं। समस्त जगत् की व्यवस्था (सृजन, पालन और संहार) इन्हीं देवियों के हाथों सम्पन्न होती है। सृष्टि की व्यवस्था इन देवियों के द्वारा इस क्रम से होती हैं :—

लक्ष्मी—यह देवीजी सृष्टि का जन्म के लेकर मृत्यु पर्यन्त पोषण करती हैं। शरीर के लिए, जो भी भौतिक-साधन अपेक्षित होते हैं, वह सब

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन्हीं की कृपा से मिलते हैं। धन-धान्य, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, वित्त, सम्पदा और वैभव-विलास के समस्त उपादान इन्हीं की देन हैं।

सरस्वती—यह देवी प्राणियों में बौद्धिक-चेतना की सृष्टि करती है। ज्ञान, बुद्धि, विवेक, तर्क, चिन्तन, धारणा, कल्पना, अनुभूति, सम्वेग, दया, क्षमा, उदारता और मोह-ममता के भाव इन्हीं देवी के प्रसाद से व्यक्ति को सम्पन्न बनाते हैं।

काली—यह संहार की देवी हैं। मानव-जीवन का अन्तिम-आयाम इन्हीं के नियन्त्रण में रहता है। फिर भी चूँकि यह भी देवी है, अतः भक्तों के प्रति कृपा-भाव रखती हैं। यद्यपि इनकी प्रकृति में भयानकता है, परन्तु

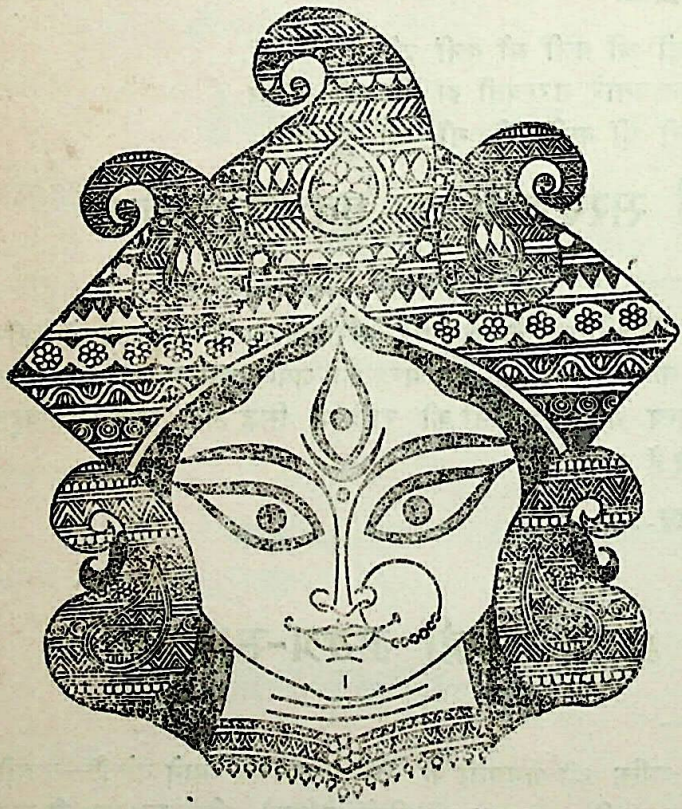

श्री माँ कालीजी

वह दुष्ट-प्रवृत्तियों के लिए है। सामान्यतः ये भी समस्त सृष्टि की माता हैं और प्रत्येक सङ्कट से रक्षा करती है। चिन्ता, भय, शत्रु का आतङ्क, दैवी-सङ्कट, युद्ध का संत्रास, महामारी आदि से रक्षा पाने के लिए भक्तजन कालीजी का स्तवन करते हैं। वैसे, कोई भी साधक किसी भी कामना की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूर्त्ति के लिए काली का स्मरण कर सकता है। देवता (देवी-शक्तियाँ) सदैव उदारमना और कृपालु होते है। श्रद्धा-भक्ति द्वारा उन्हें सरलता से अनुकूल बनाया जा सकता है। बङ्गाल में काली-साधना को बहुत मान्यता प्राप्त है। वहाँ घर-घर कालीजी की पूजा होती है। वैसे, यह एक प्रासङ्गिक तथ्य है, अन्यथा तीनों देवियाँ समस्य भारत में आराध्य-देवी के रूप में पूजी जाती हैं। अब यह बात अलग है कि कोई साधक लक्ष्मी का भक्त है, कोई सरस्वती की उपासना को वरीयता देता है और किसी के लिए कालीजी ही संसार की सर्व सुखदायिनी देवी है। अतः इन देवियों में छोटी-बड़ी का विभेद-तर्क न करके, श्रद्धानुसार किसी की भी उपासना की जा सकती है। रूप-वर्ण की दृष्टि से तीनों देवियों में अन्तर है। यथा—

लक्ष्मीजी—लालिमायुक्त गौर-वर्ण, शोभन-रूप, लाल वस्त्र, रत्न-जटित स्वर्णाभूषण, प्रसन्न-मुद्रा। यह देवी चराचर-पति भगवान् विष्णु की शक्ति (पालन-क्षमता) अर्थात् अर्द्धाङ्गिनी-पत्नी हैं।

सरस्वतीजी—चन्द्रमा जैसी धवल कान्ति से युक्त, गौर-वर्ण, सौम्य-रूप, श्वेत-परिधान, मुक्ता-हीरक जटित स्वर्णालङ्कार, सहज सात्त्विक शान्त-मुद्रा। यह देवी सृष्टि-रचियता ब्रह्माजी की सृजन-शक्ति और अर्द्धाङ्गिनी (पत्नी) हैं।

कालीजी

कृष्ण-वर्ण (काला रङ्ग) होने के कारण, स्वभावतः रोमाञ्चकारी-भयानक रूप, काले वस्त्र (नीले रङ्ग के), आभूषणों के नाम पर मुण्ड-माला (नर-मुण्डों की माला), लाल लम्बी जिह्वा, बिखरे केश, भयानक मुद्रा, आतङ्क-जनक दृष्टि, क्रोध, हिंसा और आक्रमण के भावों से उत्तेजित प्रकृति, नग्न-प्रायः शरीर। यह देवी शिवजी की शक्ति (संहार-क्षमता) और अर्द्धाङ्गिनी (पत्नी) हैं।

देवी अर्थात् शक्ति की उपासना का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। देवियों के शताधिक नाम रूपों की परिकल्पना करके उनसे सम्बन्धित सैकड़ों प्रसङ्ग-सन्दर्भों द्वारा उनका महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। देवी-उपासकों का वर्ग अपनी अस्मिता सर्वथा भिन्न बनाये हुए हैं। उनकी धारणा, मान्यता, विचार, आस्था, उपासना-पद्धति—यह सब अन्य देवताओं के उपासकों (वर्गों) से भिन्न है। देवी के उपासक 'शाक्त' कहलाते हैं। 'शाक्त' का शाब्दिक अर्थ है—शक्ति से सम्बन्धित। इसी प्रकार विष्णु के उपासक—'वैष्णव' (विष्णु से सम्बन्धित) और शिव के उपासक 'शैव' (शिव से सम्बन्ध रखने वाले) कहे जाते हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, काली—ये तीन

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रमुख देवी-रूप हैं। बाद में प्रसङ्गानुसार इनके लीला-चरित्रों की पृष्ठभूमि पर इनके विभिन्न अवतारों, रूपों और नामों की परिकल्पना की गयी है। दुर्गाजी के अनेक नाम-रूप हैं, लक्ष्मीजी के अनेक नाम-रूप है, सरस्वतीजी के नाम-रूपों की संख्या कम है। इसी प्रकार कालीजी के भी कई नाम-रूप प्रसिद्ध हैं।

साधक किसी भी देवी के किसी भी रूप की उपासना करे। श्रद्धा-भक्ति के बल पर वह अवश्य ही उसकी कृपा का पात्र बन सकता है।

मूल काली-मन्त्र—

कालीजी की उपासना के कई मन्त्र प्राप्त होते हैं। उनमें सर्वाधिक मान्यता इस मन्त्र को दी गयी है :—

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हुं हूं ह्रीं ह्रीं
दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

साधना-विधि—

अन्य देवियों की भाँति कालीजी की उपासना के लिए भी कोई शुभ-मुहूर्त्त देख लेना चाहिए। 'नवरात्र' का समय सर्वश्रेष्ठ होता है। वैसे, किसी भी शुभ-योग में पूजा आरम्भ की जा सकती है। इसलिए स्थानीय पुरोहित से जानकारी कर लेना उत्तम रहता है।

स्थान, पूजन-सामग्री, आसन, प्रतिमा, यन्त्र आदि—यह सब पहले से ही व्यवस्थित कर लेना चाहिए, ताकि साधना के मध्य कोई उलझन न हो। आसन पर बैठकर सर्वप्रथम देवी को प्रणाम करें, तत्पश्चात् निम्न-लिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए, उनसे सम्बन्धित अङ्गों का स्पर्श, प्रक्षालन, मार्जन आदि करें। उत्तम होगा कि किसी स्थानीय-पुरोहित अथवा कर्मकाण्डी विद्वान् से व्यावहारिक रूप में इस साधना की पद्धति को भली-भाँति समझ लें। यों, निम्नलिखित विधि को ध्यानपूर्वक पढ़ने से भी सब कुछ समझ में आ जायेगा। मन्त्र-जप और क्रियाएं क्रमशः इस प्रकार करें :—

मन्त्र	सम्बन्धित-अङ्ग	क्रिया
क्रीं : (3 बार)	ओंठ	आचमन
ॐ काल्यै नमः		
ॐ कल्पायै नमः (2 बार)	ओंठ	मार्जन
ॐ कुल्यायै नमः (1 बार)	हाथ	धोना
ॐ कुरु कुल्यायै नमः	मुख	स्पर्श

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मन्त्र	सम्बन्धित अङ्ग	क्रिया
ॐ विरोधन्यै नमः	दाहिनी नासिका	स्पर्श
ॐ विश्वचित्तायै नमः	वाम नासिका	,,
ॐ उग्रायै नमः	दक्षिण नेत्र	,,
ॐ उग्रप्रभायै नमः	वाम नेत्र	,,
ॐ दीप्तायै नमः	दाँया कान	,,
ॐ नीलायै नमः	बाँया कान	,,
ॐ धनायै नमः	नाभि	,,
ॐ बलाकायै नमः	हृदय	,,
ॐ मात्रायै नमः	मस्तक	,,
ॐ मुद्रायै नमः	दाँया कन्धा	,,
ॐ मितायै नमः	बाँया कन्धा	,,

इसके बाद तत्त्व-शुद्धि, भूत-शुद्धि और 'ह्रीं' का जप करते हुए (16 बार) पूरक, (64 बार जप करते हुए) कुम्भक और (32 बार जप करते हुए) रेचक प्राणायाम करना चाहिए । यदि ऐसा करना सम्भव नहीं है तो परम श्रद्धा-विनय के साथ माता कालीजी का ध्यान स्तुति करते हुए क्षमा-याचना कर लेनी चाहिए। प्राणायाम के पश्चात् विनियोग और न्यास करने का भी विधान है। यथा—

विनियोग—

ॐ अस्य श्री काली मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजम्, क्रीं कीलकम्, हुँ शक्तिः, सर्वपुरुषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—

ॐ भैरवे नमः शिरसि ।
उष्णिक् छन्दसे नमः हृदि ।
दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः गुह्ये ।
ह्रीं बीजाय नमः पादयो ।
हुँ शक्तये नमः मुखे ।
क्रीं कीलकायै नम, सर्वांगे ।

करांगन्यास—

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

षडंगन्यास—

ॐ क्रां हृदयाय नमः।
ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्रूं शिखायै वषट्।
ॐ क्रैं कवचाय हुं।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ क्रां अस्त्राय फट्।

वर्ण न्यास—

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदि।
ॐ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः दक्षिण बाहौ।
ॐ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः वाम बाहौ।
ॐ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः दक्षिण पादे।
ॐ मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं नमः वाम पादे।

इसके बाद मातृकान्यास का भी विधान, जो एक जटिल प्रक्रिया है। उसके पश्चात् 'तत्त्वन्यास' और 'बीजन्यास' करने का विधान है। वह दोनों सरल हैं, अतः इनका उल्लेख प्रस्तुत है :—

तत्त्वन्यास—

क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्म-तत्त्वाय स्वाहा।

दक्षिण कालिके ॐ विद्या-तत्त्वाय स्वाहा (हृदय से मस्तक तक का न्यास करें।)

बीजन्यास—

ब्रह्मरन्ध्रे—क्रीं नमः। भ्रूमध्ये—क्रीं नमः। ललाटे—क्रीं नमः। नाभौ—हुं नमः। मुखे—ह्रीं नमः। सर्वांगे—ह्रीं नमः।

इसके पश्चात् काली-प्रतिमा, चित्र अथवा यन्त्र—जो भी पूजा-स्थल पर स्थापित हो, ध्यान-स्तुति द्वारा नमन करें। ध्यान-स्तुति के पश्चात् रुद्राक्ष की माला से मूल-मन्त्र का 1, 5, 7, 9, 11 माला (जैसी सुविधा-सामर्थ्य हो) नियमित रूप से जप करें। उपासना-काल में पूर्ण संयम से रहना चाहिए। काली-मन्त्र की पूर्ण जप-संख्या 21000 हजार है। मान लें,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5 माला नित्य जपते हैं, तो 42 दिनों में जप-संख्या पूरी हो जायेगी। जप-समाप्ति पर 42वें दिन हवन करना चाहिए। हवन में भी सामर्थ्यानुसार 108 या अधिकतम आहुतियां दी जाती हैं। प्रत्येक आहुति मूल-मन्त्र को जपते हुए दी जाये, यह आवश्यक है।

महाकाली-मन्त्र की सिद्धि हेतु जप के पूर्व इस स्तुति द्वारा कालीजी का स्तवन-वन्दन कर लेना चाहिए :—

विरञ्चिः पञ्चतत्त्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं,
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनं।
वितन्द्रा माहेन्द्री वितततिरपि सम्मीलित दृशाम्,
महासंहारेऽस्मिन् विलसति सतिद्वत्पति रसौ॥

ध्यान-स्तुति के बाद मन्त्र-जप करें। जप की समाप्ति पर भी देवी की स्तुति अवश्य करें।

सिद्ध महाकाली मन्त्र—

महाकालीजी का एक मन्त्र और है। इसे 'सिद्ध महाकाली मन्त्र' कहते हैं। यह प्रथम वर्णित महाकाली-मन्त्र की अपेक्षा बहुत बड़ा है। दीर्घ-कालीन अभ्यास से ही इसे कण्ठस्थ किया जा सकता है, अन्यथा बिना पुस्तक देखे, इसका जप सम्भव नहीं है। दोनों मन्त्रों का प्रभाव समान है, उपासना-विधि भी समान है, केवल मन्त्र के वर्णों में अन्तर है। साधक को, जो भी सहज प्रतीत हो, उसे अपना सकता है। ध्यान-स्तुति, न्यास आदि समस्त पूजन-विधान एक ही है। केवल मन्त्र के उच्चारण में अन्तर है।

मूल महाकाली सिद्ध मन्त्र—

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं हसौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं जूं क्लीं सं लं श्रीं रः अं जां इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं वं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं महाकाल्यै नमः।

साधना-विधि—

पूजा की समस्त प्रारम्भिक तैयारी करके, कालीजी (मूर्त्ति, चित्र अथवा यन्त्र) की विधिवत् पूजा करें। नैवेद्य के मामले में कई ग्रन्थ बलि प्रदान की पुष्टि करते हैं। 'शाक्त-समाज' में अधिकांश काली-भक्त बलि-व्यवस्था के समर्थक हैं और वे पशु-बलि देते भी हैं। परन्तु न जाने क्यों, मेरा अन्तर्मन इस विधान को स्वीकार नहीं करता। आखिर कोई माँ अपनी सन्तति की बलि कैसे लेगी ? देवी 'कालीजी' आदिशक्ति का अवतार,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंश और प्रतिरूप है। वे जगज्जननी हैं। समस्त सृष्टि के सृजन, पालन और लय की व्यवस्था उन्हीं के हाथों में है। तब कोई भक्त उनकी पूजा-उपासना के सन्दर्भ—किसी भेड़, बकरी, भैंसा या अन्य पशु को मारकर उसका रक्त-मांस कालीजी को अर्पित करे—यह कैसा विधान है? अगर कहा जाय कि यह शास्त्रीय-निर्देश है, तो भी प्रश्न उठता है कि शास्त्रों का प्रणयन किसने किया था? मुझे तो लगता है, किसी मांस-प्रेमी ने स्वयं को प्रसाद रूप में मांस उपलब्ध कराने के लिए यह नियम बना डाला है। जो भी हो, मैं किसी भी पूजा-साधना में मांस-प्रयोग का समर्थक नहीं हूँ। वास्तविकता तो यह है कि देवी-देवता साधक की श्रद्धा देखते हैं, आडम्बर नहीं। तन्त्र-साधना में अवश्य भौतिक-पदार्थों का महत्व है, परन्तु यान्त्रिक-साधना—मानस-पूजन, मन्त्र-जप, ध्यान आदि में केवल श्रद्धापूर्वक इष्ट का स्मरण ही पर्याप्त होता है, अतः काली-साधक यदि पूर्ण श्रद्धा-भाव से माता काली का स्मरण-चिन्तन करें, तो वे बिना किसी औपचारिक विधि-विधान के ही, बड़ी सरलता से उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं। जो लोग कुछ भी नहीं कर सकते, वे 'ॐ महाकाल्यै नमः' के जप से भी लाभान्वित हो सकते हैं।

महाकाली मन्त्र—

कालीजी के अनेक नाम-रूप प्रचलित हैं। भक्तजन अपनी आस्था और भावना के अनुसार उनके किसी भी रूप का स्तवन, चिन्तन, दर्शन, पूजन करके लाभान्वित हो सकते हैं। शास्त्रीय विधि-विधान से की गयी पूजा अवश्य ही प्रभावशाली होती है। परन्तु जन-सामान्य के सन्दर्भ में मेरी धारणा है कि कोई भी व्यक्ति यदि अडिग श्रद्धा और अभङ्ग विश्वास के साथ किसी भी देवी-देवता की शरण लेता है, उसका स्तवन, मन्त्र-जप और पूजा-उपासना करता है, तो शास्त्रीय-नियमों का पालन न कर पाने की स्थिति में भी वह देव-कृपा प्राप्त करने में सफल रहता है। इसका कारण यह है कि देवता (ईश्वर का कोई भी रूप— देवी अथवा देवता) साधक की श्रद्धा से ही प्रभावित होते हैं, बाह्याडम्बर से नहीं। आडम्बर, साधन, नियम और विभिन्न उपादान एक ओर, इसके विपरीत सहज समर्पण-भाव की अभङ्ग श्रद्धा एक ओर। इन दोनों में श्रद्धा-पक्ष अधिक समर्थ रहता है। श्रद्धालु भक्तों को दैवी-कृपा का प्रभाव शीघ्र ही अनुभव में आ जाता है, जब कि नियमों की प्रतिबद्धता के कारण द्वन्द्व-ग्रस्त, शङ्कालु और आस्थाहीन-जन वर्षों तक दौड़-धूप, श्रम-साधना करने के बाद भी कुछ नहीं पाते। अतः उत्तम यही होगा कि साधक पहले तो स्वयं को किसी देव-शक्ति के प्रति आस्थावान्, श्रद्धालु बनाये, फिर परम तन्मयता, अखण्ड-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वास और पूर्णरूपेण आत्म-समर्पण के भाव से उस शक्ति की आराधना करे। इस प्रकार की गयी उपासना अवश्य ही फलदायी होती है।

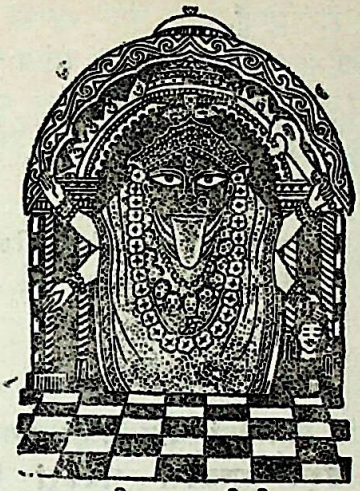

श्री महाकालीजी

यहाँ देवी महाकालीजी का एक अति सरल, संक्षिप्त, किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली मन्त्र प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चिर-अनुभूत मन्त्र है। इसका जप कभी निष्फल नहीं होता। श्रद्धा-भाव से इसे कभी भी, कहीं भी जपते हुए, साधकजन लाभान्वित हो सकते हैं। वैसे, नियमपूर्वक किये मन्त्र का प्रभाव अवश्य ही कुछ विशिष्टता रखता है। इस मन्त्र की साधना के लिए किसी शुभ मुहूर्त्त में जप प्रारम्भ करना चाहिए। जप के पूर्व कालीजी की प्रतिमा (चित्र अथवा यन्त्र) की पूजा करना आवश्यक है। पूजा में कोई भी विधि (पंचोपचार-षोड़शोपचार) अपनायें। कुछ न हो तो केवल स्नान, चन्दन, सिंदूर, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य ही अर्पित करें। इसके बाद श्री महाकालीजी का ध्यान करते हुए मन्त्र-जप आरम्भ करें। फिर प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में, पूजन के समय यह मन्त्र जपते रहना चाहिए।

मन्त्र का मूल रूप—

'ॐ किलि किलि स्वाहा।'

कालीजी के कुछ अन्य मन्त्र

यहाँ कालीजी की उपासना से सम्बन्धित चार प्रमुख मन्त्र प्रस्तुत हैं। तीनों के लिए विनियोग और ध्यान-स्तुति एक ही है, केवल जप-मन्त्र में शब्दों का अन्तर है। साधक अपनी आस्था के अनुसार किसी भी मन्त्र

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का जप कर सकते हैं। ध्यान रहे कि विधिवत् उपासना करने वाले साधक को कालीजी के दर्शन हो जाते हैं। पर चूँकि उनका स्वरूप भयानक है, अतः डरना नहीं चाहिए। काली-उपासना के समय चाहे जैसी भयद या रोमाञ्चकारी अनुभूति हो, उससे विचलित न होकर, उसे माँ के प्रसाद के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री काली मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, कालिका देवता, क्रीं बीजम्, हूँ शक्तिः, क्रीं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

ॐ शवारूढां महाभीमां घोर दष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्ग मुण्डवरा भयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय वासिनीम्॥

इसी विनियोग और ध्यान-स्तुति के आधार पर आगे लिखे चार मन्त्रों में से किसी का भी जप करके, माँ कालीजी की कृपा प्राप्त की जा सकती है।

पञ्चाक्षर काली-मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट्।

श्मशान काली-मन्त्र—

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।

भद्रकाली-मन्त्र—

ॐ ह्रों कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।

दक्षिणकाली-मन्त्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8 | देवी के अन्य विशिष्ट मन्त्र

श्री तारिणी मन्त्र-साधना

परिचय—

तन्त्र-शास्त्र के अनुसार, महाविद्याओं के समस्त मन्त्र में 'तारिणी-मन्त्र' सर्वश्रेष्ठ है, कारण कि यह सर्वथा निरापद, निर्विघ्न और निर्दोष-मन्त्र है। यह मन्त्र स्वयं सिद्ध है, अतः इसे किसी विशेष साधना-प्रक्रिया द्वारा सिद्ध करने का प्रश्न ही नहीं उठता। कोई भी साधक, सहज श्रद्धा भाव से इसका जप करके लाभान्वित हो सकता है। यह एक ऐसा मन्त्र है, जो देवी के उपासकों (शाक्त-समुदाय), बौद्धों और जैनियों में भी परम श्रद्धा के साथ सम्मानित है। तिब्बती लामा-साधक भी इसे बड़ी आस्था से अपनाये हुए हैं। इस मन्त्र की साधना में कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। दैनिक-चर्या के रूप में, स्नान करके, किसी भी देवी-प्रतिमा की पूजा करते हुए, इस मन्त्र का जप किया जा सकता है। नियमित रूप से कुछ दिनों तक आस्थापूर्वक इसका जप करना—साधक को अवश्य ही चमत्कृत करता है।

मूल तारिणी मन्त्र—

'ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट् स्त्रीं ह्रीं ॐ।'

साधना-विधि—

किसी भी शुभ-मुहूर्त्त में यह साधना आरम्भ की जा सकती है। जैसे देवी के अन्य रूपावतारों की पूजा करते है, वैसे ही इसमें भी किसी रूप (दुर्गाजी) की पूजा करें। पूजा में प्रतिमा, चित्र अथवा यन्त्र, जो भी सुलभ हो, रख लें। चन्दन, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करके, दुर्गाजी की कोई भी ध्यान-स्तुति पढ़ें। तदुपरान्त इस तारिणी-मन्त्र का जप आरम्भ करें। प्रतिदिन कम से कम एक माला (108 बार) जप अवश्य करना चाहिए। जप आरम्भ करने के पूर्व मानसिक रूप में यह सङ्कल्प करलें कि 'मैं श्री तारिणीदेवी का मन्त्र इतने दिनों में, इतनी संख्या

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में जपकर पूरा करना चाहता हूँ।' देवीजी मेरी रक्षा करें। फिर उसी हिसाब से नित्य उतनी संख्या में जप करना चाहिए। जप की सङ्कल्पित-संख्या पूरी हो जाने पर 108 आहुतियों से हवन करके, एक ब्राह्मण-कन्या को भोजन-दान भी देना चाहिए। वैसे, यह कुछ न किया जाय, केवल दैनिक-पूजा में इस मन्त्र को एक माला (108 बार) जप लिया जाय, तो भी बहुत कल्याणकारी होता है।

श्री माँ तारिणी देवी

देवी-साधना के प्रसङ्ग में यह तथ्य विशेष उल्लेखनीय है कि किसी पुस्तक में देवी के विभिन्न रूपों, अवतारों ओर साधनाओं का विवरण पढ़कर भ्रमित नहीं होना चाहिए। उनमें छोटे-बड़े का विभेद करना अनुचित है। सभी रूप श्रेष्ठ हैं। जिस पर भी आस्था हो, उसकी उपासना की जा सकती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री वाग्वादिनी मन्त्र-साधना

परिचय—

वाग्वादिनी देवी सरस्वतीजी का प्रतिरूप (पर्याय) है। ज्ञान, बुद्धि, कवित्व, ग्रन्थ-लेखन, विद्वत्ता, वाक्-पटुता, चातुर्य, सभा-विलास, भाषण, तर्क-वितर्क, सङ्गीत, गायन, वार्त्तालाप, सन्देश-कथन, सम्वाद तथा वाणी से सम्बन्धित अन्य सभी कार्यों में देवी सरस्वती अर्थात् वाग्वादिनी की कृपा ही सहायक होती है। 'वाणी-सिद्धि' के लिए—यह मन्त्र बहुत उपयोगी होता है।

मूल मन्त्र—

ॐ ऐं वद वद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिराभाव
सर्व सत्व वशंकरि स्वाहा।

साधना-विधि—

देवी दुर्गाजी की अन्य उपासनाओं की भांति किसी भी शुभ-मुहूर्त्त में इस साधना को प्रारम्भ कर सकते हैं। इसमें प्रतिबन्ध यह है कि साधक कुश के आसन पर बैठे और मन्त्र का जप रुद्राक्ष अथवा हल्दी की माला से करे। जप के दिनों में (जप के समय) साधक पीले रङ्ग के वस्त्र पहिने और पूर्ण संयम के साथ 41 दिनों तक साधना-रत रहे। नित्य कम से कम 5, 9 या 11 माला जप करना चाहिए।

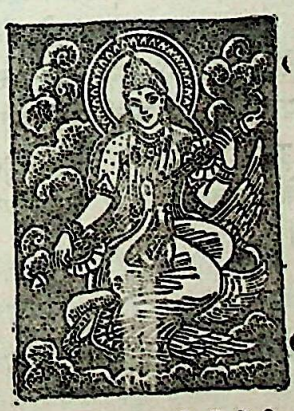

श्री माँ वाग्वादिनी देवी

देवी सरस्वतीजी का चित्र, प्रतिमा अथवा यन्त्र सामने रखकर, उसकी विधिवत् पूजा करें। तत्पश्चात् ध्यान-स्तुति द्वारा सरस्वतीजी को

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रसन्न करके मन्त्र का जप प्रारम्भ करें। ध्यान-स्तुति के लिए यह श्लोक पर्याप्त है :—

ध्यान-स्तुति—

तरुण सकलमिन्दो विभ्रति शुभ्र कान्ति,
कुचभर नमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे।
निजकरकमलोद्यत् लेखनी पुस्तक श्री,
सकल विभव सिद्ध्यै पातु वाग् देवता नः॥

ध्यान-स्तुति के पश्चात् मन्त्र (ऊपर लिखा हुआ) जपें। जप की समाप्ति पर पुनः देवी से प्रार्थना करें :—

सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणापुस्तक धारिणी।
हंस वाहन संयुक्ता, विद्यादानं करोतु मे॥

इस साधना से साधक को वाक्-सिद्धि प्राप्त हो जाती है। उसके प्रभाव से वह व्यावहारिक-जगत् में सर्वत्र सम्मान और विजय प्राप्त करता है।

श्री सर्वमंगला मन्त्र-साधना

परिचय—

समस्त चराचर का मङ्गल अर्थात् कल्याण करने वाली देवी दुर्गाजी का एक नाम 'सर्वमङ्गला' भी है। इस नाम के आधार पर उनकी स्तुति हेतु 'सर्वमङ्गला-मन्त्र' की रचना की गयी है। इस मन्त्र का जप करने से साधक की विभिन्न समस्याएं दूर हो जाती हैं। भौतिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण करने में यह मन्त्र बहुत ही सक्षम है। इसकी साधना सरल है। आज के व्यस्त-जीवन में भी साधक इसे बड़ी सरलता से जप कर लाभ उठा सकते हैं।

मूल मन्त्र—

'ॐ क्लीं सं सर्वमङ्गलायै नित्यायै स्वाहा।'

साधना-विधि—

दुर्गाजी की प्रतिमा, चित्र अथवा यन्त्र स्थापित करके किसी भी शुभ मुहूर्त्त में इस मन्त्र का जप आरम्भ कर सकते हैं। सर्वप्रथम देवीजी की पूजा करें, तदुपरान्त ध्यान-स्तुति का पाठ करके मन्त्र का जप प्रारम्भ कर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दें। नित्य 5 माला या अधिक—जैसी सुविधा-सामर्थ्य हो, जपते हुए इसकी कुल संख्या 10,000 पूरी करें। जप-संख्या पूर्ण हो जाने पर—हवन और दान-दक्षिणा द्वारा इसका समापन करें। फिर दैनिक रूप में एक माला जपते रहने से परम लाभ का अनुभव होता है।

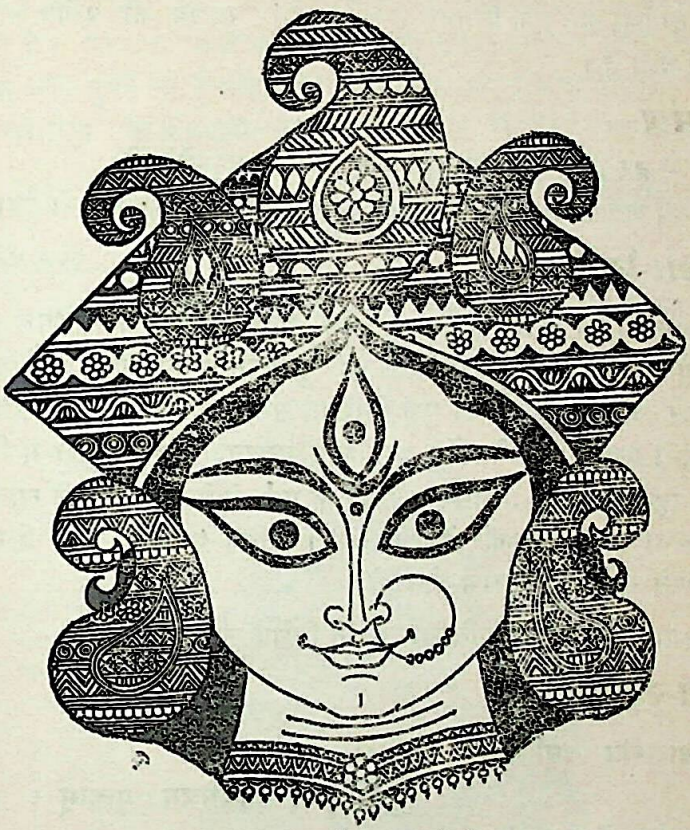

श्री मां सर्वमङ्गला देवी

ध्यान-स्तुति—

प्रकृत्या रक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचैः,
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता।
क्व बिम्बं त्वद् बिम्बप्रति फलन भावादरुणितं,
तुलामध्यारोढुं कथमपि विलज्जेत कलया॥

ध्यान-स्तुति के बाद मूल-मन्त्र का जप करें। जप की समाप्ति पर पुनः क्षमा-प्रार्थना हेतु स्तुति करें :—

सर्व मङ्गल माङ्गल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री भुवनेश्वरी मन्त्र-साधना

परिचय—

देवी भुवनेश्वरीजी अपने नामानुसार समस्त लोक की अधीश्वरी हैं। यह भी दुर्गाजी का एक प्रतिरूप है। यह देवी साधक की प्रत्येक कामना पूरी कर देती हैं।

मूल-मंत्र—

'ॐ हर त्रिपुर हर भवानी बाला राजा प्रजा मोहिनी,
सर्व शत्रु विध्वंसिनी मम चिन्तितं फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।'

साधना-विधि—

दुर्गाजी का कोई भी रूप (चित्र, यन्त्र, प्रतिमा) स्थापित करके उसकी पूजा करें। तत्पश्चात् किसी भी दुर्गा-स्तुति को पढ़ते हुए उनका ध्यान करें और फिर जप की एक निश्चित संख्या का सङ्कल्प करके प्रतिदिन उतनी मालाएं जपते रहें। यह मन्त्र मुख्यतः कामना-पूर्त्ति में विशेष प्रभावी रहता है। अतः साधक को जप के पूर्व देवीजी से अपनी लालसा-आवश्यकता का निवेदन कर देना चाहिए। दैनिक-पूजा में 1 या 5 माला नित्य जपते रहने से भी लाभ होता है।

ध्यान के लिए निम्नलिखित स्तुति विशेष उपयुक्त होगी :—

ध्यान-स्तुति—

बालरवि द्युतिमिन्दु किरीटां,
तुङ्ग कुचां नयमेत्रय युक्ताम्।
स्मरेमुखीं वरदांकुश पाशाम्,
भीतिकरां प्रभजे भुवनेश्वरीम्॥

विशेष दृष्टव्य—

माता भुवनेश्वरी देवी की साधना में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि साधक को अपनी कामनानुसार ही माला का प्रयोग करना चाहिए। कारण कि तान्त्रिक-दृष्टि से माला का वस्तुगत प्रभाव अवश्य पड़ता है, जो वस्तु-भेद के आधार पर प्रभाव-भिन्नता लिये रहता है। उद्देश्य के आधार पर माला का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए :—

धन-समृद्धि के लिए—पद्माक्ष की अथवा रेशम की माला।
आपदा-सङ्कट निवारण हेतु—लाल चन्दन की माला।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शत्रु-दमन के लिए—हल्दी की माला।
विद्या, ज्ञान, बुद्धि के लिए—स्फटिक की माला।
समस्त प्रयोजनों के लिए—रुद्राक्ष की माला।

वस्तुतः रुद्राक्ष-माला सर्वश्रेष्ठ होती है। केवल अभिचार और प्रेतादि की साधना को छोड़कर, सभी उपासनाओं में यह माला प्रयोज्य होती है। शिव-उपासना के लिए तो यह परम प्रभावी मानी जाती है। गणेश और दुर्गा की उपासना सम्बन्धी मन्त्रों का जप इसी माला पर होता है। सामान्य रूप में रुद्राक्ष-माला धारण करना भी शुभ होता है।

श्री शूलिनी दुर्गा-मन्त्र साधना

परिचय—

माता दुर्गाजी का यह भी एक रूप है। साधकजन इस रूप की आराधना करके मनोवाञ्छित फल प्राप्त करते हैं।

मूल मन्त्र—

'ॐ ज्वल ज्वल शूलिनी दुष्टग्रह हुँ फट्।'

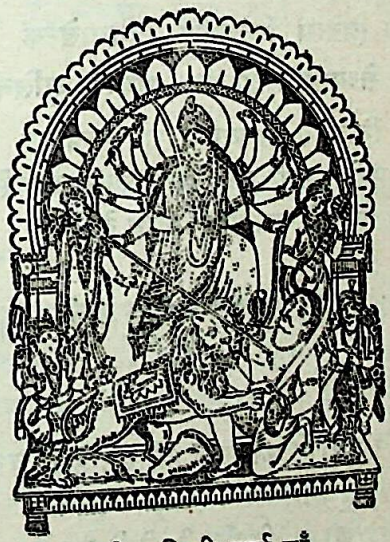

श्री शूलिनी दुर्गा माँ

साधना-विधि—

देवीजी की कई उपासना-विधियाँ लिखी जा चुकी हैं। लगभग सभी का प्रारम्भिक रूप समान रहता है। इसमें भी श्री-यन्त्र लाकर स्थापित करें और उसकी विधिवत् पूजा करके, न्यास आदि के द्वारा मन्त्र-जप की पूर्व तैयारी करलें। जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है, न्यास आदि आज

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्भव नहीं रह गये हैं। सामान्य साधक उनका विवरण पढ़कर हतोत्साहित हो जाता है। अतः सर्वश्रेष्ठ विधि यही है कि श्रीयन्त्र की पूजा करके शूलिनी दुर्गा का ध्यान करें, तदुपरान्त मन्त्र-जप आरम्भ करें। प्रसङ्ग-पूर्त्ति के लिए यहाँ करन्यास का विवरण लिखा जा रहा है।

करन्यास—

ॐ शूलिनी दुर्गे हुँ फट् अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शूलिनि वरदे हुँ फट् तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ शूलिनि विन्ध्यवासिनि हुँ फट् मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐ शूलिनी असुर मर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय त्रासय हुँ फट् अनामिकाभ्यां हुँ।

ॐ शूलिनि देव सिद्ध पूजिते वन्दिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुँ फट कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

ध्यान स्तुति—

अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजल जलधार श्यामलां हस्त पद्मां।
शूलं बाणं कृपाणं त्वसि जलज गदा चाप पाशान् वहन्तीम्॥
चन्द्रोतंशा त्रिनेत्रां त्रितसृणि रसिमाखेटकं विभ्रतीभिः।
कष्याभिः सेव्यमाना प्रतिभट भयदां शूलिनी भावयाम्॥

यदि एक निश्चित संख्या में इस मन्त्र का दैनिक-जप करके 15 लाख की संख्या पूरी करली जाय और हवन-दान से समापन किया जाय तो यह साधना अवश्य ही चमत्कारी लाभ देती है।

श्री बज्रेश्वरी मन्त्र-साधना

परिचय—

यह भी देवी दुर्गाजी का एक प्रतिरूप है। घर, पड़ोस, नगर आदि की रक्षा के लिए इन्हें विशेष रूप से स्मरण किया जाता है। वैसे, किसी भी समस्या के निवारणार्थ, किसी भी देवी-रूप का जप-चिन्तन करने से कल्याण हो जाता है।

जप-मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बज्रेश्वरी पुर निवासिनि मम कार्यं साधय साधय स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधना विधि—

दुर्गाजी का कोई भी प्रतीक यन्त्र, चित्र अथवा प्रतिमा स्थापित करके उसकी पूजा करें। तदुपरान्त किसी भी ध्यान स्तुति द्वारा देवी को प्रणाम करते हुए नित्य कम से कम एक माला (108 दाने की) उपर्युक्त मन्त्र का जप करें। इक्कीस दिनों तक पूर्ण संयम के साथ पूजन और मन्त्र-जप करें। जप की समाप्ति पर यथासम्भव हवन और भोजन-दान करें। इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

श्री दैन्यभेदिनी मन्त्र-साधना

परिचय—

श्री दुर्गाजी के समस्त रूपावतार साधकों की बहुविध लालसाएं पूरी करने में समर्थ हैं। परन्तु कुछ विशेष अवतार, किन्हीं विशेष समस्याओं के समाधान हेतु ही हुए। ऐसा ही एक दुर्गारूप है—दैन्यमेदिनी देवी। यह अवतार अपने नामानुसार भक्तों के दैन्य (दरिद्रता) का भेदन (विनाश) करता है। यह अवतार देवी लक्ष्मी (श्री त्रिपुर-सुन्दरी) का पर्याय है।

जप-मन्त्र—

ॐ श्रीं ऐं यं रं लं वं दुर्गातारिण्यै दैन्यभेदिन्यै स्वाहा।

साधना विधि—

यह साधना 'नवरात्र' में विशेष फलदायिनी होती हैं। यदि इतनी लम्बी प्रतीक्षा न की जा सके. तो किसी भी शुभमुहूर्त्त से साधना आरम्भ कर सकते हैं। लक्ष्मीजी की प्रतिमा अथवा श्री-यन्त्र की स्थापना करके उसकी विधिवत् पूजा करें। तदुपरान्त निम्नलिखित ध्यान-स्तुति द्वारा देवी को प्रणाम करके मूल-मन्त्र का जप आरम्भ करें। न्यास आदि की जटिलता सर्वसाधारण को हतोत्साहित करती है, अतः उसका विवरण न लिखकर, सहज सुगम साधना-विधि लिखी जा रही है। यहाँ यह भी ध्यान में रखने की बात है कि यह साधना प्रातः ब्रह्म-मुहूर्त्त में प्रारम्भ कर देना चाहिए। साथ ही, इसके लिए साधक को कुश का आसन प्रयोग करना चाहिए। अन्य उपादान धूप-दीप आदि तो सभी प्रकार की साधनाओं में प्रयुक्त होते हैं। इसमें इस तथ्य की ओर विशेष सजग रहें कि मन्त्र-जप के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूरे समय तक घी (अथवा मीठे तेल) का दीपक साधक के सामने, कलश पर मलता रहे। कलश को ठीक देवी-प्रतिमा के सम्मुख स्थापित करना चाहिए।

उस मन्त्र की पूर्ण जप-संख्या सवालाख कही गयी है। इसे नौ दिनों में पूरी करना चाहिए। किन्तु मेरा अपना मत है कि साधक अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिकतम जितना भी कर सके—जप का सङ्कल्प करले और फिर उसे पूरा सरे। इक्कीस हजार, ग्यारह हजार, नौ हजार अथवा इक्यावन हजार, जो भी सम्भव हो, पूर्व सङ्कल्प करके नौ दिनों तक बराबर संख्या में जपते हुए- अन्तिम-दिन सङ्कल्प की संख्या पूरी कर देनी चाहिए। जप पूरा हो चुकने पर हवन और दान भी करें। जप के प्रारम्भ और समाप्ति पर नित्य श्री लक्ष्मीजी की स्तुति करनी चाहिए :—

ध्यान स्तुति—

ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशासु सदृशी,
तमन्दं सौन्दर्यं प्रकरमकरन्दं विकरति।
तवास्मिन मन्दारस्तयक सुभगे यातु चरणे,
निमज्जन्मज्जीवः करण चरणैः षत् चरणताम् ॥

ध्यान-स्तुति के बाद मूल-मन्त्र का जप और जप की समाप्ति पर पुनः कोई स्तुति करनी चाहिए। यदि स्तुति-श्लोक याद न हो अथवा पुस्तक में न मिल रहा हो, या अभ्यास न होने के कारण पाठ करने में कोई असुविधा होती हो तो साधक मध्यम-मार्ग का अनुसरण करलें। ऐसी स्थिति में वह अपनी भाषा, अपने शब्दों में श्री लक्ष्मीजी का स्तवन-चिन्तन कर सकता है। प्रतिदिन कोई साधक इस मन्त्र की एक माला जपता रहे तो भी उससे लाभ की अनुभूति हो सकती है।

श्री अन्नपूर्णा मन्त्र-साधना

परिचय—

शाकम्भरी देवी की भाँति अन्नपूर्णा देवी भी दुर्गाजी का प्रत्यावतार हैं। समस्त जगत् के लिए भोजन अर्थात् आहार इन्हीं की कृपा से उपलब्ध होता है। श्री अन्नपूर्णाजी जिस साधक पर कृपा करें, उसके घर भण्डार में कभी अन्नाभाव नहीं होता। वह घर अन्न (खाद्य पदार्थों) से सदैव परिपूर्ण रहता है। देवी-मन्त्रों में यह सरलतम और सहज-साध्य है। सामान्य जप से ही यह सिद्ध हो जाता है। वस्तुतः यह स्वयंसिद्ध मन्त्र है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मूल मन्त्र–

1, ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं लं अन्नपूर्णायै भवान्यै स्वाहा ।
2. ॐ ह्रसौः पं फं बं भं मं रः भवानि स्वाहा ।

ध्यान स्तुति—

1--भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा,
मिति स्तोतुं वाञ्छन कथयति भवानी त्वमिति ।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निज सायुज्य पदवीं,
मुकुन्द ब्रह्मेन्द्र स्फुट मुकुट नीराजित पदम् ।।

देवि श्री अन्नपूर्णाजी

2--किरीटं वैरं च परिहर चुरः कैटभमिदः,
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारि मुकुटं ।
प्रणम्येष्वेतेषु प्रसभममि या तस्य भवनं,
हरस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्ति विजियते ।।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधना-विधि—

दुर्गाजी अथवा लक्ष्मीजी का चित्र, मूर्त्ति या यन्त्र लाकर पूजा-स्थल पर रखें। दैनिक-पूजा के समय, ध्यान-स्तुति के उपरान्त, ऊपर दिये गये दो मन्त्रों में से कोई भी एक जपें। इस मन्त्र को प्रतिदिन पाँच या सात माला जपते रहें। यह भी स्वयंसिद्ध मन्त्र है, अतः इसकी उपासना सरल है। कोई विशेष आयोजन और नियम प्रतिबन्ध इसमें नहीं। सामान्य-साधक यदि नित्य पूजा के समय 1 माला भी इस मन्त्र को जपता रहे, तो बहुत लाभ होता है। अनुभव तो यहाँ तक बताता है कि कम से कम 21 बार भी इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक दैनिक-जप किया जाये तो देवी अन्नपूर्णाजी की कृपा से अनेक प्रकार के सङ्कट और अभाव दूर हो जाते हैं। ऋण से मुक्ति, दैन्य-दरिद्रता से मुक्ति होकर घर में भौतिक-साधनों की वृद्धि होती है। धन-सम्पदा की कामना रखने वाले साधक यदि इस मन्त्र को प्रतिदिन श्रद्धा-पूर्वक जपें, तो अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

अन्न की महिमा संसार में सर्वोपरि है। नीति-शास्त्र में एक उप-देशक अपने राजा को समझाता है :—

धान्यानां संग्रहो राजनुत्तम सर्वं संग्रहात्।
निक्षिप्त हि मुखे रत्नं, न कुर्यात् प्राण धारणम्॥

अर्थात् मुख में रखा हुआ लाखों का मूल्यवान् रत्न—क्षुधा-निवारण करके प्राण-रक्षा करने में असमर्थ रहता है। यह कार्य तो केवल अन्न का दाना ही कर पाता है। इस दृष्टि से अन्न का दाना रत्न की अपेक्षा अधिक उपयोगी और मूल्यवान् है। इस प्रसङ्ग से अन्न और उसकी अधिष्ठात्री—अन्नपूर्णाजी का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है।

श्री वनदुर्गा मन्त्र-साधना

परिचय—

दुर्गाजी के मन्त्रों में वन-दुर्गा का मन्त्र प्रख्यात है। इसे 'महामन्त्र' की कोटि में गिना जाता है। इसकी प्रभाव-क्षमता अद्भुत है। यदि कोई साधक पूर्ण-निष्ठा के साथ इसका नियमित जप करे तो थोड़े दिनों में ही इसका फल प्राप्त कर लेता है। यह आशुफलदायी माना जाता है। जिस साधक को यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, वह परम विवेकी, ज्ञानी और त्रिकालदर्शी बन जाता है। दुर्गाजी की कृपा उसे सदैव प्राप्त रहती है, उनकी कृपा से श्री-सम्पन्न और सुरक्षित जीवन व्यतीत करता है। किसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भी आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए, अथवा ऐसे ही, निष्काम भाव से इस मन्त्र की नियमित साधना बहुत लाभदायक रहती है।

मूल मन्त्र—

ॐ ह्रूं क्रौं महाभय परिपन्थिनि, वनविहारिणि, दुर्गेदेवि, धनधान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

साधना-विधि—

इस मन्त्र की साधना का पूर्णफल तब प्राप्त होता है, जब यह किसी ऐसे वन में की जाये, जहाँ देवी का शक्तिपीठ या सिद्धपीठ हो। वनदुर्गा के सिद्धपीठों का पता नहीं चलता। बहुमत से केवल तीन स्थान ऐसे हैं, जिन्हें वनदुर्गा का सिद्धपीठ स्वीकृत किया गया है। उनमें एक स्थान चित्रकूट-धाम (बुन्देलखण्ड) के क्षेत्र में हैं। सीतापुर गांव के आगे—हनुमान-धारा और मन्दाकिनी के बीच में एक घना-जङ्गल पड़ता है, उस जङ्गल में दुर्गा

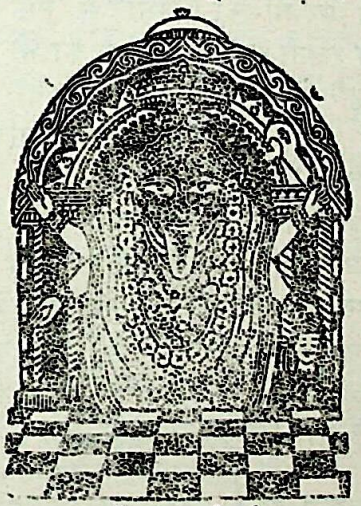

श्री वनदुर्गा माँ

जी की एक छोटी-सी मठिया बनी हैं। जनश्रुति है कि वह स्थान वनदुर्गा का शक्तिपीठ है। दूसरा स्थान हिमालय के दुर्गम-क्षेत्र में है। बद्रीनारायण-धाम के आगे भारतीय-सीमा का अन्तिम गाँव 'माणा' है। माणा के पास (30 किलोमीटर और आगे उत्तर की ओर), एक शिखर पर 'देवसर' नामक स्थान है, मान्यता है कि यह भी वनदुर्गा का सिद्धपीठ है। परन्तु, प्रत्येक साधक वहाँ नहीं जा सकता। अतः सामान्य-जनों के लिए सर्वसुगम मार्ग यह है कि घर में ही, या पास के किसी निरापद, निर्जन, शान्त-स्थान (फुलवाड़ी, वाटिका, वन, कन्दरा अथवा देव-मन्दिर) में इस मन्त्र की पूर्णनिष्ठा से, संयम-नियम से साधना की जाये।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वप्रथम दुर्गाजी का कोई प्रतीक-चिह्न पूजा-स्थल पर स्थापित करें। तदुपरान्त उसकी विधिवत् पूजा करें। पूजा के पश्चात् स्तुति पढ़ते हुए वनदुर्गा का ध्यान करें, फिर मन्त्र-जप आरम्भ करदें।

ध्यान-स्तुति—

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपति पार्वती निजा,
न्नितं वादाच्छिद्य त्वयि भरण रूपेण निधे।
अतस्तेषा विस्तीर्णो गुरुरयरामेषां वसुमती,
नितम्ब प्राग्भार:स्ममयति लघुत्वं च नयति॥

दैनिक-पूजा के उपरान्त इस स्तुति द्वारा वनदुर्गा का ध्यान करके मूल-मन्त्र का जप करना चाहिए। जप के समय साधक पूर्वाभिमुख होकर बैठे। बैठने के लिए कुश का आसन होना चाहिए। बैठने का ढङ्ग पद्मासन में रहे। सामने कलश पर घी का (अभाव में मीठे तेल का) दीपक पूरे जप-काल तक जलाये रखना चाहिए। समय का भी विशेष निर्देश किया गया है। शास्त्रीय-पद्धति के अनुसार—यह साधना या तो ब्राह्म-मुहूर्त (सूर्योदय के पूर्व) में प्रारम्भ की जाय, अथवा रात्रि के दूसरे पहर के मध्य (रात को लगभग 10 बजे से) से। पहले दिन एक संख्या निश्चित करके, प्रतिदिन सङ्कल्पित संख्या में जप करते हुए—7, 9, 11, 21 दिनों में उतना जप पूरा करना चाहिए। जप की समाप्ति पर हवन और दान भी करें। अति सामान्य साधक, प्रतिदिन की पूजा में, यदि दुर्गाजी का स्मरण करके केवल एक माला (108 दाने) उक्त वनदुर्गा-मन्त्र का जप करता रहे, तो भी सिद्धि प्राप्त कर लेता है। मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होते ही साधक अद्भुत तेज,गरिमा और आध्यात्मिक-शक्ति से सम्पन्न हो जाता है।

श्री कुमारी मन्त्र-साधना

परिचय—

आदिशक्ति दुर्गाजी समस्त संसार के जड़-चेतन में विद्यमान हैं। सृष्टि का कण-कण उनकी सत्ता से प्रभावित है। किसी न किसी रूप में वे सर्वत्र उपस्थित रहती हैं। भौतिक और भावनात्मक (प्रत्यक्ष और परोक्ष) दोनों रूपों में वे सर्वव्यापिनी होकर अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड का क्रियाकलाप सञ्चालित करती पहती हैं। कुमारी-कन्याओं में—विशेषकर कुलीन-ब्राह्मण-परिवारों की कन्याओं में दैवी-तेज अधिक होता है। इस रहस्य से परिचित होने पर भारतीय ऋषि-मुनियों ने कुमारी-कन्या को गौरी-पार्वती

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के तुल्य पवित्र और पूज्य मानकर, उसकी पूजा का विधान प्रचलित किया। अपने दशाब्दियों के साधनानुभव को आधार बनाकर उन्होंने वयःक्रम के अनुसार कुमारी-कन्या के देवी-स्वरूप—शक्ति और पूजन-फल की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने सप्रमाण सिद्ध करके दिखा दिया कि ब्राह्मण-कन्या किस अवस्था में किस देवी की प्रभाव-शक्ति का रूप होती है और उसकी सेवा-पूजा से कैसा फल प्राप्त होता है। उन्होंने यह भी बताया कि जैसे दुर्गाजी के प्रमुख नौ स्वरूप हैं, वैसे ही कुमारी-कन्या भी 2 वर्ष की आयु से लेकर 10 वर्ष की आयु तक के नौ वर्षों में प्रतिवर्ष दुर्गाजी का एक नया स्वरूप प्रभाव अर्जित करती रहती हैं। अतः जिस देवी की, नवदुर्गा के जिस अवतार की, उपासना करनी हो, उसी वयःक्रम की कुमारी का पूजन करना चाहिए। साधक को तदनुसार ही फल प्राप्त होगा। किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि जो भी ब्राह्मण-कन्या पूजा के निमित्त निश्चित की जाय, वह सर्वथा निर्दोष होनी चाहिए। किसी प्रकार का अमङ्गल-जनक चिह्न-लक्षण उसमें न पाया जाता हो। हीनाङ्ग, विकलाङ्ग, अधिकाङ्ग, चर्मरोग-ग्रस्त, कुष्ठादि रोगी से पीड़ित, फोड़ा-फुन्सी, चोट-घाव के कारण असमर्थ, नेत्र-दोषों (वक्र-दृष्टि, कानी, अन्धी, दुष्ट या भयानक नेत्रों वाली) से आक्रान्त, कुरूप, विद्रूप, कुब्ज या अन्य किसी शारीरिक-मानसिक विकार से पीड़ित, चोर, लालची, कलहकारिणी, अस्थिर-चित्त, मिर्गी, मूर्च्छादि से पीड़ित, तोतली, मुँहफट, अस्पष्ट या कर्कश-स्वर वाली, उद्भ्रान्त, विक्षिप्त अथवा ऐसे किसी अन्य विकार से ग्रस्त बालिका को कुमारी-पूजन के लिए नहीं चुनना चाहिए। जो भी ब्राह्मण-कन्या, पूजा के निमित्त चुनें, उसमें इन गुणों को अवश्य देख लें कि वह कन्या सुन्दर, सभ्य, शान्त,सौम्य-स्वभाव, कुलीन ब्राह्मण-परिवार की, शरीर से निर्दोष, रोग-व्याधि से मुक्त और रूप-रेखा में देवी-जैसी सात्त्विता से युक्त हो। वाञ्छित-कन्या मिल जाने पर उसकी पूजा करनी चाहिए।

वय क्रमानुसार कुमारी के रूप—

वयःक्रम के अनुसार 2 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक की कन्या में प्रति-वर्ष इन देवियों की नूतन प्रभाव-शक्ति निहित होती रहती है, इसी प्रभाव-क्रम के अनुसार उस वय की कन्या को उसी देवी का प्रतिरूप माना जाता है :—

1. द्विवर्षीय कन्या — इसमें कुमारी (कौमारी) देवी की शक्ति निहित रहती है। इस कन्या को 'कौमारी' रूप मानकर पूजना चाहिए। 'कौमारी' भी नवदुर्गा का एक रूप है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. त्रिवर्षीया कन्या	त्रिमूर्त्ति कहलाती है।
3. चतुर्वर्षीया कन्या	कल्याणी देवी
4. पञ्चवर्षीया कन्या	रोहिणी देवी
5. षट्वर्षीया कन्या	कालिका देवी
6. सप्तवर्षीया कन्या	चण्डिका देवी
7. अष्टवर्षीया कन्या	शाम्भवी देवी
8. नववर्षीया कन्या	दुर्गाजी
9. दशवर्षीया कन्या	सुभद्रा देवी

कुमारी-पूजन का प्रभाव—

प्रत्येक साधक की अपनी कोई एक लालसा होती है। किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति, उद्देश्य की पूर्त्ति, अभीष्ट की सिद्धि से लिए ही वह देवोपासना करता है। निष्काम-साधना की बात कोरी आत्म-प्रवञ्चना है। कुछ न कुछ कामना प्रकट या अप्रत्यक्ष रूप में, सब में विद्यमान रहती है। कुमारी-पूजन में भी साधक अपने किसी मनोरथ की पूर्त्ति से ही प्रेरित होते हैं। यहाँ कुमारी के प्रत्येक रूप का पूजन-प्रभाव क्रमशः वर्णित है। पाठक अपनी आवश्यकतानुसार उपयुक्त वय की कुमारी का पूजन करके लाभ उठा सकते हैं। यह निश्चित है कि एक सङ्कल्प की पूर्त्ति करते हुए यदि 9 दिन, 18 दिन, 21 दिन अथवा 27 दिनों तक लगातार प्रतिदिन कुमारी-पूजा की जाये तो उसका चमत्कारी फल प्राप्त होता है। परन्तु यह सफलता तभी प्राप्त होती है, जब पूजन-क्रिया निर्विघ्न पूरी हो जाये। वैसे, यह कोई कठिन साधना नहीं है। श्रद्धा, धैर्य, अवधान और पूर्ण-व्यवस्था करके कोई भी साधक उसे सम्पन्न कर सकता है। हाँ, तन-मन का संयम आवश्यक है, अतः उसके प्रति सजग रहना चाहिए। किसी भी प्रकार की क्रियात्मक, वैचारिक अथवा व्यवहारगत अपवित्रता न आने पाये, सङ्कल्प के अनुसार सारी पूजन-क्रिया होती रहे, उसमें विघ्न-व्यतिक्रम न होने पाये, बस यही पर्याप्त है। विभिन्न कामनाओं की पूर्त्ति के लिए वयःक्रम से इस प्रकार पूजन करना चाहिए :—

निर्धनता-निवारण—इस कामना की पूर्त्ति के लिए कौमारीदेवी अर्थात् द्विवर्षीय बालिका की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। मनीषियों के मतानुसार **'कुमारीदेवी'** की पूजा से साधक का दुःख-दारिद्रय दूर हो जाता है। उसके शत्रु परास्त होकर शान्त हो जाते हैं। साथ ही, साधक की शारीरिक-मानसिक शक्ति, आयु और बल-पराक्रम की वृद्धि होती है। धन-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धान्य की वृद्धि के लिए कुमारिका अर्थात् दो वर्षीया कन्या की पूजा करना परम लाभदायक होती है।

धन-धान्य, कुल-परिवार—यदि किसी साधक को धन-धान्य की लालसा हो, वह अपने कुटुम्ब-परिवार की वृद्धि चाहता हो, तो उसे त्रिवर्षीया कन्या **'त्रिमूर्त्ति'** की पूजा करनी चाहिए। त्रिमूर्त्तिदेवी की पूजा से घर में धन-धान्य तथा पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि होती है।

राज-सम्मान तथा विद्या-विजय— सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा हो, विजय (वरीयता) मिले, राज्याधिकारियों एवं राज-कर्मचारियों में मान हो, भौतिक-सुख प्राप्त होता रहे और विद्या-बुद्धि की भी वृद्धि होती रहे। इन कामनाओं की पूर्त्ति में **'कल्याणी देवी'** की उपासना लाभकारी होती है। कल्याणी देवी की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी चतुर्वर्षीया ब्राह्मण-कन्या का पूजन करना चाहिए।

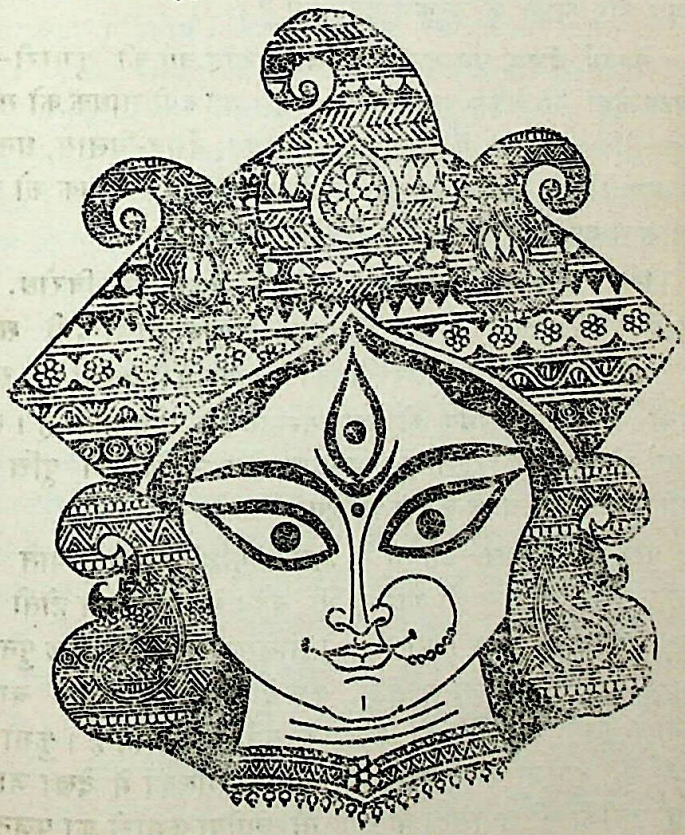

कौमारी देवी

आरोग्य—समस्त प्रकार के शारीरिक, मानसिक रोग-विकारों से मुक्त होकर स्वस्थ, सबल और प्रसन्न-जीवन व्यतीत करने के लिए पञ्च-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वर्षीया कुमारी का पूजन करना चाहिए। यह **'रोहिणी देवी'** का रूप होती है और अपने साधक की समस्त कामनाएं पूरी करती है।

शत्रुनाश—मनुष्य के जीवन में शत्रु का अस्तित्व बहुत ही पीड़ा-दायक, सन्त्रासकारी और दुखद होता है। उससे मुक्ति पाने के लिए—**'कालिकाजी'** की उपासना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। कालिकाजी की उपस्थिति 6 वर्ष की वालिका में मानी गयी है। अतः शत्रुभय-निवारण के लिए—साधक को चाहिए कि वह 6 वर्ष की कुमारी-कन्या को कालिकाजी का प्रतिरूप मानकर उसकी पूजा करे। नियमित रूप में पूजा करते हुए, यदि सङ्कल्प की अवधि पूरी करली जाये, तो यह साधना अवश्य ही अपना प्रभाव दिखाती है। विना किसी युद्ध और अन्य भौतिक-प्रयास के, साधक के शत्रुओं का दमन हो जाता है। कालिकाजी की कृपा उन्हें निस्तेज, पराभूत और साधक के अनुकूल बना देती है।

ऐश्वर्य, वैभव, धन-समृद्धि के लिए—सात वर्ष की कुमारी-कन्या में **'चण्डिकादेवी'** की शक्ति समाहित रहती है। यह देवी साधक को संसार के समस्त भौतिक-सुख देने में सक्षम होती है। अतः वैभव-विलास, धन-सम्पदा और अन्य भौतिक (राजसिक) उपलब्धियों के लिए—साधक को चण्डिका देवी (सप्त वर्षीया कुमारी) की पूजा करनी चाहिए।

विजय और राज-सम्मान—किसी भी प्रकार का विरोध, विद्रोह, युद्ध अथवा प्रतिद्वन्द्विता हो, उसमें विजय दिलाने वाली देवी **'शाम्भवी'** अपने उपासक पर कृपालु होकर उसकी कामना पूरी करती है। साथ ही, इस देवी की कृपा से साधक को राज-सम्मान भी प्राप्त होता है। यह देवी आठ वर्ष की कन्या में रहती है, अतः उपरोक्त उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए ऐसी ही कुमारी का चयन करना चाहिए।

पारलौकिक-सुख—जीवन में सुख, समृद्धि, सफलता पाते रहने के पश्चात् परलोक में सुख की कामना भी बहुत से लोगों को होती है, कुछ लोग आवागमन से मुक्ति (मोक्ष) की लालसा रखते हैं, कुछ पुनर्जन्म में सुखमय-जीवन की कल्पना करते हैं, कुछ देवलोक में निवास चाहते हैं। इन सभी के लिए **'दुर्गाजी'** की उपासना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। कुमारी-पूजा के सन्दर्भ में, दुर्गाजी का प्रतिरूप नव-वर्षीया बालिका में देखा जा सकता है। अतः दुर्गाजी की उपासना के लिए नौ वर्षीया कुमारी का पूजन करना चाहिए। यह उपासना उपर्युक्त सभी फल प्रदान करती है।

मनोकामना पूर्त्ति—मनुष्य की प्रकृति है कि उसके मन में समय-समय पर विभिन्न कामनाएं उठती रहती हैं। समस्त प्रकार की सद्इच्छाओं

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की पूर्त्ति हेतु दश वर्षीया बालिका 'सुभद्रादेवी' की पूजा करनी चाहिए। सुभद्रादेवी—कुमारी-क्रम में अन्तिम देवी मानी गयी हैं।

कुमारी पूजन-विधि—

कुमारी-पूजा के लिए, सर्वप्रथम अपने उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त वय की कुमारी-कन्या को सादर आमन्त्रित करें। इसे इष्टदेवी का रूप मानकर घर लायें। यदि वह अपने घर से स्नान करके आये तो उत्तम ही है, अन्यथा घर में कहीं एकान्त में उसके स्नान की व्यवस्था करदें। स्नान के पश्चात् वह बालिका शुद्ध-स्वच्छ वस्त्र पहिने। यदि उसके पास नहीं हैं, तो साधक स्वयं इसका प्रबन्ध करे। स्नान के बाद वह कन्या वस्त्र धारण करे। साधक स्वयं भी स्नान द्वारा शुद्ध होकर पहले से व्यवस्थित पूजा-स्थल पर बैठे। कन्या को सामने आदरपूर्वक उचित आसन पर (कोई नया वस्त्र बिछाकर) बिठायें। तदुपरान्त उसे देवी-प्रतिमा मानकर, उस पर शुद्ध जल छिड़कें, सिन्दूर का टीका माथे पर लगा दें, फूल चढ़ाकर, धूप-दीप दें। इसके पश्चात् उसे अपनी सामर्थ्यानुसार उत्तम भोजन करायें और दक्षिणा दें। इस समस्त क्रियाकलाप में इस देवी का मन्त्र मन ही मन जपते रहें। दक्षिणा देने के उपरान्त उस कुमारी के सामने बैठकर कम से कम एक या पाँच माला इसी देवी का मन्त्र जपें। फिर कुमारी को प्रणाम करके, मन ही मन त्रुटियों के प्रति क्षमा-याचना करते हुए विदा करें। यह एक दिन की (प्रथम दिन की) पूजन-विधि है। पहले से सङ्कल्प कर लेना चाहिए कि मैं इतने दिनों तक नियमित रूप से कुमारी-पूजन करूँगा। इसके बाद पूर्वोक्त विधि से पूजन प्रारम्भ करें। यही किया, यही क्रम—उतने दिनों तक (सङ्कल्प के अनुसार 5, 7, 9, 11, 18 या 21 दिनों तक) करते रहना चाहिए। वस्त्र देना रोज सम्भव नहीं होगा, अतः प्रथम दिन ही दे दें, साथही उसे समझा दें कि वह नित्य स्नान करके, धुले हुए वस्त्र पहिनकर आया करे। यह भी हो सकता है कि वह प्रारम्भ से अन्तिम दिन तक अपने घर के ही कपड़े (धुले-स्वच्छ) पहिनकर आती रहे, और साधक पूजा-समाप्ति के दिन उसे नये वस्त्र अर्पित करे, (यही उचित रहता है)। आखिरी दिन का भोजन भी कुछ विशिष्ट रहना चाहिए तथा दक्षिणा भी कुछ अधिक हो। अन्तिम दिन बालिका को भोजन कराने के पूर्व ही—उसी मन्त्र से 51 आहुतियाँ (या 108) देकर हवन करना चाहिए। हवनोपरान्त बालिका को भोजन करायें और सम्भव हो तो 2-4 परिवारी-जनों व मित्रों को भी आमन्त्रित करें।

हवन-सामग्री—कुमारी-पूजन में अन्तिम दिन पूजा-समापन के समय,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
हवन का विधान है। हवन के मन्त्रोच्चार में अन्तर है। प्रत्येक देवी का मन्त्र अलग-अलग है। परन्तु हवन-सामग्री सबके लिए एक ही प्रयुक्त होती है। नीचे दो प्रकार की हवन-सामग्री लिखी जा रही हैं, साधक अपनी सुविधा-सामर्थ्य के अनुसार कोई भी एक प्रयुक्त कर सकते हैं :—

साधारण हवन सामग्री—बाजार में मिलने वाली किसी अच्छी संस्था की हवन-सामग्री लायें। उसमें तिल (काला), जौ, चावल, शक्कर और घी मिला दें। यह उत्तम हवन-सामग्री है। इसी से वाञ्छित संख्या में आहुतियाँ देनी चाहिए।

विशेष हवन-सामग्री—जिसे सुविधा हो, जो प्राप्त कर सके, ऐसे साधक के लिए उचित होगा कि वह हवन-सामग्री के लिए,ये वस्तुएं लाये—तिल, जौ, चावल, हवन-सामग्री (देवदारु धूप से बनी हुई) पलाश की लकड़ी, बेल का फल, लाल चन्दन, गूगल, सरसों, सुपारी, धान का लावा, दूध, सामयिक मीठे फल, फूल और घी।

मन्त्र—

कुमारी-पूजा में जप के लिए तथा हवन के लिए—प्रत्येक देवी के अलग-अलग मन्त्र हैं। आवश्यकतानुसार इन्हीं को जपना चाहिए। जप की संख्या और पूजा के दिन पहले से निश्चित करलें। उस सङ्कल्प का पालन अनिवार्य होता हैं। क्रम-भङ्ग अथवा सङ्कल्प के विपरीत आचरण करने से साधना खण्डित हो जाती है। अतः पूजा में मानसिक-सन्तुलन, उत्साह, आस्था और संयम बनाये रहना चाहिए। प्रत्येक कुमारी देवी का मन्त्र इस प्रकार जपना चाहिए।

1. **कुमारी**—ॐ कुमारिकायै नमः। अथवा—ॐ कौमार्यै नमः।
2. **त्रिमूर्त्ति**—ॐ त्रिमूर्तयै नमः।
3. **कल्याणी**—ॐ कल्याण्यै नमः।
4. **रोहिणी**—ॐ रोहिण्यै नमः।
5. **कालिका**—ॐ कालिकायै नमः।
6. **चण्डिका**—ॐ चण्डिकायै नमः। अथवा ॐ नमश्चण्डिकायै नमः।
7. **शाम्भवी**—ॐ शाम्भव्यै नमः।
8. **दुर्गाजी**—ॐ दुर्गायै नमः।
9. **सुभद्रा**—ॐ सुभद्रायै नमः।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि स्त्रियों को 'ॐ' का उच्चारण नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति में महिला-साधिकायें केवल मूल-मन्त्र का ही जप करें, 'ॐ' को छोड़ दें।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

9 | श्री दुर्गासप्तशती : संक्षिप्त कथा

भारतीय पौराणिक-सन्दर्भ में 'दुर्गा सप्तशती' एक प्रसिद्ध नाम है। वस्तुत यह देवी दुर्गाजी के चरित्रों का श्लोकबद्ध सङ्कलन हैं। इस आख्यान में 700 श्लोक हैं, अतः इसे 'सप्तशती' कहा जाता है। दुर्गाजी के इस आख्यान में कई एक उपाख्यान भी हैं। मार्कण्डेय-पुराण में सावर्णिक-मन्वन्तर के अन्तर्गत दुर्गाजी की लीला-कथा 13 अध्यायों में वर्णित है। प्रत्येक आख्यान स्वयं में एक अद्भुत चरित्र, दुर्गाजी की अद्भुत लीला समाहित किये है। एक अध्याय में एक आख्यान, इस प्रकार तेरह अध्यायों में तेरह आख्यानों के सङ्कलन को 'दुर्गा सप्तशती कथा' का रूप दिया गया है। आज बाजार में 'दुर्गा सप्तशती' नाम से लाखों पुस्तकें उपलब्ध हैं। मूल कथा संस्कृत में है। प्रकाशकों ने उसे 'भाषा-टीका' का विशेष रूप देकर मूल संस्कृत भाषा सहित हिन्दी में अर्थ देकर प्रकाशित किया है। यह बात अलग है कि भ्रम अथवा अज्ञानवश उन पुस्तकों में मुद्रण सम्बन्धी बहुत-सी अशुद्धियाँ आ गयी हैं, जिनसे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। शुद्धता की दृष्टि से 'हिन्दी सेवा सदन, बैरागपुरा, मथुरा' द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्रेष्ठ है। उसे पढ़कर सामान्य व्यक्ति भी दुर्गाजी के चरित्रों से परिचित हो सकता है। इस कथा (दुर्गा सप्तशती) का कथा-सार अध्याय-क्रम से प्रस्तुत है। इसे पढ़कर साधारण स्तर के पाठक भी श्री दुर्गाजी की लीलाओं का रसास्वादन कर सकेंगे।

प्रथम अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघां शूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम्॥
नीलाश्मद्युतिभाष्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमजजो हन्तुं मधुं कैटभाम्॥

कथा-सार—

सूर्य के पुत्र सावर्णि, जिन्हें 'आठवाँ मनु' भी कहा जाता है, उनकी कथा सुनाते हुए मार्कण्डेयजी ने कहा कि पूर्वकाल में स्वारोचिष मन्वन्तर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में 'सुरथ' नाम के एक राजा थे। चैत्रवंश में उत्पन्न राजा सुरथ का समस्त भूमण्डल पर अधिकार था। वह अपनी प्रजा का पालन धर्मपूर्वक करते थे और प्रजा को पुत्र के समान प्यार करते थे। फिर भी 'कोल नगर' को नष्ट करने वाले क्षत्रिय उनके दुश्मन हो गये। राजा सुरथ दण्ड-नीतिज्ञ थे. उन्होंने क्षत्रियों से संग्राम किया। भीषण संघर्ष के बाद भी क्षत्रिय युद्ध में विजयी हुए और राजा सुरथ हारने के बाद अपने नगर में वापिस आ गये। इस युद्ध के बाद भूमण्डल से उनका अधिकार समाप्त हो गया। इसके बाद शत्रुओं ने उन पर पुनः आक्रमण किया।

राजा की शक्ति क्षीण हो जाने के कारण उनके मन्त्रियों ने षड़यन्त्र करके राजकीय-सेना को अपने पक्ष में कर लिया और सम्पूर्ण कोष हथिया लिया। राजा सुरथ का सम्पूर्ण वैभव समाप्त हो गया था, इसी क्षोभ के कारण एक दिन वह शिकार खेलने के बहाने अकेले ही एक घने जङ्गल में चले गये।

उसी जङ्गल में मेधा ऋषि का आश्रम था, जहाँ उनके तेज के कारण हिंसक-पशु भी हिंसा-वृत्ति छोड़कर, शान्त-भाव से रहते थे। मुनि के साथ आश्रम में उनके अनेकों शिष्य भी थे। राजा जब आश्रम में पहुँचे तो मुनि ने उनका स्वागत किया। राजा सुरथ काफी समय तक मुनि के आश्रम में रहे।

किन्तु नगर की चिन्ता उन्हें बराबर बनी रहती थी। वह सोचते—पता नहीं, मन्त्री आदि नगरवासियों की रक्षा करते होंगे या नहीं ? एक दिन उन्होंने वहाँ पर एक वैश्य को देखा। उन्होंने उससे पूछा—'हे भाई ! आप कौन हैं और यहाँ क्यों आये हैं ? आप चिन्तित तथा शोकग्रस्त प्रतीत होते हैं।

राजा सुरथ की प्रेमपूर्ण बातें सुनकर वैश्य बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा—'मैं एक धनी वैश्य-परिवार का हूँ तथा मेरा नाम 'समाधि' है। मेरी स्त्री तथा पुत्रों ने मेरा धन हड़पकर मुझे घर से निकाल दिया है। विश्वसनीय परिवार वालों के इस तरह के कुकृत्यों से दुःखी होकर मैं इस जङ्गल में आ गया हूँ। किन्तु यहाँ आकर भी मुझे शान्ति नहीं मिलती। अब भी मैं अपने पुत्रों तथा स्त्री की कुशलता के लिए चिन्तित हूँ।

उसकी इस तरह की बातों को सुनकर राजा ने कहा—'जिन लोभी स्त्री-पुत्रों ने धन के कारण तुम्हें घर से निकाल दिया था, उनके प्रति तुम्हारे मन में इतना मोह क्यों है ?'

राजा सुरथ की बात सुनकर वैश्य ने कहा कि—'आप जो कुछ भी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कह रहे हैं—वह ठीक है,परन्तु क्या करूँ—मेरा मन नहीं मानता। जिन्होंने पिता-पति तथा आत्मीयता को छोड़कर, मुझे घर छोड़ने को विवश कर दिया है, उन गुणहीन परिजनों के प्रति इतना मोह क्यों है ? यह मैं नहीं समझ पा रहा है।'

मार्कण्डेयजी कहते हैं कि उसकी बातें सुनकर राजा सुरथ, उसे साथ लेकर महामुनि के पास गया। मुनि को वैश्य की कथा बताते हुए राजा ने कहा—'मुनिवर ! मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ। जो राज्य आज मेरे अधिकार से बाहर है, उसके प्रति मेरे मन से ममता क्यों नहीं जाती ? जो मेरा नहीं है, उसके लिए अज्ञानी की तरह दुःखी क्यों होता हूँ ? यह वैश्य भी मेरी ही तरह अपमानित होकर आया है। स्वजनों ने इसे छोड़ दिया है, फिर भी यह उनके प्रति स्नेह रखता है। प्रत्यक्ष दोष देखने के बाद भी विवेकशून्य-पुरुष की भाँति मुझमें और इसमें मूढ़ता प्रत्यक्ष मिखाई देती है।'

राजा सुरथ की बात सुनकर ऋषि बोले—'विषय-मार्ग का ज्ञान सभी जीवों को रहता है, किन्तु यह विषय अलग-अलग रहते हैं। कुछ प्राणी दिन में नहीं देखते, तो कुछ रात में नहीं। मनुष्य और पशु-पक्षियों की समझ एक-जैसी रहती है। पक्षी मोह के कारण ही स्वयं भूखे रहकर भी बच्चों की चोंच में दाने डालते है, जब कि मनुष्य लोभ के कारण, बदला लेने की आशा से अपने बच्चों का पालन-पोषण करता है। भगवान् विष्णु की योगनिद्रारूपी भगवती महामाया सम्पूर्ण विश्व को मोह के जाल में जकड़े हुए हैं। वह ज्ञानियों के चित्त को भी मोहपाश में जकड़ लेती है। वह सभी ईश्वरों की अधीश्वरी हैं, वही जगत् की रचना करती है तथा मुक्ति का वरदान देती हैं।'

देवी भगवती के बारे में जानने के इच्छुक राजा ने मुनि से पूछा—'आप जिन्हें 'महामाया' कहते हैं, वह देवी कौन हैं ? उनका आविर्भाव कैसे हुआ ? उनका क्या प्रभाव है ? आप उनके सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन करें।'

ऋषि ने कहा—'हे राजन् ! यह सम्पूर्ण जगत् उन्हीं देवी का स्वरूप है तथा उन्होंने उसे अपने में व्याप्त कर रखा है। उनका आविर्भाव कई रूप से हुआ है। यद्यपि वह नित्य एवं अजन्मा हैं, फिर भी जब भी देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए प्रकट होती हैं, तब 'उत्पन्न हुई' कही जाती हैं।'

जब सम्पूर्ण जगत् जल-मग्न था और भगवान् विष्णु शेष-शैय्या पर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निद्रा-मग्न थे, उस समय उनके कानों के मैल से दो असुरों का जन्म हुआ, जिनका नाम 'मधु' एवं 'कैटभ' था। वे दोनों ब्रह्माजी को मारने के लिए तैयार थे। भगवान् विष्णु को सोया हुआ जानकर ब्रह्माजी ने योगनिद्रा की स्तुति की, जो इस प्रकार है।'—

'हे देवी ! तुम्हीं स्वाहा, तुम्हीं स्वधा और तुम्हीं वषट्कार हो। सम्पूर्ण स्वर तुम्हारे स्वरूप हैं। तुम्हीं जीवन-दायिनी 'अमृत' हो। 'ॐ' में तुम्हीं स्थित हो। हे देवि ! तुम्हीं सन्ध्या, सावित्री, परम जननी एवं विश्व-ब्रह्माण्ड को धारण करने वाली हो। तुम्हीं जगत् की सृष्टि, पालन करने वाली तथा हनन करने वाली हो। तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महा मोहरूपा, महारूपा तथा महासुरी हो। खड्ग, गदा, चक्र, शूल, शंख, धनुष, वाण, भुशुण्डी एवं परिघ धारण करने वाली देवी तुम अत्यधिक सुन्दरी हो। हे देवि ! जिस तरह तुमने शङ्कर एवं विष्णु को मोहरूपी निद्रा में सुला दिया है, उसी तरह इन असुरों को भी मोह में डाल दो और भगवान् विष्णु को जगाकर, इन्हें मारने की बुद्धि उत्पन्न कर दो।'

ऋषि कहते हैं—'जब ब्रह्माजी ने मधु-कैटभ को मारने के लिए, भगवान् विष्णु को जगाने के लिए योगनिद्रा की स्तुति की तो वह विष्णु भगवान् के शरीर से निकलकर ब्रह्माजी के सामने सशरीर खड़ी हो गयीं। जागने के बाद भगवान् विष्णु ने दोनों असुरों को देखा। वह अत्यन्त बल-वान् एवं पराक्रमी थे तथा क्रोध से लाल आँखें किये, वे ब्रह्माजी को खा जाने की कोशिश कर रहे थे। उठने के बाद भगवान् विष्णु ने 50,000 वर्षों तक लगातार उन असुरों से बाहु-युद्ध किया। महामाया ने उन्हें मोह में डाल दिया, इसलिए वह भगवान् विष्णु से कहने लगे—'हम तुम्हारी वीरता से बहुत प्रसन्न हैं, तुम हम लोगों से कोई वर माँगो !'

भगवान् ने उनसे कहा—'इस समय मैं तुमसे केवल एक वर माँगना चाहता हूँ कि तुम दोनों मेरे हाथ से मारे जाओ।'

उन्होंने कहा—'जिस स्थान पर पानी न हो, ऐसे सूखे स्थान पर मुझे मार दो।'

यह सुनकर भगवान विष्णु ने 'तथास्तु' कहकर शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये और दोनों असुरों को अपनी जाँघ पर रखकर उन दोनों के मस्तक चक्र से काट डाले।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्वितीय अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

ॐ अक्षसुक्ररशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुषकुण्डिकां ।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टा सुराभाजनम् ॥
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां ।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोज स्थिताम् ॥

कथा-सार—

देवी भगवती का वर्णन करते हुए ऋषि कहते है कि 'पूर्वकाल में देवताओं और असुरों में 100 वर्षों तक घोर युद्ध हुआ। उसमें असुरों का स्वामी महिषासुर तथा देवताओं के नायक देवराज इन्द्र थे। इस युद्ध में देवताओं की पराजय हुई। देवताओं को हराकर, महिषासुर इन्द्र बन बैठा। तब पराजित देवता ब्रह्माजी को साथ लेकर, भगवान शङ्कर एवं विष्णु के पास गये और अपनी पराजय का वृत्तान्त सुनाकर उन्होंने भगवान से कहा—'हे भगवन् ! महिषासुर ने हम सभी देवताओं के अधिकार' छीन लिए हैं और हम सबका अधिष्ठाता बन बैठा है। उसने सभी देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है, इसलिए वे पृथ्वी पर मनुष्यों की तरह घूम रहे हैं। हम सब आपकी शरण में हैं, अब आप उसे मारने का कोई उपाय करें।'

देवताओं की इस तरह की बातें सुकर भगवान विष्णु एवं शङ्कर को उस असुर पर बहुत क्रोध आया। अत्यन्त क्रोध में आ जाने पर भगवान विष्णु के मुख से एक तेज प्रकाशपुञ्ज निकला। इसी तरह शङ्कर, ब्रह्मा, तथा इन्द्र आदि सभी देवताओं के मुख से इसी प्रकार का तेज निकला। सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से निकला हुआ तेज एक नारी की आकृति में बदल गया, जिसका प्रकाश तीनों लोकों में फैला हुआ था।

भगवान शङ्कर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ, यमराज के तेज से सिर के बाल उग आये, भगवान विष्णु के तेज से उस देवी की भुजाएं उत्पन्न हुईं, चन्द्रमा के तेज से स्तन, इन्द्र के तेज से मध्य-भाग, वरुण के तेज से जाँघें और पिंडली, ब्रह्मा के तेज से दोनों पैर, सूर्य के तेज से पैरों की अँगुलियाँ,पृथ्वी के तेज से नितम्ब-भाग तथा अष्टवसुओं के तेज से हाथों की उँगलियाँ और कुबेर के तेज से नासिका की उत्पत्ति हुई। प्रजापति के तेज से देवी के दाँत, अग्नि के तेज से नेत्र, सन्ध्या तथा वायु

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के तेज से कानों की उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार अन्य देवताओं के तेज से देवी के सम्पूर्ण शरीर का निर्माण हुआ। इस प्रकार की तेजोमय देवी को देखकर सभी देवता बहुत प्रसन्न हुए।

पिनाकधारी भगवान शङ्कर ने अपने शूल से एक शूल निकाल कर उन्हें दिया, फिर भगवान विष्णु ने उन्हें एक चक्र दिया। वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, वायु ने धनुष-वाण, इन्द्र ने वज्र एवं घण्टा, यमराज ने दण्ड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिकाक्ष की माला तथा ब्रह्माजी ने कमण्डलु देवी को भेंट किया। सूर्यदेव ने देवी को अपना तेज, काल ने चमकती हुई ढाल एवं तलवार, समुद्र ने हार एवं कभी मलिन न होने वाले दो दिव्य वस्त्र, चूड़ामणि, दो कुण्डल, कड़े, अर्द्ध-चन्द्र, बाहुओं के लिए केयूर, नूपुर, हँसली, उँगुलियों के लिए रत्न-जटित अँगूठियाँ अर्पण कीं। विश्वकर्मा ने फरसा, अनेक अस्त्र, अभेद्य-कवच तथा कभी न कुम्हलाने वाले कमलों की माला दी। जलधि ने सुन्दर कमल का फूल, हिमालय ने सवारी के लिए सिंह तथा भाँति-भाँति के रत्न, कुबेर ने शहद से भरा पान-पात्र, नागों के राजा शेषजी ने मणियों से विभूषित नाग-हार अर्पण किया। इसी प्रकार अन्य देवताओं ने आभूषण एवं अस्त्र-शस्त्र देकर भगवती देवी का सम्मान किया।

विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों एवं आभूषणों से सुसज्जित होने के बाद देवी ने अत्यन्त उच्च स्वर में सिंहनाद किया, जिसकी प्रतिध्वनि से सम्पूर्ण विश्व से हलचल मच गई और समुद्र तक काँप उठा। पृथ्वी डोलने लगी और पर्वत तक हिलने लगे।

सम्पूर्ण विश्व की यह हालत देखकर महिषासुर की सेना अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर उस सिंहनाद की ओर दौड़ी। आगे बढ़ने पर उन्हें देवी भगवती के दर्शन हुए। जिनके प्रभाव से तीनों लोक प्रकाशित थे तथा पृथ्वी उनके भार से दबी जा रही थी। नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से देवी और असुरों में युद्ध प्रारम्भ हो गया। चिक्षुर नामक राक्षसी-सेना-नायक ने सबसे पहले देवी के साथ युद्ध प्रारम्भ किया। चतुरङ्गिनी सेना को साथ लेकर, 'चामर' नामक दैत्य, सात हजार रथियों के साथ 'महाहनु' नामक दैत्य ने भी युद्ध प्रारम्भ किया। जिसके रोएं तलवार के समान तीखे थे, वह 'असिलोमा' नामक दैत्य 5 करोड़ रथियों के साथ युद्ध-क्षेत्र में आ गया। साठ लाख रथियों के साथ बाष्कल, हाथी एवं घुड़सवार दैत्यों के साथ परिवरित, 5 अरब रथियों के साथ 'बिड़ाल' नामक दैत्य भी युद्ध के लिए वहाँ आ गये थे। इनके अतिरिक्त कई अन्य दैत्य भी भगवती के साथ युद्ध कर रहे थे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके प्रहारों से देवी ने क्रोध में भरकर उन सब दैत्यों के अस्त्र-शस्त्र काट डाले। देवता एवं ऋषि-मुनि भगवती की स्तुति तथा प्रार्थना कर रहे थे। देवी का वाहन 'सिंह' भी क्रोध में भरकर असुरों की सेना में विचरण कर रहा था। दैत्यों से युद्ध करते समय देवी ने जितने भी उच्छ्वास छोड़े, उतने ही गणों के रूप में प्रकट हो गये। वे सभी गण विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से असुरों का संहार करने लगे। देवी ने स्वयं गदा, खड्ग तथा त्रिशूल से महादैत्यों का संहार कर डाला। बहुत से दैत्य मूर्च्छित होकर धरती पर गिर गये और अन्य को उन्होंने अपने पाश में बाँधकर पृथ्वी पर घसीटा। कितने ही दैत्यों की बाँहें कट गयीं, कितनों के मस्तक छिन्न-भिन्न हो गये। कितने ही दैत्यों को देवी ने दो टुकड़ों में चीर डाला। कुछ दैत्य मस्तक कट जाने पर केवल धड़ के साथ देवी से युद्ध कर रहे थे। रण-स्थल लाशों से इस तरह पट गया था कि वहाँ चलना मुश्किल था। रक्तपात के कारण वहाँ पर खून की नाली-सी बह रही थीं।

देवी जगदम्बा ने क्षणभर में ही असुरों की विशाल सेना का संहार कर दिया था। देवी के वाहन शेर- एवं गणों ने भी महादैत्यों के साथ भयङ्कर युद्ध किया।

तृतीय अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

ॐ उद्यद्भानु सहस्रकान्ति मरुणक्षौमां शिरोमालिकां।
रक्तलिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं।
देवीं बद्ध हिमांशुरत्नमुकुटां वन्देरविन्दस्थिताम्॥

कथा-सार—

ऋषि कहते हैं—'दैत्यों की सेना का संहार होते देखकर, दैत्य-सेनापति 'चिक्षुर' क्रोध में भरकर देवी से युद्ध करने को आगे बढ़ा। वह पानी की तेज धार के समान वाणों की वर्षा करने लगा। लेकिन देवी ने अपने वाणों से उसके वाणों को काटकर, घोड़ों तथा सारथियों को भी काट डाला। साथ ही उसके धनुष एवं ऊँची ध्वजा को भी काट गिराया। धनुष कट जाने पर उन्होंने उसके अङ्गों को वाणों से बेध दिया। क्रोध में भरकर वह महादैत्य ढाल-तलवार लेकर देवी की ओर दौड़ा। तीखी तलवार से उसने सिंह के मस्तक पर प्रहार कर, देवी की बायीं भुजा पर भी प्रहार किया। तब देवी ने शूल के प्रहार से चिक्षुर को मार गिराया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'चिक्षुर' के मारे जाने के बाद महादैत्य 'चामर' हाथी पर चढ़कर देवी से युद्ध करने के लिए आया। उसने देवी पर शक्ति का प्रहार किया, किन्तु देवी ने अपनी हुङ्कार से उसकी शक्ति छिन्न-भिन्न कर दी। इसके बाद उसने देवी पर शूल चलाया, किन्तु देवी ने उसे भी काट दिया। उसी समय देवी के सिंह ने हाथी के मस्तक पर चढ़ाई करदी और दैत्य के साथ बाहु-युद्ध करने लगा। वे दोनों लड़ते-लड़ते हाथी से पृथ्वी पर आ गये। इसके बाद शेर ने पञ्जों से चामर का सिर धड़ से अलग कर दिया। इसी प्रकार अन्य दैत्यों को भी देवी ने मार दिया। उदग्र, उद्धत, कपाल, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु नामक महादैत्य देवी के द्वारा विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से मारे गये।

इस प्रकार अपनी सेना का संहार होते देखकर महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण कर लिया और देवी के गणों को परेशान करने लगा। वह किन्हीं के ऊपर खुरों से, कुछ को पूँछ से चोटें पहुँचा कर धराशायी करने लगा। देवी के गणों को गिराने के बाद वह असुर देवी के सिंह की ओर झपटा। यह देखकर देवी भगवती को बहुत क्रोध आया। महापराक्रमी महिषासुर भी क्रोध में भरकर, धरती को अपनी सींगों से तथा खुरों से खोदने लगा। उसने बड़े-बड़े पर्वतों को जड़ से उखाड़ दिया। उसके वेग से धरती भी फटने लगी, तथा समुद्र अपनी सीमा तोड़कर धरती पर फैलने लगा। सींगों के आघात से बादलों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उस महान् दैत्य को अपनी ओर आते देखकर, देवी ने पाश फेंककर बाँध लिया। बँध जाने के कारण उसने भैंसे का रूप त्याग दिया और सिंह के रूप में प्रकट हो गया। जब देवी उसका मस्तक काटने के लिए बढ़ीं तो उसने खड्ग-धारी पुरुष का वेष धारण कर लिया। देवी ने बाणों की वर्षा करके उसकी ढाल-तलवार को बींध डाला। इसके बाद उसने हाथी का रूप धारण कर लिया, तब देवी ने उसकी सूँड़ काट दी। सूँड़ कट जाने के बाद उसने पुनः भैंसे का रूप धारण कर लिया और अपने वेग से सम्पूर्ण लोकों को व्याकुल करने लगा तथा अपनी सींगों से देवी चण्डी के ऊपर पर्वतों को फेंकने लगा। उस समय देवी उसके फेंके पर्वतों को अपने बाणों से चूर्ण करती हुए बोलीं—

'ओ मूर्ख ! मैं जब तक मधु पीती हूँ, तब तक तू गर्ज ले। मेरे हाथ से मारे जाने के बाद देवता भी विजय से खुश होकर गर्जना करेंगे।'

इतना कहकर देवी उछलकर उस महादैत्य पर चढ़ गयीं। फिर अपने पैर से उसे दबाकर उसके गले पर शूल से प्रहार किया। उनके पैर के नीचे दबा होने के बाद भी महिषासुर दूसरे रूप में अपने मुख से बाहर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होने लगा। अभी वह आधे शरीर से ही निकल पाया था कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे रोक दिया। आधा शरीर भिन्न रूप लिए हुए ही वह राक्षस देवी से युद्ध करने लगा। तब देवी ने अपनी तलवार से उसका मस्तक काट दिया।

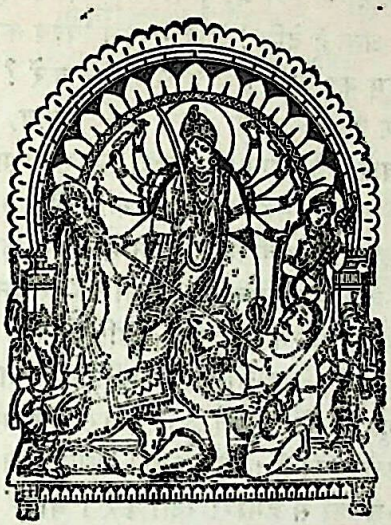

महिषमर्दिनी देवी

उसका मस्तक कटते ही दैत्यों की सारी सेना भय से चिल्लाती हुई भाग गई। दैत्यों की पराजय होते ही देवता प्रसन्न हो गये और महर्षियों के साथ देवी की स्तुति प्रारम्भ कर दी।

चतुर्थ अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

ॐ कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां।
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्॥
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसां पूरयन्तीं।
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृत्तां सेवितां सिद्धिकाम्यैः॥

ऋषि कहते हैं—इस पराक्रमी दुरात्मा असुर तथा उसकी सेना को देवी के द्वारा मार दिये जाने के बाद इन्द्रादिक देवता देवी भगवती की स्तुति करने लगे—

"हे समस्त देवताओं की शक्ति का स्वरूप, माँ भगवती! आपने सम्पूर्ण विश्व को अपनी शक्ति से व्याप्त कर रखा है। हम सभी भक्तिपूर्वक आपको नमस्कार करते हैं। आप हम सबका कल्याण करें। आपके प्रभाव

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एवं बल का वर्णन करने में शेषजी, ब्रह्माजी तथा स्वयं भगवान शङ्करजी भी समर्थ नहीं हैं। आप पुण्यात्माओं के घर में लक्ष्मी रूप में, पापियों के घर में दरिद्रता के रूप में, शुद्ध अन्तःकरण वाले मनुष्यों के हृदय में बुद्धि रूप में, सत्पुरुषों में श्रद्धा के रूप में, कुलीन मनुष्यों के हृदय में लज्जारूप में निवास करती हैं। अतः हे देवि ! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन करती हैं। आपके अद्भुत पराक्रम का वर्णन हम किस प्रकार करें ? आप सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति का कारण हैं। आप में तीनों गुण—सत्त्व, रज एवं तम विद्यमान हैं। आप ही 'स्वाहा' हैं, आप ही 'स्वधा' हैं तथा मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले श्रेष्ठ ज्ञानीजन जिसका अभ्यास करते हैं, वह भी आप ही हैं। हे देवि ! आप प्रसन्न हों। आपके प्रसन्न होने से जगत् का अभ्युदय होता है और आपके क्रोधित होने पर कितने ही कुलों का सर्वनाश हो जाता है। हे माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सभी प्राणियों का भय हर लेती हैं। दुःख, दरिद्रता तथा भय हरने वाली आप ही हैं। आपका शील दुराचारियों के बुरे वर्ताव को दूर करने वाला है। असुरों को मारकर भी आपने शत्रुओं पर दया ही प्रकट की है। हे माता ! आपने त्रिलोकी की रक्षा की है। आप अपने अस्त्र-शस्त्रों से हमारी रक्षा करें। चारों दिशाओं से आने वाली आपत्तियों से भी हमारी रक्षा करें।'

इस प्रकार जब देवताओं ने माँ भगवती की स्तुति की और विविध रूपों से उनकी पूजा की, तब देवी ने प्रसन्न होकर प्रणाम करते हुए सभी देवताओं से कहा—"तुम सब लोग जिस वस्तु की अभिलाषा रखते हो, उसे हमसे माँग लो !"

यह सुनकर देवताओं ने कहा—"आपने हम लोगों की सभी इच्छाएं पूरी करदी हैं। अब हमारी कोई अभिलाषा शेष नहीं। हे देवि ! इस पर भी यदि आप हमें वर देना चाहती हैं, तो यही वर दीजिए कि हम जब भी आपका स्मरण करें, आप हमें दर्शन दें। जो मनुष्य आपकी स्तुति करे, आप उसे वित्त, समृद्धि और वैभव प्रदान करें।

ऋषि बोले—हे राजन् ! देवताओं ने जब अपने तथा जगत् के कल्याण के लिए देवी भद्रकाली की स्तुति की, तो वे 'तथास्तु' कहकर अन्तर्ध्यान हो गयीं।

इसके उपरान्त देवताओं का उपकार करने वाली देवी शुम्भ-निशुम्भ का वध करने के लिए पुनः गौरी देवी के शरीर से जिस प्रकार प्रकट हुई थीं, वह प्रसङ्ग मैं तुम्हें सुना रहा हूँ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चम अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

ॐ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशु तुल्यप्रभाम् ।
गौरी देहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

ऋषि कहने लगे—'हे राजन् ! पूर्वकाल में शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों ने बल के घमण्ड में आकर देवराज इन्द्र से देवलोक का राज्य छीन लिया और वे ही दोनों सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरुण के अधिकारों का भी उपयोग करने लगे। सभी देवताओं को अपमानित तथा पराजित करके देवलोक से निकाल दिया। तब उन सभी देवताओं ने अपराजिता देवी का स्मरण किया। यह सोचकर देवता गिरिराज (हिमालय) पर गये और भगवती विष्णुमाया की स्तुति करने लगे—

"देवी को नमस्कार है ! महादेवी को नमस्कार है ! प्रकृति एवं भद्रा को नमस्कार है ! रौद्रा, नित्या, गौरी एवं धात्री को नमस्कार है ! शरणागतों का कल्याण करने वाली ऋद्धि एवं सिद्धिरूपा देवी को नमस्कार है। दुर्गा दुर्गपारा, सारा, सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रादेवी को नमस्कार है। सौम्य तथा रौद्ररूपा देवी को नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से जानी जाती हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में 'छाया' रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में 'तृष्णा' रूप से स्थित हैं, और जो सब प्राणियों में क्षमा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में 'लक्ष्मी' रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में 'वृत्ति' रूप तथा 'स्मृति' रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है ! जो देवी सब प्राणियों में तुष्टि रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में 'माता' रूप से तथा 'भ्रान्ति' रूप से सदैव व्याप्त हैं, उन्हें नमस्कार है। जिस देवी की स्तुति देवता तक करते हैं, वह कल्याण रूपी देवी हमारा कल्याण करें तथा सारी आपत्तियों का नाश करें।'

ऋषि कहने लगे—'जिस समय सभी देवता इस प्रकार देवी की स्तुति कर रहे थे, उसी समय देवी पार्वतीजी गङ्गा-स्नान करने के लिए वहाँ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आयीं। उन्होंने देवताओं से पूछा—'आप सब लोग यहाँ पर एकत्र होकर किसकी स्तुति कर रहे हैं ?" तब उन्हीं के शरीर से प्रकट होकर, 'शिवा' देवी बोलीं—"शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों से तिरस्कृत और पराजित होकर, ये देवता मेरी ही स्तुति कर रहे हैं।" चूँकि वे पार्वतीजी के शरीर से प्रकट हुई थीं, इसलिए इन्हें 'कौशिकी' भी कहते हैं। कौशिकी देवी के प्रकट होने के बाद पार्वतीजी का शरीर काला पड़ गया और वे हिमालय पर रहने वाली काली देवी के नाम विख्यात हुईं।

उसी समय शुभ-निशुम्भ के नौकर चण्ड-मुण्ड वहाँ आये और उन्होंने मनोहारिणी अम्बिका देवी को देखा। देवी को देखकर, वह शुम्भ के पास जाकर बोले—

'महाराज ! एक अत्यन्त मनोहर स्त्री अपनी कान्ति से हिमालय को प्रकाशित कर रही है। इस तरह का रूप किसी ने भी नहीं देखा होगा। हे दैत्यराज ! आप उसे ले आइए। इस समय आपके महल में तीनों लोकों के रत्न शोभा पा रहे हैं। ऐरावत हाथी, पारिजात का वृक्ष, उच्चैःश्रवा घोड़ा, हंसों से जुता हुआ विमान, सोने की वर्षा करने वाला वरुण का छत्र आदि सभी वस्तुएं आपके पास हैं। वरुण का पाश और समुद्र के सभी रत्न आपके भाई निशुम्भ के पास हैं। फिर स्त्रियों में रत्नरूपी, कल्याण-मयी देवी को आप अपने अधिकार में क्यों नहीं ले लेते ?'

ऋषि कहने लगे—'चण्ड-मुण्ड की बातें सुनकर, शुम्भ ने महादैत्य सुग्रीव को दूत बनाकर देवी के पास भेजा और कहा कि देवी से इस तरह बातें कहना और ऐसी कोशिश करना, जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र यहाँ आ जाये।

सुग्रीव हिमालय पर्वत पर देवी के पास पहुँचा और बहुत ही मधुर वचनों में कहने लगा—'हे देवि ! दैत्यराज शुम्भ इस समय तीनों लोकों के अधीश्वर हैं। मैं उनका ही भेजा हुआ दूत हूँ। उनकी आज्ञा सभी देवता तक मानते हैं। उन्होंने आपको यह सन्देश भेजा है कि तीनों लोक मेरे अधिकार में हैं। देवता भी मेरी आज्ञा के आधीन हैं। विश्व के सभी श्रेष्ठ रत्न मेरे अधिकार में हैं। अतः हे देवि ! हम तुम्हें संसार की सभी श्रेष्ठ स्त्रियों में रत्न मानते हैं, इसलिए तुम भी मेरे पास आ जाओ। मेरा वरण करने से तुम्हें महान् ऐश्वर्य प्राप्त होगा।'

दूत की बातों को सुनकर, माँ भगवती मन ही मन गम्भीर-भाव से मुस्कराती हुई बोलीं—'दूत ! तुमने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। शुम्भ-निशुम्भ तीनों लोकों के स्वामी हैं तथा महान् पराक्रमी भी हैं। किन्तु इस विषय में मैंने प्रतिज्ञा की है कि जो भी मुझे युद्ध में पराजित कर देगा और

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो मेरे समान पराक्रमी होगा—वही मेरा 'स्वामी' होगा। इसलिए तुम मेरी ओर से दैत्यराज शुम्भ अथवा निशुम्भ से कहना कि वे स्वयं ही यहाँ आकर मुझे जीतकर शीघ्र ही विवाह कर लें।

देवी की इस तरह की बातें सुनकर, दूत ने कहा—'हे देवि ! तुम अत्यन्त अभिमानिनी हो। जब देवता तक शुम्भ के सामने युद्ध में नहीं टिक सकते, तब तुम अकेले कैसे युद्ध करोगी ? इसलिए तुम शुम्भ के पास चली चलो ! ऐसा करने से तुम्हारे गौरव की रक्षा होगी।'

देवी ने कहा—'शुम्भ और निशुम्भ बहुत पराक्रमी हैं, किन्तु मैंने भी प्रतिज्ञा करली है। अतः मैंने जो कुछ कहा है, वह अपने स्वामी से जाकर कहना फिर वे जो कुछ उचित समझें, सो करें।'

छठे अध्याय का कथा-सार

ध्यान-स्तुति—

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली,
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
माला कुम्भकपाल नीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां,
सर्वेन्द्वेश्वर भैरवांकनिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

ऋषि बोले—हे राजन् ! देवी के ऐसे वचन सुनकर दूत को बहुत क्रोध आया और उसने दैत्यराज शुम्भ के पास जाकर सभी बातें विस्तार-पूर्वक कह सुनायीं। दूत की बातें सुनकर, शुम्भ ने क्रोधित होकर सेनापति धूम्रलोचन से कहा—'धूम्रलोचन ! तुम शीघ्र ही अपनी सेना के साथ जाओ और उस दुष्टा को बाल पकड़कर घसीटते हुए ले आओ। उसकी रक्षा करने के लिए जो भी कोई दूसरा आए, उसे अवश्य मार डालना।'

ऋषि बोले—'जब शुम्भ ने इस प्रकार की आज्ञा दी तो धूम्रलोचन दैत्य साठ हजार असुरों की सेना को साथ लेकर वहाँ से चल पड़ा। देवी के पास पहुँच कर उन्हें ललकारते हुए कहा—'यदि तुम प्रसन्नतापूर्वक मेरे स्वामी के पास नहीं चलोगी, तो मैं बलपूर्वक बाल पकड़कर घसीटते हुए ले चलूंगा।'

देवी ने कहा—'तुम्हें दैत्यराज शुम्भ ने भेजा है। फिर तुम स्वयं बलवान् हो और तुम्हारे साथ एक बहुत बड़ी सेना भी है। यदि तुम बल-पूर्वक मुझे ले जाओगे तो मैं क्या कर सकूँगी ?'

देवी की बातें सुनकर धूम्रलोचन तेजी से उनकी ओर दौड़ा, लेकिन

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवी अम्बिका ने 'हुँ' शब्द का उच्चारण करके ही उसे भस्म कर दिया। सेनापति को भस्म हुआ देखकर, उसकी सेना ने देवी पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। तब देवी के वाहन सिंह ने क्रोध में भरकर असुरों की सेना पर आक्रमण कर दिया। उसने कुछ दैत्यों को अपने पञ्जों से तथा कुछ को जबड़ों से फाड़कर विदीर्ण कर डाला। अपने नाखूनों से कई दैत्यों के पेट फाड़ डाले और कई दैत्यों के सिर धड़ से अलग कर दिए। देवी के महाबली वाहन सिंह ने कुछ ही क्षणों में असुरों नी सेना का संहार कर डाला।

शुम्भ ने जब यह सुना कि देवी ने धूम्रलोचन को मार डाला है और उनके वाहन सिह ने सारी सेना को समाप्त कर दिया है तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने चण्ड-मुण्ड नामक महादैत्यों को सेना लेकर युद्ध करने की आज्ञा दी—'हे चण्ड-मुण्ड! तुम लोग बहुत बड़ी सेना लेकर जाओ और उस देवी को पकड़कर या बाँधकर मेरे सामने ले आओ। यदि उसे जीवित न ला सको तो उसे मार डालना।'

सप्तम अध्याय का कथा-सार

ध्यान-स्तुति—

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककल पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गी,
न्यस्तैकांघ्रि सरोजे शशिशकलधरांवल्लकीं वादयन्तीम्।
कल्हाराबद्धमालां नियमित विलसच्चोलिकां रक्तवस्त्राम्,
मातङ्गीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्॥

ऋषि बोले—'हे राजन्! शुम्भ की आज्ञा पाकर चण्ड-मुण्ड दैत्य चतुरङ्गिणी सेना के साथ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर देवी के साथ युद्ध करने के लिए चल पड़े। हिमालय के उच्च शिखर पर उन्होंने देवी को सिंह पर बैठे हुए देखा। देवी अपने सिंह पर बैठी हुई धीरे-धीरे मुस्करा रही थीं। उन्हें देखते ही दैत्य देवी को पकड़ने के लिए दौड़े।

असुरों को अपने पास आया देखकर देवी को महान् क्रोध आया। क्रोध के कारण देवी का मुँह काला पड़ गया था, भौंहें टेढ़ी हो गयी थीं। उसी समय वहाँ पर कालीदेवी तलवार और पाश लिए प्रकट हुईं। वह चीते की खाल की साड़ी पहिने थीं, गले में नरमुण्डों की माला सुशोभित थी, हाथ में एक विचित्र खड्ग था। उनके शरीर का मांस सूख गया था, इसलिए वह केवल हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखायी दे रही थीं। उनका मुख बहुत विकराल था, वह अपनी लाल जिह्वा को लपलपा रही थीं,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिसके कारण अत्यन्त भयानक प्रतीत हो रही थीं। उसकी गर्जना से तीनों लोक तथा दशों दिशाएं काँप रही थीं। कालिकादेवी महादैत्यों का वध करती हुई, दैत्यों की सेना पर टूट पड़ीं। वह दैत्यों तथा उनके वाहनों को मुँह में डालकर चबाती जा रही थीं। किसी दैत्य को बालों से पकड़ कर, किसी को पैरों के नीचे दबाकर मार रही थीं। असुरों के अस्त्र-शस्त्रों को दाँतों से दबाकर पीस डालतीं।

देवी काली ने शीघ्र ही दैत्यों की सारी सेना को रौंद डाला। अपनी सेना का संहार हुआ देखकर चण्ड तेजी से देवी की ओर दौड़ा। महादैत्य मुण्ड ने भी भयानक बाणों की वर्षा करके देवी को उनसे ढंक दिया। उनके फेंके हुए चक्र देवी के मुँह में प्रवेश करते जा रहे थे। तब देवी ने क्रोध में भरकर भयानक अट्टहास किया और 'हुँ' शब्द का उच्चारण करती हुई, चण्ड के बाल पकड़कर उसका सिर काट डाला।

चण्ड को मारा गया देखकर, मुण्ड भी देवी की ओर झपटा, लेकिन देवी ने क्रोध में भरकर उसकी भी गर्दन काट दी तथा उन दोनों दैत्यों के मस्तकों को लेकर, चण्डिका देवी के पास पहुँच कर अट्टहास करते हुए कहा—'हे देवि! मैंने चण्ड-मुण्ड नामक इन दो महादैत्यों को तुम्हें भेंट किया है, अब युद्ध में शुम्भ और निशुम्भ का तुम स्वयं ही वध करना।'

ऋषि कहने लगे—'हे राजन्! उन महादैत्यों के मस्तकों को देखकर देवी चण्डी ने कालीदेवी से कहा—'तुम चण्ड और मुण्ड को लेकर मेरे पास आयी हो, इसलिये संसार में तुम 'चामुण्डा' के नाम से विख्यात होगी।'

अष्टम अध्याय का कथा-सार

स्तुति श्लोक—

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं,
धृतपाशांकुश बाण चापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृत्तां मयूरवैरहमित्येव,
विभावये भवानीम्॥

ऋषि बोले—'हे राजन्! चण्ड-मुण्ड नामक महादैत्यों तथा अन्य सभी दैत्यों के सहित सेना का संहार हो जाने पर दैत्यों का राजा शुम्भ अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसने अपनी पूरी सेना को तैयार हो जाने की आज्ञा दी। अदायुध नामक छियासी दैत्य-सेनापति अपनी-अपनी सेनाओं को लेकर युद्ध के लिए प्रस्तुत हो गये। कम्बु नामक दैत्यों के चौरासी सेनानायक, पचास कोटिवीर्य नामक, सौ धौम्रकुल के सेनापति, कालक,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दौहर्द, मौर्य और कालकेय, नामक सभी असुर युद्ध के लिए सेनाओं सहित तैयार हो गये। इस प्रकार दैत्यराज शुम्भ अपनी सभी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गया।

उसकी भयङ्कर सेना को देखकर, अम्बिका देवी ने अपने धनुष की एक जोरदार टङ्कोर की, जिससे तीनों लोक काँप उठे! इसके बाद देवी के वाहन सिंह ने भी दहाड़ना प्रारम्भ कर दिया और इसके साथ-साथ देवी ने अपने घण्टे को भी जोर से बजाया। इन सभी आवाजों से दशों दिशाएं गूंज उठीं।

उस घोर ध्वनि को सुनकर असुर-सेनाओं ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। उसी समय देवताओं की रक्षा के लिए—ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्रादि देवताओं के शरीरों से शक्तियाँ निकल-निकल कर उन्हीं का रूप धारण कर देवी के पास पहुँचीं। सबसे पहले ब्रह्माजी की शक्ति हंस वाले विमान पर बैठी हुई अक्षसूत्र और कमण्डलु से सुशोभित होकर आयीं, जिन्हें 'ब्रह्माणी' कहते हैं।

महादेवजी की शक्ति बैल पर आरूढ़ होकर, त्रिशूल लिए हुए, महानाग का कङ्कण पहिने हुए आयीं, जिनके मस्तक पर चन्द्र-रेखा सुशोभित थी। कार्तिकेयजी की शक्तिरूपा जगदम्बिका उन्हीं का रूप धारण करके, मयूर पर आरूढ़ होकर, हाथ में शक्ति लिए हुए, दैत्यों का संहार करने के लिए देवी के पास उपस्थित हुईं। भगवान विष्णु की शक्ति गरुड़ पर चढ़कर, खड्ग, चक्र, गदा, पद्म, धनुष तथा खड्ग हाथों में लिए वहाँ आयीं। श्रीहरि की शक्ति यक्ष (वाराह) का रूप धारण करके वहाँ उपस्थित हुई। नृसिंह का रूप धारण करके नृसिंह भगवान की शक्ति वहाँ उपस्थित हुई। इन्द्र की शक्ति हाथ में वज्र लिए हुए, गजराज (ऐरावत) पर सवार होकर आयीं, उनके सहस्रों नेत्र थे।

उन सभी देव-शक्तियों से घिरे हुए महादेवजी ने चण्डिका देवी से कहा—'अब तुम देवताओं की प्रसन्नता के लिए असुरों का शीघ्र ही संहार करो।' तब देवी के शरीर से अत्यन्त भयानक और उग्र चण्डिका शक्ति प्रकट हुई। तम देवी ने भगवान शङ्कर से कहा कि आप शुम्भ और निशुम्भ तथा अन्य दैत्यों के पास दूत बनकर जाइए और कहिए—'यदि तुम लोग जीवित रहना चाहते हो तो पाताल को लौट जाओ। इन्द्र को तीनों लोकों का राज्य मिल जाये तथा देवता यज्ञ-भाग का उपभोग करें। यदि बल के घमण्ड में आकर युद्ध की अभिलाषा रखते हो तो आओ,—मेरी योगिनियाँ असुरों के कच्चे मांस से तृप्त होंगी।'

चूंकि देवी ने भगवान शिव को दूत बनाकर भेजा था, इसलिए वह

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'शिवदूती' के नाम से भी जानी जाती हैं। वे महादैत्य भगवान शिव के द्वारा देवी का सन्देश सुनकर बहुत क्रोधित हुए और देवी की ओर दौड़े। देवी ने उनके द्वारा फेंके हुए अस्त्र-शस्त्रों तथा वाणों को धनुष की टङ्कोर से ही काट डाला। कालीदेवी आगे बढ़कर शत्रुओं को शूल के प्रहार से घायल करती हुई रणभूमि में विचरने लगीं। ब्रह्माणी अपने कमण्डलु का जल छिड़क कर शत्रुओं के ओज और पराक्रम को नष्ट कर रही थीं। माहेश्वरी ने त्रिशूल से, वैष्णवी ने चक्र से तथा कार्तिकेय की शक्ति ने शक्ति से दैत्यों का संहार करना प्रारम्भ किया।

इन्द्र-शक्ति के वज्र-प्रहार से घायल होकर सैकड़ों दैत्य-दानव रक्त बहाते हुए मर-मरकर गिरने लगे। वाराही-शक्ति ने अपनी दाढ़ों से कितने ही असुरों की छाती विदीर्ण कर डाली तथा चक्र से घायल कर डाला।

इस प्रकार दैवी-शक्तियों को क्रोध में भरा हुआ देखकर, दैत्य-सैनिक भाग खड़े हुए। अपने सैनिकों को भागता हुआ देखकर रक्तबीज नामक महादैत्य अत्यन्त क्रोध में भरकर युद्ध के लिए आया। उसके रक्त की जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरतीं, उतने ही बलशाली दैत्य उत्पन्न हो जाते। रक्त से उत्पन्न होने वाले सभी दैत्य अत्यन्त भयङ्कर अस्त्र-शस्त्रों से मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे। वैष्णवी, ऐन्द्री, कौमारी, वाराही आदि की चोटों से इतने असुर पैदा हुए कि उनसे पूरा विश्व भर गया। यह देखकर, देवताओं को बड़ा भय हुआ। देवताओं को उदास देखकर चण्डिकाजी ने कालीजी से कहा—'चामुण्डे। तुम अपना मुख और फैलाओ, जिससे इस असुर के शरीर से गिरने वाला रक्त तुम्हारे मुँह में ही जाये तथा सभी उत्पन्न हुए असुरों का भी भक्षण करती जाओ।'

इसके बाद सभी शक्तियों के प्रहार से जो भी रक्त उसके शरीर से गिरता था, उसे चामुण्डा देवी अपने मुँह में ले लेती थीं। रक्त गिरने से व्याकुल हुए रक्तबीज को वज्र, वाण, खड्ग आदि से देवी ने मार डाला।

रक्तबीज को मरा हुआ देखकर देवता अत्यन्त प्रसन्न हो आकाश से पुष्प-वर्षा करने लगे।

नवम अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक—

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचि राक्षमालाम्,
पाशांकुशौ च वरदां निजबाहु दण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजा ने कहा—'हे भगवन् ! आपने रक्तबीज नामक महादैत्य के रोमाञ्चकारी बध का वर्णन तो किया। किन्तु उसके बध से दुःखी तथा क्रोधित होकर, दैत्यराज शुम्भ-निशुम्भ ने क्या किया ? उसका वर्णन भी आपसे सुनना चाहता हूँ।'

महर्षि बोले—'हे राजन् ! रक्तबीज सहित अनेक असुरों और अपनी सेना का संहार हुआ देखकर. शुम्भ-निशुम्भ के क्रोध की सीमा नहीं रही। अत्यन्त क्रोध में भरकर निशुम्भ देवी की ओर दौड़ा, उसके साथ राक्षसों की प्रधान-सेना भी थी। उसके साथ-साथ, आगे-पीछे बड़े-बड़े असुर थे, जो देवी को मार डालने के लिए उद्यत थे। महापराक्रमी शुम्भ भी मातृगणों से युद्ध करता हुआ, देवी के ऊपर आक्रमण करने के लिए आ पहुँचा। तब देवी के साथ शुम्भ और निशुम्भ का घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। उन दोनों दैत्यों ने घोर वाणों की वर्षा करते हुए चण्डिका को घेर लिया। किन्तु देवी ने उनके वाण-समूहों को अपने वाणों से काट डाला। देवी के वाणों के प्रहार से दैत्यों का शरीर घायल हो गया।

तब निशुम्भ ने अपनी तलवार और ढाल लेकर देवी के वाहन सिंह के मस्तक पर प्रहार किया। अपने वाहन को घायल देखकर देवी ने क्षुरण वाण से निशुम्भ की तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दिये तथा उसकी ढाल जिसमें आठ चन्द्र जड़े हुए थे,उसके भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये। ढाल-तलवार को कटा हुआ देखकर, निशुम्भ ने शक्ति चलाई, किन्तु देवी ने चक्र से उसके भी दो टुकड़े कर दिये। यह देखकर निशुम्भ ने अत्यन्त क्रोधित होकर शूल उठाया, देवी ने घूँसे का प्रहार करके उसे भी समाप्त कर दिया। तब उसने गदा घुमाकर देवी पर प्रहार किया, किन्तु वह भी देवी के त्रिशूल से भस्म हो गयी। इसके बाद निशुम्भ फरसा लेकर देवी चण्डिका की ओर दौड़ा, किन्तु देवी ने वाणों से उसे वहीं पर मार गिराया।

अपने पराक्रमी भाई निशुम्भ को मरा हुआ देखकर, शुम्भ को बहुत क्रोध आया और वह अम्बिका देवी का बध करने के लिए आगे बढ़ा। रथ पर बैठा हुआ, वह अपनी आठों भुजाओं में भिन्न-भिन्न अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए था। उसे आता हुआ देखकर देवी ने अपने धनुष की प्रत्यञ्चा खींचकर घोर शब्द किया। साथ ही, अपना घण्टा भी उन्होने बड़े वेग से बजाया, जिसकी आवाज सुनकर दैत्यों में भय व्याप्त हो गया और उनका पराक्रम क्षीण होने लगा। इस आवाज को सुनकर देवी का सिंह भी इतनी जोर से दहाड़ा कि दशों दिशाएं उसकी गर्जना से गूँज उठीं। इसके बाद शिवदूती ने दैत्यों के अमङ्गल का सूचक अट्टहास किया, जिससे समस्त असुर थर्रा उठे। किन्तु शुम्भ को महान् क्रोध आया। उसी समय देवी ने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुम्भ को वहाँ आया हुआ देखकर उसे ललकारा—'अरे दुरात्मा ! खड़ा रह ! खड़ा रह !!' इस ललकार को सुनकर देवता एक स्वर से देवी की जय-जयकार करने लगे।

शुम्भ ने यहाँ आकर भीषण ज्वालाओं वाली शक्ति का देवी पर प्रहार किया, किन्तु देवी ने उसे दूर हटा दिया। उस समय शुम्भ ने इतना तीव्र सिंहनाद किया कि तीनों लोक गूँज उठे, तथा उस सिंहनाद की तीव्र प्रतिध्वनि के आगे सभी शब्द फीके पड़ गये। शुम्भ के द्वारा चलाये हुए वाणों को देवी ने और देवी के द्वारा चलाये हुए वाणों को शुम्भ ने सैकड़ों टुकड़ों में काट डाला। इसके बाद देवी ने शूल से शुम्भ पर प्रहार किया, जिसके आघात से वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

किन्तु जैसे ही उस महादैत्य को होश आया, उसने अपने तीखे वाणों से देवी, काली तथा सिंह को घायल कर डाला। फिर उस दैत्य ने माया से अपनी सैकड़ों भुजाएं बना लीं तथा सभी से चक्र चलाकर देवी को चक्रों से ढँक दिया। विश्व की पीड़ा को नष्ट करने वाली देवी ने कुपित होकर वाणों से उन चक्रों तथा वाणों को काट डाला। यह देखकर शुम्भ दैत्य अपनी सेना के साथ देवी चण्डिका का वध करने के लिए गदा लेकर दौड़ा। चण्डी ने उसकी गदा को अपनी तलवार से काट डाला, तब उसने शूल हाथ में लिया, किन्तु देवी ने अपने शूल से उसकी छाती छेद दी। उसकी छाती में घाव होते ही उस घाव से एक दूसरा दैत्य देवी को ललकारते हुए निकला। उसे निकलते देखकर, देवी ने अट्टहास किया और खड्ग से उस पुरुष का मस्तक काटकर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया।

उसके पृथ्वी पर गिरते ही सिंह अपनी दाढ़ों से असुरों को चबाने लगा। काली तथा शिवदूती ने भी असुरों का भक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। कौमारी की शक्ति से आहत हो कितने ही महादैत्य पृथ्वी पर गिर गये। ब्रह्माणी के मन्त्रपूरित जल के छींटों से निस्तेज होकर सैकड़ों दैत्य भाग गये। माहेश्वरी के त्रिशूल से छिन्न-भिन्न होकर सैकड़ों दैत्य धराशायी हो गये। वाराही के आघात से कितने ही दैत्य अधमरे होकर पृथ्वी पर गिर गये। वैष्णवी ने भी अपने चक्र से दानवों के शरीर खण्ड-खण्ड कर दिये। ऐन्द्री के वज्र से सैकड़ों दानवों को प्राणों से हाथ धोना पड़ा। इस महायुद्ध में जो असुर जीवित थे, सब अपनी-अपनी जान बचाकर इधर-उधर भागे और कितने ही शिवदूती, काली तथा सिंह के ग्रास बन गये।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दशम अध्याय का कथा-सार

स्तुति-श्लोक–

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि,
नेत्रां धनुश्शरयुतां कुश पाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्ति रूपां,
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥

ऋषि कहने लगे—'हे राजन् ! अपने प्रिय भाई को मरा हुआ देखकर शुम्भ अत्यन्त क्रोधित हुआ । कुपित होकर वह देवी से बोला—'तू बल के अभिमान में आकर घमण्ड दिखा रही है, किन्तु अन्य स्त्रियों के बल पर लड़ती है ।'

देवी ने कहा—'ओ दुष्ट ! मैं अकेली ही हूँ, इस संसार में मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं । ये सभी मेरी ही विभूतियाँ हैं । देख, इसलिए ये सभी मुझमें ही समा रही हैं ।'

इसके बाद समस्त देवियाँ अम्बिका देवी के शरीर में समा गयीं और वहाँ पर केवल अम्बिका देवी रह गयीं ।

देवी ने कहा—'अब मैंने अपनी समस्त शक्तियों को समेट लिया है और अकेली ही युद्धक्षेत्र में खड़ी हूँ ।'

इसके पश्चात् देवी और शुम्भ में भयङ्कर युद्ध आरम्भ हो गया । वाणों की वर्षा तथा तीखे शस्त्रों के प्रहार से युद्ध बड़ा भयानक हो गया । देवी ने उस समय जितने भी दिव्य अस्त्र छोड़े, शुम्भ ने उनको निवारक-अस्त्रों से काट दिया । तब शुम्भ ने बाणों की वर्षा से देवी को अच्छादित कर दिया । यह देखकर देवी ने उसके धनुष को ही काट डाला । धनुष कट जाने पर शुम्भ ने शक्ति-प्रहार करना चाहा, किन्तु देवी ने उसे भी चक्र द्वारा काट डाला । इसके बाद दैत्यराज शुम्भ ने सौ चन्द्रों वाली ढाल और तलवार ली, उसे भी देवी ने अपने तीखे वाणों के प्रहार से काट डाला, फिर उसके घोड़े व सारथी भी मार डाले गये । अपने सभी अस्त्र-शस्त्र विफल हो जाने के कारण शुम्भ ने एक भयानक मुद्गर हाथ में ले लिया । उसे आते देख देवी ने अपने बाणों से उसके मुग्दर को भी काट डाला । इस तरह से निःशस्त्र हो जाने पर क्रोध में भरकर वह देवी को मुक्का मारने के लिए झपटा । उसका मुक्का लगते ही देवी ने उसकी छाती पर एक थाप मारी । देवी की थाप के लगते ही दैत्यराज शुम्भ पृथ्वी पर गिर पड़ा, किन्तु पुनः उछल कर देवी को साथ लिए आकाश में जा खड़ा हुआ । बिना

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आधार के ही देवी और दैत्यराज शुम्भ आकाश में भयङ्कर युद्ध करने लगे। उनका यह युद्ध देखकर, सभी देवता एवं सिद्ध-मुनि आश्चर्य-चकित रह गये।

फिर देवी अम्बिका ने दैत्य को घुमाकर पृथ्वी पर पटक दिया। किन्तु दैत्य पुनः उछल कर देवी पर झपटा। उसे झपटता हुआ देखकर देवी ने त्रिशूल से उसकी छाती पर वार किया। देवी के शूल से घायल होकर वह धरती पर गिर गया और उसके प्राणपखेरू उड़ गये। उसके धरती पर गिरते ही सम्पूर्ण पृथ्वी काँप उठी। उस दुरात्मा के मारे जाने पर सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न हो गया। आकाश स्वच्छ दिखाई देने लगा पहले जो उल्कापात हो रहे थे, वे सब शान्त हो गये।

शुम्भ की मृत्यु के बाद सभी देवता हर्षित हो पुष्प-वर्षा करने लगे। गन्धर्वगण दुन्दुभी बजाकर मङ्गलगान करने लगे और अप्सराएं प्रसन्न हो नृत्य करने लगीं।

ग्यारहवें अध्याय का कथा-सार

स्तुति श्लोक—

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि,
नेत्रां धनुश्शरयुतां कुश पाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्ति रूपां,
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

महादैत्य शुम्भ के मर जाने के बाद इन्द्रादिक देवता अग्नि को आगे करके कत्यायनी देवी की स्तुति करने लगे 'हे शरणागत के दुःख दूर करने वाली देवि! हम पर प्रसन्न होओ। हे सम्पूर्ण जगत् की माता! हे विश्वेश्वरी! विश्व की रक्षा करो। तुम्हीं विश्व की अधीश्वरी हो, तुम्हीं समस्त विश्व की एक मात्र आधार हो। क्योंकि पृथ्वी रूप में तुम्हीं स्थित हो। तुम्हारा पराक्रम अवर्णनीय है। जलरूप में स्थित होकर तुम्हीं जगत् को तृप्त कर रही हो। विश्व की समस्त स्त्रियाँ तुम्हारा ही रूप है। हे जगदम्बे! तुम्हारी स्तुति नहीं हो सकती। हे बुद्धि रूप से सबके हृदय में विराजने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार है।

हे सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता सनातनी देवी, तुम्हें नमस्कार है! हे शरण में आये हुए दीन-दुखियों की रक्षा करने वाली नारायणी देवी. तुम्हें नमस्कार है! हे ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी तथा वैष्णवी देवी के रूप में दैत्यों का नाश करने वाली देवी, तुम्हें नमस्कार

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है ! हे हाथ में महाचक्र लिए, दाढ़ों पर पृथ्वी को उठाने वाली वाराही रूप धारिणी कल्याणमयी देवी तुम्हें नमस्कार है।

हे शिवदूती रूप से दैत्यों की सेना का संहार करने वाली देवी तुम्हें नमस्कार है !

जब इस प्रकार देवताओं ने देवी की विभिन्न नामों से विभिन्न रूपो की स्तुति की। तब देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर देवी बोलीं—'हे देवतागणो ! मैं तुम्हारी स्तुति से बहुत प्रसन्न हूँ, अतः तुम्हारे मन में जो भी इच्छा हो, वहीं वर माँग लो ! संसार का उपकार करने वाला वर मैं आप लोगों को अवश्य दूँगी।'

देवता बोले—'हे सर्वेश्वरि ! आप इसी प्रकार तीनों लोकों के कष्टों को दूर करती रहें और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहें।

देवी बोलीं—'हे देवताओ ! वैवश्वत मन्वन्तर के अट्ठाईसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नाम के दो अन्य महादैत्य उत्पन्न होंगे। तब मैं नन्द के घर में उत्पन्न होकर, विन्ध्याचल-पर्वत पर निवास करते हुए उन दैत्यों का संहार करूँगी। फिर पृथ्वी पर अवतार लेकर मैं वैप्रचित्ती नाम वाले दानवों का संहार करके पृथ्वी के भार को दूर करूँगी। जब उन महा-दैत्यों का भक्षण करते समय मेरे दाँत लाल हो जायेंगे, तब मनुष्य मेरी स्तुति करते समय मुझे 'रक्तदन्तिका' कहेंगे।

फिर जब पृथ्वी पर सौ वर्षों तक वर्षा नहीं होगी और पानी का अभाव हो जायेगा, तो मुनियों की प्रार्थना पर मैं 'आयोनिजा' रूप में प्रकट होऊँगी और अपने सौ नेत्रों से मुनियों की ओर देखूँगी। अतः मर्त्य-लोक में लोग मुझे 'शताक्षी' नाम से स्मरण किया करेंगे। इसके बाद समय-समय पर मैं शाकम्भरी, दुर्गादेवी, भीमादेवी, भ्रामरी आदि का रूप धारण करके दानवी-शक्तियों और शत्रुओं का नाश करती रहूँगी।

द्वादश अध्याय का कथा-सार

ध्यान-स्तुति—

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल खेटविलसद्धस्ताभिरा सेविताम्॥
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

देवी ने कहा—'जो भी एकाग्र-चित्त होकर मेरी स्तुतियों से मेरी प्रार्थना करेगा, उसकी सभी बाधाएं निश्चय ही दूर होंगी। जो व्यक्ति

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मधुकैटभ, महिषासुर और शुम्भ-निशुम्भ के संहार के प्रसङ्ग का पाठ करेंगे तथा अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी को भक्तिपूर्वक मेरे माहात्म्य का श्रवण करेंगे, उन्हें पाप-जनित आपत्तियाँ नहीं घेरेंगी। उनके घर में दरिद्रता नहीं आयेगी और शत्रु, लुटेरे, राजा, शस्त्र, अग्नि आदि से भी भय नहीं होगा। पत्र, पुष्प, अर्घ्य, धूप, दीप, गन्ध आदि से यज्ञ और पूजन करके, ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देने से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होती है। मेरे जन्म चरित्र का कीर्त्तन और श्रवण पापों एवं शत्रुओं का शमन करता है। ब्रह्मा जी के द्वारा की गई स्तुतियाँ कल्याणमयी और बुद्धि प्रदान करने वाली हैं। मेरे प्रभाव से हिंसक-पशु भी नष्ट हो जाते हैं।

ऋषि बोले—'हे राजन्! इतना कहने के बाद देवी अन्तर्ध्यान हो गई और देवता आनन्दपूर्वक निर्भय होकर अपने-अपने स्थानों को चले गये और यज्ञ-भाग का उपभोग करते हुए अपने अधिकारों का पालन करने लगे। उन दोनों महादैत्यों 'शुम्भ' और 'निशुम्भ' के मारे जाने पर दैत्य-कुल के सभी बचे हुए असुर पाताल को चले गये।'

इस प्रकार वही भगवती देवी बार-बार प्रकट होकर संसार की रक्षा करती रहती हैं। वही संसार को जन्म देती हैं तथा प्रार्थना करने पर स्मृति एवं विज्ञान प्रदान करती रहती हैं। महाप्रलय के समय महामारी का स्वरूप धारण करती है। पुष्प, धूप और गन्ध आदि से पूजन करके उनकी स्तुति करने पर वे पुत्र-धन, धार्मिक बुद्धि तथा उत्तम गति प्रदान करती हैं।

त्रयोदश अध्याय का कथा-सार

ध्यान स्तुति—

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे॥

ऋषि बोले—'हे राजन्! इस प्रकार मैंने तुम्हें देवी के माहात्म्य का वर्णन सुनाया। वे ही इस जगत् को धारण करती हैं तथा ज्ञान को उत्पन्न करती हैं। हे राजन्! तुम भी उन्हीं परमेश्वरी की शरण में जाओ। आराधना करने पर वे मनुष्यों को भोग, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करती हैं।

मार्कण्डेयजी कहते हैं—'मेधामुनि के ये वचन सुनकर, राजा सुरथ ने महर्षि को प्रणाम किया। वे अपने मोह तथा राज्य जाने के कारण बहुत खिन्न थे। इसलिए विरक्त होकर राजा और वैश्य नदी के तट पर जाकर तपस्या करने लगे। नदी के तट पर देवी की मूर्त्ति बनाकर पुष्प, धूप और

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हवन आदि द्वारा उनकी आराधना की और देवी-सूक्त का जप करने लगे। पहले यो उन्होंने आहार को कम किया और फिर निराहार रहकर, एकाग्र-चित्त होकर देवी का चिन्तन करना आरम्भ कर दिया। वे अपने शरीर के रक्त से बलि देते हुए, तीन वर्ष तक लगातार देवी की संयमपूर्वक आराधना करते रहे।

उनकी आराधना से बहुत प्रसन्न होकर देवी ने उन्हें दर्शन देते हुए कहा---'राजा तथा वैश्य ! तुम लोग अपने कुलों को आनन्दित करने वाले हो। तुमको जिस वस्तु की अभिलाषा हो, माँग लो।'

तब राजा ने इस जन्म में शत्रुओं की सेना का नाश कर, अपना राज्य प्राप्त करने का वरदान माँगा तथा अगले जन्म में भी नष्ट न होने वाला राज्य माँगा। वैश्य का मन संसार से विरक्त हो चुका था, इसलिए उस समय उसने ममता और अहङ्कार का नाश करने वाला 'ज्ञान' माँगा।

देवी ने कहा---'हे राजन् ! तुम थोड़े दिनों में हीं शत्रुओं का नाश करके, पुनः अपना राज्य प्राप्त कर लोगे। फिर मृत्यु के बाद पृथ्वी पर पुनः जन्म लेकर सावर्णिक-मनु के नाम से ख्याति प्राप्त करोगे। हे वैश्य ! तुम्हें भी मोक्ष के लिए ज्ञान प्राप्त होगा।'

श्री मार्कण्डेयजी कहते हैं---'इस प्रकार उन दोनों को मनोवाञ्छित वरदान देकर देवी अन्तर्ध्यान हो गयीं।

नव-श्लोकी दुर्गा-पाठ

विधि—

सात सौ श्लोकों का संग्रह—'दुर्गा सप्तशती' ग्रन्थ का यदि प्रतिदिन विधिवत् पूजा करके पाठ किया जाय, तो चमत्कारी प्रभाव दीख पड़ता है। किन्तु वैसा न कर सकने की स्थिति में विकल्प-स्वरूप यह सप्तशती-उपासना करके भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

किसी भी अष्टमी के दिन, अथवा शुक्रवार के दिन, अथवा नवरात्रि के प्रथम दिन से, या फिर पुरोहित द्वारा कोई शुभ मुहूर्त्त लेकर, उस दिन से इस उपासना को प्रारम्भ करना चाहिए। चूँकि इसमें बहुत थोड़ा समय लगता है, अतः यदि कोई साधक नियमित रूप से वर्ष पर्यन्त अथवा सदैव पाठ करता रहे तो वह देवी की चमत्कारिक-कृपा की प्रत्यक्ष अनुभूति कर सकता है।

एकान्त पवित्र स्थान में लकड़ी के पीठे पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर देवी की प्रतिमा, चित्र अथवा मन्त्र, जो भी सुलभ हो—स्थापित करें। स्नानोपरान्त शुद्ध वस्त्र पहिनकर उसकी पूजा करें और यथाशक्ति चन्दन

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(लाल), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें। इस पूरी प्रक्रिया में 'ॐ नमः श्चण्डिकायै' मन्त्र जपते रहें। कलश की पूजा करके उस पर भी घृत-दीप जला दें, फिर देवी के सम्मुख नित्य 'शप्तसती पूजा' करने का सङ्कल्प करते हुऐ उनकी कृपा और क्षमा की याचना करें। तत्पश्चात् ध्यान, स्तुति और मुख्य स्तोत्र का पाठ करें। पाठ समाप्त होने पर पुनः क्षमा-याचना करें। प्रणाम-प्रदक्षिणा के पश्चात् पूजा का विसर्जन करके अपने दैनिक-कार्यों में लग जायें।

ध्यान रखने की बात है कि पूजा-काल में (उपासना की अवधि से) साधक को सात्त्विक-भोजन, विश्राम, संयम, रहन-सहन और सद्विचार की ओर सजग रहना चाहिए। काम, क्रोध, हिंसा, अपवित्रता, अपराध, दुष्कर्म, पाखण्ड और षड़यन्त्र के वातावरण से नितान्त अछूता रहने पर ही साधना फलवती होती है, अन्यथा सारा श्रम व्यर्थ हो जाता है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री दुर्गा नवश्लोकी मन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः।

स्तुति-श्लोक—

अक्षस्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टा सुराभाजनम्॥
शूलं पाश सुदर्शनै च दधतीं हस्तै प्रसन्नाननाम्।
सेवैसैरिभ मर्द्दिनीं महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

इस स्तुति का पाठ करके देवी को प्रणाम करें, तत्पश्चात् निम्न-लिखित श्लोक पढ़ें। मुख्य उपासना तो इन्हीं श्लोकों का पाठ करना है।

मूल-श्लोक—

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या महिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्ड मथिनी या रक्तबीजाशनी॥
शक्तिः शुम्भ निशुम्भ दैत्यदलिनी या सिद्धिः लक्ष्मी परा।
या चण्डी नवकोटि मूर्ति सहिता मम् पातु विश्वेश्वरी॥ 1॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथा,
सुरेन्द्रेण दिनेसु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥ 2॥

या साम्प्रतं चोद्धत दैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्ते।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ 3 ॥
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः,
सर्वापदो भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी,
शुभानिभद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ 4 ॥
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि,
एवमेव त्वयाकार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ 5 ॥
सर्व मङ्गल माङ्गल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ 6 ॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि,
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 7 ॥
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ 8 ॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि,दुर्गेदेवि नमोऽस्तुते ॥ 9 ॥

सप्त-श्लोकी दुर्गा सप्तशती उपासना

परिचय—

पूर्ववर्णित 'सप्तशती' उपासना की भाँति यह भी उसी का एक रूप है। अन्तर यह है कि उसमें नौ श्लोक हैं और इसमें मात्र सात श्लोक हैं। पूजन-विधान दोनों का एक ही है, केवल श्लोक-पाठ में थोड़ा-सा अन्तर है। पूर्ववर्णित नव-श्लोकी अथवा इस (सप्त श्लोकी) उपासना का प्रभाव इस प्रकार बताया गया है :—

● दैनिक रूप में नियमित पाठ (एक बार) करने से दिन मङ्गल-मय और सफलतापूर्ण व्यतीत होता है।

● प्रतिदिन तीन बार पाठ करने से शारीरिक-पीड़ा और व्याधि-उपसर्ग शान्त हो जाते हैं।

● पाँच बार नित्य पाठ करने से ग्रह-पीड़ा का शमन होता है।

● सात बार पाठ करने से भय-निवारण होता है।

● प्रतिदिन ग्यारह बार पाठ करने से समृद्धि. वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

● बारह बार दैनिक-पाठ करने से साधक के शत्रुओं का पराभव (नाश) होता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

● पन्द्रह बार का दैनिक-पाठ श्री-सम्पदा और सौख्य देता है।

● सोलह बार का दैनिक-पाठ साधक को धन-धान्य और सन्तान का सुख प्रदान करता है।

● अठारह बार का दैनिक-पाठ साधक के शत्रु-भय को नष्ट करके, शत्रु को पराभव करता है।

● 1, 3, 5 या 7 बार, जैसी भी सामर्थ्य हो, नियमित जप से नित्य पाठ करने वाले साधक को अन्य प्रकार के कष्टों—रोग, भय, भ्रम, चिन्ता, भौतिक-उपसर्ग (प्रेत-बाधादि) और कुष्ठ, क्षय, गुल्म जैसे रोगों से मुक्ति मिल जाती है। किन्तु यह लाभानुभूति तभी होती है, जब साधक पूरी आस्था, श्रद्धा, शुचिता, तन्मयता और पवित्र मानसिकता के साथ उपासना करे और संयमपूर्वक रहते हुए, स्वयं को देवी के प्रति समर्पित करदे।

विधि—

नव-श्लोकी साधना का, जो विधि-विधान पहले लिखा जा चुका है, ठीक वही इसमें भी निभाना चाहिए। मूर्त्ति-पूजा के पश्चात् विनियोग करें, फिर ध्यान-स्तुति पढ़ें और उसके बाद मूल-स्तोत्र (सप्त-श्लोकी दुर्गा सप्तशती) का पाठ करें। पाठ की समाप्ति पर क्षमा-प्रार्थना का श्लोक (दोनों उपासनाओं में) पढ़ना चाहिए।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री दुर्गा सप्त श्लोकी।

सप्त-श्लोकी दुर्गा-पाठ

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो,
स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि॥

दारिद्र्या दुःख भय हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार कारणाय सदार्द्र चित्ता।

सर्व मङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते,
भयेभ्यस्माहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥
रोगान् शेषान् पहंसि तुष्टा,
रुष्टा कामान् सकलाअभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्या श्रयिता प्रयान्ति ॥
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरि,
एवमेव त्वयाकार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥

क्षमा-प्रार्थना—

देवी प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

10 | गायत्री मन्त्र-साधना

परिचय—

आदिशक्ति श्री दुर्गाजी का एक स्वरूप 'गायत्री' भी है। इन देवी की उपासना हेतु रचित-मन्त्र को 'गायत्री-मन्त्र' कहते हैं। यह भारतीय-संस्कृति और अध्यात्म का चिर-प्राचीन मन्त्र है। यह ज्ञान, तेज, शक्ति, मुक्ति, समृद्धि, यश, मान और भौतिक-सम्पदा सब कुछ प्रदान करता है। किसी भी कामना की पूर्त्ति हेतु इसका जप किया जा सकता है। इस एक मन्त्र के जप से आदिशक्ति के सभी अवतार प्रसन्न हो जाते हैं। वैसे—लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गाजी की शक्ति तो इसमें केन्द्रित है ही। ये तीनों देवियाँ गायत्री-साधक के ऊपर निश्चय ही कृपालु रहती हैं।

उपरोक्त तीनों में से किसी भी एक देवी-स्वरूप की, अथवा तीनों की मूर्त्तियाँ, (मूर्त्ति के स्थान पर चित्र या यन्त्र भी) शुद्ध पीठे पर पुष्प अथवा रेशमी (लाल) वस्त्र बिछाकर, उस पर स्थापित करें। शुद्धतापूर्वक एकान्त स्थान में उनकी पूजा करें। पूजा में लाल चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य का प्रयोग करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रतिमा को प्रणाम करते हुए (सम्भव हो तो प्राणायाम, न्यास, विनियोग आदि करके, अथवा ऐसे ही श्रद्धापूर्वक) गायत्री-मन्त्र का मन्द गति से मौन जप करें। माला कोई भी हो सकती है—स्फटिक, शङ्ख, लाल चन्दन, मूँगा अथवा रुद्राक्ष की। इस प्रकार नियमित रूप से 5-7 माला जपते रहने से मन्त्र का प्रभाव स्पष्ट दीखने लगता है। यों, यदि कोई साधक पूरे नियम-संयम के साथ सवा-लाख मन्त्र-जप का अनुष्ठान 11 या 21 दिनों में पूरा करले, तो उसमें अलौकिक क्षमता आ जाती है।

गायत्री-मन्त्र—

ॐ भूः भुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

गायत्री-मन्त्र द्वारा रोग-निवारण

गायत्री-मन्त्र एक ऐसा महामन्त्र है, जो समस्त 'मन्त्र-महासागर' का सर्वश्रेष्ठ रत्न कहलाता है। प्रयोग-भेद से इसका जप किसी भी समस्या के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निराकरण में आशातीत प्रभावी होता है। यहाँ कुछ विशेष रोगों पर गायत्री-मन्त्र का प्रयोग लिखा जा रहा है। शुचिता और श्रद्धापूर्वक इनके जप से कद्मुत लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मैंने स्वयं कई लोगों को गायत्री-जप के प्रभाव में कष्ट-मुक्त और वैभव-सम्पदा से सम्पन्न होते देखा है।

मधुमेह, मेद, स्वर-भङ्ग, मूकता—

मन्त्र—ॐ भूः भुर्वः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मन-मस्तिष्क के रोग—

मन्त्र—ॐ भूः भुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

हृदय-विकार—

मन्त्र—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्।

रक्तचाप-श्वासावरोध—

मन्त्र—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्।

आज के घोर भौतिक-युग में भी पश्चिमी-देशों के आस्थावान् और सभ्य-संस्कृत नागरिक, विदेशी-विधर्मी होते हुए भी, इस मन्त्र का जप करके इसके चमत्कारी प्रभाव की सराहना करते है। यदि कोई व्यक्ति इस मन्त्र का नियमित रूप से 10 माला प्रतिदिन जप करे, तो अल्प समय में ही वह व्याधि-मुक्त हो सकता है। केवल रोग-निवारण ही नहीं, गायत्री-मन्त्र के द्वारा मानव-जीवन की धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सम्बन्धी कोई भी समस्या सरलता से हल की जा सकती है।

गायत्री-मन्त्र के अन्य स्वरूप

परिचय—

मूल गायत्री मन्त्र समस्त देवियों की शक्ति का पुञ्जीभूत स्वरूप हैं। इसके अतिरिक्त जितने भी देवता हैं, अथवा उनकी शक्तियां हैं, उनसे भी गायत्री का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। इस आधार पर महर्षियों ने कुछ प्रमुख देव-शक्तियों से सम्बन्धित गायत्री-मन्त्र के स्वरूप निर्धारित किये थे। आज भी उन देव-शक्तियों के साथ गायत्री-मन्त्र को संयुक्त करके जप करना अतीव प्रभावशाली प्रमाणित हो रहा है। नीचे कुछ प्रमुख गायत्री मन्त्र-स्वरूप प्रस्तुत हैं। साधकजन अपनी आस्था के अनुसार इनमें से किसी का भी नियमित जप करके लाभान्वित हो सकते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विधि--

जिस देवशक्ति से सम्बन्धित गायत्री-मन्त्र का जप करना हो, उसका चित्र अथवा मूर्त्ति, पूजा-गृह में स्थापित करें। फिर उसकी विधिवत् चन्दन, पुष्प, धूप, दीपादि से पूजा करके, कलश पर दीपक जलाकर गायत्री-मन्त्र का जप आरम्भ करें। जप-संख्या प्रतिदिन समान, और नियमित रूप से होनी चाहिए। यदि किसी अनुष्ठान का सङ्कल्प किया गया हो, तो उसकी पूर्त्ति पर हवन और ब्राह्मण-कन्या को भोजन-वस्त्र दान भी देना चाहिए।

दत्त गायत्री मन्त्र—

ॐ दत्तात्रेय विद्महे योगीश्वराय धीमहि तन्नो दत्तः प्रचोदयात्।

विष्णु गायत्री मन्त्र—

ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ब्रह्म गायत्री मन्त्र—

ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

शिव गायत्री मन्त्र—

ॐ महादेवाय च विद्महे रुद्र मूर्त्तये धीमहिः तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

सरस्वती गायत्री मन्त्र—

ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

जानकी गायत्री मन्त्र—

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णु-पत्न्यै च धीमहि,तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

जानकी गायत्री मन्त्र—

ॐ जनकजायै च विद्महे रामप्रियायै धीमहि, तन्नो सीता प्रचोदयात्।

हंस गायत्री मन्त्र—

ॐ परमहंसाय च विद्महे महातत्त्वाय धीमहि, तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

त्रैलोक्य-मोहन गायत्री मन्त्र—

ॐ त्रैलोक्य मोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

नारायण गायत्री मन्त्र—

ॐ नारायणः विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

राम गायत्री मन्त्र—

ॐ दाशरथेय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात्।

रुद्र गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

नृसिंह गायत्री मन्त्र—

ॐ उग्र नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि, तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परशुराम गायत्री मन्त्र—

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि, तन्नो परशुरामः प्रचोदयात् ।

कृष्ण गायत्री मन्त्र—

ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि,तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् ।

गोपाल गायत्री मन्त्र—

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजन वल्लभाय धीमहि, तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ।

हनुमान गायत्री मन्त्र—

ॐ अञ्जनी जाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि,तन्नो हनुमान प्रचोदयात् ।

लक्ष्मण गायत्री मन्त्र—

ॐ दाशरथये विद्महे अतिबलाय धीमहि, तन्नो लक्ष्मण प्रचोदयात् ।

गरुड़ गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्ण वर्णाय धीमहि, तन्नो गरुड़ प्रचोदयात् ।

गणेश गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

सूर्य गायत्री मन्त्र—

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि, तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ।

अग्नि गायत्री मन्त्र—

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्याय धीमहि, तन्नो अग्निः प्रचोदयात्

जल गायत्री मन्त्र—

ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि, तन्नो अम्बुः प्रचोदयात् ।

नन्दी गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो नन्दी प्रचोदयात् ।

राधा गायत्री मन्त्र—

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि,तन्नो राधा प्रचोदयात् ।

पृथ्वी गायत्री मन्त्र—

ॐ पृथ्वी देव्यै च विद्महे सहस्र मूर्त्यै च धीमहि, तन्नो महीः प्रचोदयात् ।

गौरी गायत्री मन्त्र—

ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।

चन्द्र गायत्री मन्त्र—

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि, तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात् ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मङ्गल गायत्री मन्त्र—

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिः हस्तात् धीमहि, तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।

वायु गायत्री मन्त्र—

ॐ पवन पुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्त्यै च धीमहि, तन्नो वायुः प्रचोदयात् ।

इन्द्र गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि, तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ।

काम गायत्री मन्त्र—

ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

देवी गायत्री मन्त्र—

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

तुलसी गायत्री मन्त्र—

ॐ त्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि, तन्नो तुलसी प्रचोदयात् ।

शक्ति गायत्री मन्त्र—

ॐ सर्व सम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि, तन्नो शक्ति प्रचोदयात् ।

काली गायत्री मन्त्र—

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि, तन्नो अघोरा प्रचोदयात् ।

अन्नपूर्णा गायत्री मन्त्र—

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि, तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।

त्रिपुरसुन्दरी गायत्री मन्त्र—

ॐ त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि, सौस्तन्नः क्लिन्नै प्रचोदयात् ।

तारा गायत्री मन्त्र—

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

भैरवी गायत्री मन्त्र—

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र—

ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र—

ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

बगलामुखी गायत्री मन्त्र—

ॐ बगलायुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि,तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

धूमावती गायत्री मन्त्र—

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि, तन्नो धूमा प्रचोदयात् ।

मातङ्गी गायत्री मन्त्र—

ॐ मातंग्यै च विद्महे उच्छिष्ठ चाण्डाल्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

महिषमर्दिनी गायत्री मन्त्र—

ॐ महिषमर्दिन्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

त्वरिता गायत्री मन्त्र—

ॐ त्वरिता देव्यै च विद्महे महानित्यायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

गुरु गायत्री मन्त्र—

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

विभिन्न देवी-स्वरूपों के मन्त्र

परिचय—

दुर्गाजी के प्रमुख तीन स्वरूपों— (लक्ष्मी, सरस्वती, काली) के अतिरिक्त भी अनेक अवतारों की उपासना की जाती है। वे सभी रूप बड़े समर्थ, प्रभावशाली और भक्त-रक्षक हैं। आस्थानुसार कोई भी साधक, किसी भी देवी-स्वरूप की शरण लेकर, उसकी उपासना कर सकता है।

भुवनेश्वरी देवी का मन्त्र

विनियोग—

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी मन्त्रस्य, शक्ति ऋषि, गायत्री छन्दः, हकारो बीजम्, ईकारः शक्ति, रेफः कीलकम्, श्री भुवनेश्वरी देवता, चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति—

बालरवि द्युतिमिन्दु किरीटां,
तुङ्ग कुचां नयनेत्रय युक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांकुश पाशाम्,
भीतिकरां प्रभजे भुवनेश्वरीम् ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जप-मन्त्र—

ह्रीं ।

इसके अतिरिक्त एक और मन्त्र है, जिससे इन्हीं देवी की उपासना से जप करके सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। विधि-विधान सब उपरोक्त हैं, केवल मन्त्र के अक्षरों का अन्तर हैं—

● ऐं ह्रीं श्रीं ।

बालात्रिपुरा देवी का मन्त्र

परिचय—

देवी के प्रमुख दस स्वरूपों (दश महाविद्याओं) में एक बालात्रिपुरा देवी हैं,जिनकी कृपा प्राप्त हो जाने पर साधक के लिए कुछ भी अलभ्य नहीं रह जाता। यह बहुत ही प्रभावशाली मन्त्र है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री बाला मन्त्रस्य, दक्षिणामूर्त्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, त्रिपुराबाला देवता, सौः बीजं, क्ली शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति—

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसाम् ,
समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ।
विद्याक्षमालाभयदान हस्तां ,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥

जप-मन्त्र—

ऐं क्लीं सौं' ।

षोड़शी मन्त्र

परिचय—

देवी के इस षोड़शी-स्वरूप की उपासना करने वाले साधक को मोहक-व्यक्तित्व और शोभन स्वास्थ्य-सौन्दर्य की प्राप्ति होती है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री त्रिपुरसुन्दरी मन्त्रस्य, दक्षिणामूर्त्ति ऋषिः. पंक्तिश्छन्दः, श्री त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजम्, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकम्, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति-

बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहु त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुश शरां चापं धारयन्ती शिवाम् भजे ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जप-मन्त्र—

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं क ऐं ई ल ह्रीं ।
ह स क ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॥

त्रिपुरभैरवी मन्त्र

परिचय—

देवी का यह स्वरूप प्रबल आकर्षण और सम्मोहन-शक्ति वाला है। इसके साधक को देवी की कृपा से सम्मोहन-शक्ति प्राप्त हो जाती है,जिसके द्वारा वह सांसारिक-समस्याओं का (सद्प्रयोग द्वारा) समाधान करने में सक्षम हो जाता है। कीर्ति और इन्द्रिय-निग्रह के लिए यह बहुत ही प्रभावी मन्त्र है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री त्रिपुरभैरवी मन्त्रस्य, दक्षिणामूर्त्ति ऋषि,पंक्तिः छन्दः, त्रिपुरभैरवी देवता, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, ममाभीष्ट सिद्ध-यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति–

ॐ उद्यद्भानु सहस्रकान्ति म ज्यक्षौमां शिरोमालिकां ।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम् ॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्ध हिमांशुरत्नमुकुटां वन्देरविन्दस्थिताम् ॥

जप-मन्त्र—

ह सें ह सें क रीं ह सें।

छिन्नमस्ता देवी का मन्त्र

परिचय—

दश महाविद्याओं में देवी छिन्नमस्ता का भी एक स्थान है। इन देवी की कृपा से वाणी की सिद्धि, शत्रु-पराभव, भौतिक-सुख की प्राप्ति तथा विवाद आदि में जय प्राप्त होती है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री शिरच्छिन्ना मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, 'ह्रींकार द्वय बीजम्, स्वाहा शक्तिः, अभीष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ध्यान स्तुति—

भास्वन्मण्डल मध्यगां निज शिरच्छिन्न विकीर्णालकम् ।
स्फारास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ।।
यामासक्त रतिस्मरा परिगतां सख्यौ निजे डाकिनी ।
वर्णिन्यौ परिदृश्य मोद कलितां श्री छिन्नमस्तां भजे ।।

जप-मन्त्र—

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं बज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

(यदि दीपावली की रात्रि से प्रारम्भ करके इसे चार लाख जप लिया जाय, तो यह मन्त्र सिद्ध होकर चमत्कारी प्रभाव दिखाता है ।)

धूमावती देवी का मन्त्र

परिचय—

देवी धूमावती भी दश महाविद्याओं में से एक हैं, और इनकी उपासना से साधक वाञ्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं ।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य, पिप्पलाद ऋषिः, निवृच्छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकम्, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति—

अत्युच्चा मलिनाम्बरा खिलजनोद्वेगावहा दुर्मना ।
रूक्षाक्षितितया विशालदशना सूर्य्योदरी चञ्चला ।।
प्रस्वेदाम्बु चिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षा प्रभा ।
ध्येयामुक्तकचा सदाप्रिय कलिर्धूमावती मन्त्रिणा ।।

जप-मन्त्र—

धूं धूं धूमावती स्वाहा ।

मातङ्गी देवी का मन्त्र

विनियोग—

ॐ अस्य श्री मातङ्गी मन्त्रस्य, मतङ्ग ऋषिः,अनुष्टुप छन्दः, मातङ्गी देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति—

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककल पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गी ।
न्यस्तेऽकांघ्रि सरोजे शशि शकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कह्लाराबद्धमालां नियमित विलसत् चोलिकां रक्तवस्त्राम् ।
मातङ्गी शंखपात्रामधुरमधुमदां चित्रकोद्भासि भालाम् ।।

जप-मन्त्र—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चाण्डालि श्री मातंगेश्वरि सर्वजन वशं कुरु स्वाहा ।

बगलामुखी देवी का मन्त्र

परिचय—

वैसे तो देवी बगलामुखी की उपासना से साधक की प्रत्येक कामना पूरी हो जाती है, किन्तु विशेषरूप से शत्रु-दमन, विवाद-विजय, विरोध-नाश आदि के लिए लोग इनकी शरण लेते हैं। देवी बगलामुखी का मन्त्र बहुत प्रभावशाली है। किन्तु जप में शुचिता, शुद्धि और अटूट श्रद्धा रहनी चाहिए, अन्यथा साधक को असफलता की पीड़ा सहनी पड़ती है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्रीं बगलामुखी मन्त्रस्य, नारद ऋषिः, बृहती छन्दः, बगला मुखी देवता, ह्रीं बीजम्, स्वाहा शक्ति-, मम अखिल वाप्तये जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्रगयुताम् ।।
हस्तैर्मुद्गर पाशवज्ररशनाः संविभ्रती भूषणैः ।
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ।।

जप-मन्त्र—

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशाय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

विशेष—

देवी बगलामुखी के सभी पूजन-उपादान पीले रङ्ग के होना आवश्यक हैं। साधक स्वयं भी पीत-वस्त्र धारण करे और पीत-वर्ण के आसन पर बैठे। चन्दन, पुष्प, अक्षत और नैवेद्य भी पीले रङ्ग का होना चाहिए। देवी की प्रतिमा अथवा मन्त्र-चित्र, जो भी सुलभ हो—उसे भी पीले आसन पर प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। साथ ही, इस साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य, एकाहार, सात्त्विक-जीवन और संयम के प्रति सजग रहना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कर्ण पिशाचिनी साधना

परिचय—

भगवती दुर्गाजी के विभिन्न स्वरूपों में एक रूप कर्णपिशाचिनी देवी का भी है। यह देवी कृपालु हो जायें, तो साधक को भूत-भविष्य की प्रत्येक घटना की जानकारी तत्क्षण देती हैं। इसकी उपासना करके भविष्य-वक्ता-गण यशस्वी होते हैं। यह देवी कानों में ऐसा संकेत देती हैं, मस्तिष्क और नेत्रों को ऐसे दृश्यों से परिचित कराती हैं, जिनके विषय में सहसा कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसका साधक त्रिकालदर्शी हो जाता है। किन्तु एक प्रतिबन्ध भी है—इस देवी के दिव्य प्रभाव का दुरुपयोग करने पर यह रुष्ट होकर—साधक को अपनी कृपा से वञ्चित भी कर देती हैं। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति की भविष्य-वाणियाँ मिथ्या होने लगती हैं, उसकी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है, और अन्ततः देवी-प्रसाद के दुरुपयोग के दण्ड-स्वरूप वह दीन-हीन दशा में जीवन-यापन करने को विवश हो जाता है। अस्तु, श्रद्धा-भक्ति के साथ कर्णपिशाचिनी देवी की साधना करके यदि कोई साधक अपनी क्षमता का प्रयोग लोकोपकार के कार्यों में करता रहे तो वह आजीवन सुखी और सम्मानित रह सकता है।

साधना-विधि—

देवी कर्णपिशाचिनी की कई साधना-पद्धतियों का उल्लेख प्राप्त होता है। कुछ विधियाँ सरल है, और कुछ बहुत ही जटिल हैं। मेरा अपना अनुभव है कि यदि साधक उपास्य देवता के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जाय, तो विधि-विधान गौण रह जाते हैं। देवाराधना में मुख्य विधि, नियम और प्रतिबन्ध केवल श्रद्धा-भक्ति का है। अडिग आस्था, अटूट विश्वास, पूर्ण तन्मयता और निश्छल-भक्ति के द्वारा किसी भी देव-शक्ति की कृपा प्राप्त की जा सकती है। हाँ, यह अवश्य है कि विधि-विधान का भी अपना एक महत्त्व है और यदि श्रद्धा के साथ उसका भी निर्वाह किया जा सके, तो साधना विशेष फलदायिनी हो जाती है।

कर्णपिशाचिनी देवी की उपासना में कम से कम इतना तो अवश्य ही करना चाहिए कि पूजा-स्थल की सफाई करके उसे गाय के गोबर से लीपकर शुद्ध करें। साधना प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त किसी पुरोहित से पूछ लें। कारण कि अशुभ मुहूर्त्त में प्रारम्भ किया गया शुभ कार्य भी निष्फल हो जाता है।

साधक के लिए आवश्यक है कि वह स्नान करके स्वच्छ-शुद्ध वस्त्र पहिनकर आसन पर बैठे। उसका मुँह पूर्व की ओर रहे। वह सामने लकड़ी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के पीठे पर नवीन श्वेत वस्त्र बिछाकर देवी का कोई भी चित्र, जो उपलब्ध हो सके—प्रतिष्ठित करे। यदि किसी के पास दुर्गाजी या कालीजी की प्रतिमा (अथवा यन्त्र) है, तो वह उसे भी स्थापित कर सकता है। कुछ न हो तो, भोजपत्र पर लाल चन्दन से 'ॐ कर्णपिशाचिनी नमः' लिखकर उसी को चित्र या प्रतिमा मानकर पीठे पर विराजमान करे। लाल चन्दन, लाल पुष्प और धूप-दीप से देवी की पूजा करके विनियोग और ध्यान करना चाहिए। ध्यानोपरान्त कम से कम 1 माला (108 दाने) अथवा अधिकतम जितना सम्भव हो सके, जप करना चाहिए।

पूजा के प्रथम दिन ही, जप प्रारम्भ करने के पूर्व यह मानसिक-निश्चय (सङ्कल्प) अवश्य करलें कि 'मैं अमुक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु देवी कर्णपिशाचिनी की उपासना प्रारम्भ कर रहा हूँ और इस निमित्त प्रति-दिन ·····माला मन्त्र का जप करते हुए·····दिनों में मन्त्र-जप की····· संख्या पूरी करूँगा। देवीजी समस्त प्रकार की बाधाओं से मेरी रक्षा करें!'

साधना के प्रथम दिन उपवास रखें। सम्भव हो तो पूरी साधना में उपवास रख सकते हैं। साधना कम से कम 9 दिनों तक अथवा 21 दिनों तक की जाती है। जितने दिनों तक मन्त्र-जप करें, प्रतिदिन की जप-संख्या समान होनी चाहिए। प्रायः 9 दिनों तक जप करके हवन किया जाता है। जो साधक 21 दिनों का जप करें, उनको इक्कीसवें दिन हवन करना चाहिए।

हवन-सामग्री में गूगल, शक्कर और मदिरा का मिश्रण प्रयुक्त होता है। वैसे, हवन की आहुतियाँ, मन्त्र-जप की संख्या का दसवाँ भाग रखने का नियम है, किन्तु यदि ऐसा न हो सके, तो कम से कम 108 बार या 1008 बार आहुतियाँ देकर हवन करना चाहिए। हवन के पश्चात् किसी कुमारी-कन्या को देवी की भाँति पूजकर उसे आदरपूर्वक रोटी और खीर का भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार तीन दिनों तक उसे भोजन कराकर तीसरे दिन वस्त्र और दक्षिणा देनी चाहिए। इस प्रकार कुल 12 या 24 दिन साधना में लगते हैं। यदि पूरी श्रद्धा, भक्ति, शुद्धता, संयम और विधि के साथ कोई साधक देवी की उपासना करे, तो निश्चय ही वह उनकी कृपा का पात्र हो जाता है। देवी ऐसे साधक की रक्षा हेतु प्रति क्षण प्रस्तुत रहती है और उसकी कामनाओं की पूर्त्ति भी करती है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जब कभी आवश्यकता पड़े, कोई समस्या सामने आये, तो देवी का स्मरण करके, वह पूर्व सिद्ध मन्त्र सात बार पढ़कर, दाहिने कान पर दाँया हाथ रखते हुए, ऐसी कल्पना करनी चाहिए

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि देवीजी मेरे कान में सन्देश दे रही हैं। अवश्य ही एक प्रकार की अलौकिक प्रेरणा का अनुभव होगा, उसी के अनुसार समस्या का समाधान करना चाहिए।

इस सन्दर्भ में यह तथ्य स्मरणीय है कि मात्र चमत्कार के लिए ऐसे प्रयोग करना वर्जित है। जब भी देवी का आह्वान करके कुछ पूछना हो, उस समस्या के मूल में लोकहित,परोपकार अथवा स्वयं की किसी सात्त्विक आवश्यकता को ही वरीयता देनी चाहिए। कौतूहल, मनोरञ्जन अथवा किसी अभिचार-कर्म (आपराधिक-कृत्य) के लिए इस सिद्धि का प्रयोग करना वर्जित है। इस निषेध के विपरीत आचरण करने वाले साधक को अन्ततः हानि उठानी पड़ती है। वह देवी-कृपा से वञ्चित हो जाता है। अतः साधना और सिद्धि के प्रयोग में सदैव सावधान रहना आवश्यक है।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री कर्णपिशाचिनि मन्त्रस्य, पिप्पलाद ऋषिः, निचृद् गायत्री छन्द,, कर्णपिशाचिनी देवता, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

ॐ चित्तासनस्थां नरमुण्डमालां,
विभूषितामास्थि मणीन् कराब्जैः।
प्रेतान्नरान्त्रैर्दधतीं कुवस्त्रां,
भजामहे कर्णपिशाचिनीताम् ॥

जप-मन्त्र—

कर्णपिशाचिनी देवी की उपासना हेतु विविध प्रकार के मन्त्रों की रचना की गयी है। यहाँ कुछ प्रमुख और प्रचलित मन्त्रों को प्रस्तुत किया गया है :—

- ॐ कर्णपिशाचिनि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा।
- ॐ कह कह कालिके गृह्ण गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा।
- ॐ ह्रीं चः चः कर्णपिशाचि मम कर्णे कथय हुँ फट् स्वाहा।
- ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मम कर्णे प्रविश अतीतानागत वर्त्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा।
- ॐ कर्णपिशाचिनि पिङ्गललोचने स्वाहा।
- ॐ विश्वरूपे पिशाचि वद् वद् ह्रीं स्वाहा।
- ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघ सत्यंवादिनि मम कर्णे अवतर अवतर अतीतागत वर्तमानानि दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचि स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री वार्तालि देवी की साधना-विधि

देवी कर्णपिशाचिनी का एक रूप और है—वार्ताली देवी ! इसकी उपासना से भी साधक को भूत-भविष्य की जानकारी सुलभ हो जाती है। इस देवी का मन्त्र और जप-विधान इस प्रकार कहा गया है :—

जप-मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृ ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासिनि सर्व नर नारी मुख वार्तालि वार्त्ता कथय सप्त समुद्रान् दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं हुं फट् स्वाहा।

विधि—

साधना से समय पूजा-स्थल पर देवी-प्रतिमा के पास किसी जङ्गली वृक्ष के दो समूचे काँटे (बिना टूटे हुए) और सूअर का एक दाँत भी धोकर स्थापित करना चाहिए। इस व्यवस्था के पश्चात् एक लाख, बत्तीस हजार मन्त्र-जप करने का विधान है। जप पूरा हो जाने पर हवन और कन्याओं को भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार यह महामन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में एक प्रतिबन्ध और भी है—साधक को नित्य सिन्दूर का तिलक लगाये रहना चाहिए। साथ ही, वह प्रतिदिन स्नान के पश्चात् सिन्दूर का तिलक लगाकर 108 बार मन्त्र का जप करता रहे। ऐसा करने से सिद्धि का प्रभाव अक्षय रहता है और जिज्ञासा करने पर देवी इस साधक के कान में ज्ञातव्य बातें बता देती है।

● एक विधि यह भी है कि साधक दिनभर उपवास रखे और रात्रि में मन्त्र-जप करे। जप की समाप्ति पर नैवेद्य (भोग) के रूप में जली हुई मछली की बलि देवी को अर्पित करे। बलि अर्पण के समय इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए :—

'ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीन बलि गृहाण गृहाण मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।'

अस्तु: उपरोक्त मन्त्रों में से चाहे जिस मन्त्र द्वारा देवी का आह्वान करें,यह आवश्यक है कि जप के पूर्व (देवी की पूजा करते समय) निरन्तर इस मन्त्र का जप करते रहें—'ॐ अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।'

पृथ्वी मन्त्र

विनियोग—

ॐ अस्य श्री पृथ्वी मन्त्रस्य, वाराह ऋषिः, निचृच्छन्दः, वसुधा देवता, सर्वेष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जप-मन्त्र—

(देवी के किसी भी स्वरूप की ध्यान-स्तुति करके (प्रमुख रूप से लक्ष्मीजी का ध्यान करके) मन्त्र का जप किया जा सकता है।)

● ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा।

रेणुका शबरी मन्त्र

विनियोग—

● ॐ अस्य श्री रेणुका शबरी मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, रेणुका शबरी देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

गुञ्जाफला कल्पित हार रम्यां,
श्रुत्यो शिखण्डं शिखिनो वहन्तीम्।
कोदण्डबाणौ दधतीं कराभ्याम्,
कटिस्थ वल्कां शबरीं स्मरामि॥

जप-मन्त्र—

● ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।

मणिकर्णिका मन्त्र

विनियोग—

● ॐ अस्य श्री मणिकर्णिका मन्त्रस्य, वेदव्यास ऋषिः, शकरी छन्दः, श्री मणिकर्णिका देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

जप-मन्त्र—

● ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मणिकर्णिके नमः।

अन्नपूर्णा मन्त्र

विनियोग—

● ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा मन्त्रस्य, द्रुहिण ऋषिः, कृतिः छन्दः, अन्नपूर्णेशी देवता, ममाखिल सिद्ध्यर्थे जपे वियियोगः।

जप-मन्त्र—

● ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा।

स्वप्नेश्वरि देवी का मन्त्र

विनियोग—

● ॐ अस्य श्री स्वप्नेश्वरि मन्त्रस्य, उपमन्युः ऋषिः, बृहती छन्दः, स्वप्नेश्वरी देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ध्यान स्तुति—

वरामये पद्मयुगं दधानां,
करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम् ।
स्मितां वरां शारद चन्द्रकान्ति,
स्वप्नेश्वरि नौमि विभूषणाढ्याम् ।।

जप-मन्त्र—

- ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद् स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं मानसें स्वप्नेश्वरि विधायं विधे वद् वद् स्वाहा ।
- ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्नं दर्शय ठः ठः स्वाहा ।
- ॐ नमः स्वप्न चक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमान कथय कथय स्वाहा ।
- ॐ नमः स्वप्न मातङ्गिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ।
- ॐ यक्षिणि आकर्षिणि घण्टाकर्णे घण्टाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11 | यक्षिणी देवी की साधना

परिचय—

नृवंश-वेत्ताओं का मत है कि मानव-शरीर एक है, किन्तु स्थान, जल, वायु, वंशानुगत रक्त-प्रवाह तथा समूह विशेष के भेद से उसकी संरचना, बौद्धिक-विकास, परम्पराओं और मान्यताओं में बहुत अन्तर दृष्टिगत होता है। आज भी हम उत्तर-भारतीय, दक्षिण-भारतीय, नैपाली, चीनी, अमेरिकन और अफ्रीकन हब्शी लोगों की शारीरिक-संरचना और बौद्धिक-स्तर में अन्तर देखते हैं। कहने को ये सभी मानव-जाति के अन्तर्गत आते हैं, किन्तु बाह्य-रूपाकार और मानसिक-दृष्टि से वे एक दूसरे से सर्वथा भिन्न प्रतीत होते हैं।

सभ्यता के उस परम विकसित युग में, जब कि आर्य-जाति की श्रेष्ठता का डङ्का बज रहा था, कुछ अन्य मानव-समूह (जातियाँ) विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में निवास कर रहे थे ! अपने स्तर पर वे भी पर्याप्त सभ्य, विकसित और सम्पन्न थे। यह कहना कि मात्र आर्य जाति ही सभ्य थी, शेष सब वन्य-जीवन में रह रहे ते—यथार्थ से नितान्त परे है। आर्यों के अतिरिक्त यक्ष, रक्ष, बानर, किन्नर, नाग आदि भी ऐसे विकसित जन-समुदाय थे, जो हर तरह से सम्पन्न थे और इनके अपने राज्यों में विद्या, बुद्धि, वैभव, शक्ति और ज्ञान का पर्याप्त विकसित रूप दीख पड़ता था !

जिस प्रकार आर्य-सभ्यता में प्रकृतिदेवी (आदिशक्ति) के अनेक रूपों की परिकल्पना की गयी है, ठीक उसी प्रकार यक्ष-जाति में भी विभिन्न देवी-शक्तियों को मान्यता प्राप्त है, वे उन्हें यक्षिणी कहते थे। आर्य-संस्कृति में जिस प्रकार दुर्गाजी के विभिन्न रूपों की सत्ता-शक्ति की स्तुति की जाती हैं, ठीक उसी प्रकार यक्ष-जाति के विद्वान् और साधकजन अपनी देवी—यक्षिणी की उपासना करते थे। कालान्तर में यक्षिणी-साधना आर्य-संस्कृति में भी स्वीकृत हो गयी और यहाँ के देवी-देवताओं के साथ उनकी भी पूजा होने लगी।

यक्षिणियों की संख्या पर मतभेद है। विभिन्न ग्रन्थों में उनकी भिन्न-भिन्न संख्या और नामावली मिलती हैं। 'रुद्र-यामल-तन्त्र' एक अति

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राचीन और प्रामाणिक ग्रन्थ है। उसके अनुसार, 'यक्षिणी-कल्प' की निम्नलिखित देवियों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और सहज-साध्य माना गया है :—

1. विद्या-यक्षिणी
2. कुबेर-यक्षिणी
3. जन-रञ्जिनी
4. चन्द्रिका
5. घण्टाकर्णी
6. शंखिनी
7. कालकर्णी
8. विशाला
9. मदना
10. श्मशानी
11. महामाया
12. भिक्षिणी
13. माहेन्द्री
14. विकला
15. कपालिनी
16. सुलोचना
17. पद्मिनी
18. कामेश्वरी
19. मानिनी
20. शतपत्रिका
21. मेखला
22. प्रमदा
23. विलासिनी
24. मनोहरा
25. अनुरागिनी
26. चन्द्रद्रवा
27. विभ्रमा
28. वट
29. सुरसुन्दरी
30. कनकावती तथा कुछ वनस्पति सम्बन्धी।

इन सभी यक्षिणियों में अपार क्षमता है। प्रसन्न होने पर अपने उपासक को ये शुछ भी दे सकती हैं। भौतिक-समृद्धि के लिए तथा अन्य अनेक समस्याओं के समाधान हेतु भी यक्षिणी-साधना निश्चित-रूपेण फलदायी होती है। किन्तु एकान्त-सेवन, नियमित जप, व्रत, उपवास. भूमि-शयन, साधना-भेद से जङ्गल, श्मशान अथवा निर्जन नदी-तट जैसे स्थान में जप, आहुति आदि प्रतिबन्धों का पालन करना अनिवार्य रहता है। आज के युग में इतनी जटिल साधना सम्भव नहीं रह गयी है, फिर भी प्रसङ्ग-वश विषय की पूर्त्ति के लिए यहाँ कुछ प्रयुख यक्षिणियों के जप-मन्त्र लिखे जा रहे हैं। आस्थावान् और समर्थजन चाहें तो यक्षिणी-उपासना से लाभ उठा सकते हैं। यहाँ यह भी ध्यान रखने की बात है कि सद्विषय के लिए की गयी साधना का फल निरापद होता है, जब कि असद् (अभिचार-कर्म, पर-पीड़न, पर-शोषण आदि) के उद्देश्य से की गयी साधना—कालान्तर में साधक को कष्ट पहुँचाती है !

विधि—

यक्षिणों का चित्र, प्रतिमा अथवा यन्त्र प्राप्त न हो सके, तो भोज-पत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम द्वारा, किसी शुभ-मुहूर्त्त में उस अभीष्ट यक्षिणी का नाम लिखकर उसे आसन पर प्रतिष्ठित करके उसी की पूजा करनी चाहिए। यहाँ कुछ प्रमुख यक्षिणियों के मन्त्र लिखे जा रहे हैं। साधक-जन अपनी निष्ठा, क्षमता और सुविधा के अनुसार इनमें से

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसी की भी साधना कर सकते हैं। स्मरण रहे कि यक्षिणी-साधना घर में नहीं, बाहर एकान्त में करने का विधान है। एकान्त-वन, वट-वृक्ष के नीचे, श्मशान, मन्दिर, वाटिका, नगर-द्वार जैसे स्थान इस साधना के लिए विशेष उपयुक्त माने गये हैं।

साधक को चाहिए कि वह निश्चित स्थान पर नित्य रात्रि के समय जाकर शुद्ध आसन पर बैठे और पश्चिम की ओर मुख करके भोजपत्र पर अङ्कित यक्षिणी-चित्र (अथवा नाम) की धूप-दीप से पूजा करके मन्त्र-जप प्रारम्भ करे। जप समाप्त होने पर वहीं सो जाये। साधना-काल में काम-क्रोध से परे और व्रत, उपवास तथा संयम के साथ रहना चाहिए। जप आरम्भ करने के पूर्व जो संख्या जैसे निश्चित की जाय, उसे उसी विधि से पूरी करना चाहिए। जैसे किसी साधक ने एक लाख जप का सङ्कल्प किया है, और नित्य 50 माला मन्त्र जपता है, तो उसे 10 दिन में अपनी जप-संख्या पूरी करनी होगी। जप-संख्या पूरी हो चुकने पर कम से कम 108 बार आहुति देकर (वही जप-मन्त्र पढ़ते हुए) हवन करना चाहिए। हवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री कई प्रकार की होती है। और कुछ न हो सके, तो काले तिल, घी और गुड़ का मिश्रण भी प्रयुक्त किया जा सकता है। हवन के पश्चात् कम से कम एक कुमारी-कन्या को भोजन-वस्त्र और दक्षिणा भी देना चाहिए। साधना-काल में किसी प्रकार की अलौकिक अनुभूति हो, तो उसका प्रचार न करके, चुपचाप उसी आराध्य-यक्षिणी से निवेदन करना उचित होता है।

प्रमुख रूप से साध्य यक्षिणियों के नाम व मन्त्र

विद्या-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा।

कुबेर-यक्षिणी—

ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

जनरञ्जिनी-यक्षिणी....

ॐ क्लीं जनरञ्जिनि स्वाहा।

चन्द्रिका-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा।

घण्टाकर्णी-यक्षिणी—

ॐ ऐं पुरं क्षोभय भगवति गम्भीर स्वरे क्लैं स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शंखिनी-यक्षिणी—

ॐ शंखधारिणी शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा।

कालकर्णी-यक्षिणी—

ॐ क्लौं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विशाला-यक्षिणी—

ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा।

मदना-यक्षिणी—

ॐ मदने मदने देवि ममालिङ्गय संगं देहि देहि श्रीः स्वाहा।

श्मशानी-यक्षिणी—

ॐ हूँ ह्रीं स्फ्रूं श्मशानवासिनि श्मशानें स्वाहा।

महामाया-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं महामाये हुँ फट् स्वाहा।

भिक्षिणी-यक्षिणी—

ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि ह्रां ह्रीं स्वाहा।

माहेन्द्री-यक्षिणी—

ॐ ऐं क्लीं ऐन्द्रिमाहेन्द्रि कुलुकुलु चुलुचुलु हंसः स्वाहा।

विकला-यक्षिणी—

ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा।

कपालिनी-यक्षिणी—

ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लैं क्लौं हस सकल ह्रीं फट् स्वाहा।

सुलोचना-यक्षिणी—

ॐ क्लौं सुलोचनादि देवि स्वाहा।

पद्मिनी-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि वल्लभे स्वाहा।

कामेश्वरी-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।

मानिनी-यक्षिणी—

ॐ ऐं मानिनी ह्रीं एहि एहि सुन्दरि हस हस मिह सङ्गमहः स्वाहा।

शतपत्रिका-यक्षिणी—

ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेखला-यक्षिणी—

ॐ क्रों मदनमेखले नमः स्वाहा।

प्रमदा-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा।

विलासिनी-यक्षिणी—

ॐ विरूपाक्ष विलासिनि आगच्छ आगच्छ ह्रीं प्रिया मे भवप्रिया मे भव क्लें स्वाहा।

मनोहरा-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा।

अनुरागिणि-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।

चन्द्रद्रवा-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं नमः चन्द्रद्रवे कर्णाकर्ण कारणे स्वाहा।

विभ्रमा-यक्षिणी—

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एहि एहि भगवति स्वाहा।

वट-यक्षिणी—

ॐ एहि एहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्ष निवासिनि शीघ्रमे सर्वम् सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

सुरसुन्दरी-यक्षिणी—

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।

कनकावती-यक्षिणी—

ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा।

वनस्पति यक्षिणी

कुछ ऐसी यक्षिणियाँ भी होती हैं,जिनका वास किसी विशेष वनस्पति (पेड़-पौधे) पर होता है। उस वनस्पति का प्रयोग करते समय उस यक्षिणी का मन्त्र जपने से विशेष लाभ होता है। वैसे भी वानस्पतिक-यक्षिणी की साधना की जा सकती है। अन्य यक्षिणियों की भाँति वे भी साधक की कामनाएं पूरी करती हैं। वानस्पतिक-यक्षिणियों के वर्ग में प्रमुख नाम और उनके मन्त्र निम्नलिखित हैं :—

बिल्व यक्षिणी—

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वेश्वर्यप्रदात्र्यै ॐ नमः श्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निर्गुण्डी यक्षिणी—

ॐ सरस्वत्यै नमः। (विद्या प्राप्ति हेतु)

अर्क यक्षिणी—

ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा। (सफलता हेतु)

श्वेत गुञ्जा यक्षिणी—

ॐ जगन्मातये नमः। (सन्तोष प्राप्ति हेतु)

तुलसी यक्षिणी—

ॐ क्लीं क्लीं नमः। (राजसुख हेतु)

कुश यक्षिणी—

ॐ वाङ्मयायै नमः। (वाचा सिद्धि हेतु)

पिप्पल यक्षिणी—

ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा। (धन प्राप्ति हेतु)

आम्र यक्षिणी—

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा। (पुत्र प्राप्ति हेतु)

उदम्बर यक्षिणी—

ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः। (विद्या प्राप्ति हेतु)

अपामार्ग यक्षिणी—

ॐ ह्रीं भारत्यै नमः। (ज्ञान-विद्या हेतु)

धात्री यक्षिणी—

ऐं क्लीं नमः। (अशुभ निवारण हेतु)

रोग-निवारक देवी-मन्त्र

परिचय—

मानव-शरीर व्याधियों का आगार है। इसके दो बिन्दु हैं—जन्म और मृत्यु। इन दो बिन्दुओं के बीच का कालान्तर 'जीवन' अथवा 'आयु' कहलाता है। प्राणी का धराधाम पर अवतरित होना उसका 'जन्म' है—जीवन का प्रारम्भ और शरीर का सर्वथा निष्क्रिय हो जाना 'मृत्यु' है—जीवन की समाप्ति! इस अवधि में शरीर को विभिन्न स्थितियों से होकर आगे बढ़ना पड़ता है। जब कभी किसी कारण से शरीर को कष्ट होता है, तो उसकी दैनिक-चर्या में, स्वाभाविक कार्य-गति में व्यवधान आ जाता है। इस स्थिति में शरीर को क्षति, पीड़ा, विकृति जैसे उपद्रव आक्रान्त कर लेते हैं। इन उपद्रवों को रोग, विकार, कष्ट, अवरोध और सङ्कट जैसे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नामों से प्रकट किया जाता है। इन कष्टों से मुक्ति पाने के लिए कुछ भौतिक उपाय होते हैं, जैसे 'औषधोपचार' और कुछ आध्यात्मिक उपाय होते हैं, जैसे 'पूजा-पाठ' तथा 'देव-स्तवन'!

लगभग सभी देव-शक्तियाँ मानव-कल्याण में समर्थ हैं। श्रद्धापूर्वक किसी को भी स्मरण करें, उसकी कृपा प्राप्त हो जाती है। यहाँ आदिशक्ति महामाया (श्री दुर्गाजी, जिनके अगणित रूप-अवतार हुए हैं) से सम्बन्धित कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं। विभिन्न रोगों पर इनका जप कल्याण-कारी प्रमाणित हुआ है। महर्षियों द्वारा अनुभूत ये मन्त्र श्रद्धा और नियम-पूर्वक जपकर कोई भी व्यक्ति इनके चमत्कार और अलौकिक प्रभाव का अनुभव कर सकता है।

जहाँ तक विधि-विधान का प्रश्न है—सबसे सरल विधि यही है कि श्री दुर्गाजी का चित्र (या प्रतिमा) स्थापित करके प्रतिदिन शुद्ध होकर, उसकी धूप-दीप से पूजा करके उन मन्त्रों का अधिकतम जप किया जाय। जप के सम्बन्ध में एकान्त, शुचिता, तन्मयता ही प्रमुख प्रतिबन्ध है। ऊन या कुश का आसन और लाल चन्दन की माला का प्रयोग अनुकूल प्रभाव की सृष्टि करता है। जप के आरम्भ में देवी को सम्बोधित करते हुए यह मानसिक-सङ्कल्प निवेदन कर लेना चाहिए कि 'हे माता! मैं अमुक कष्ट से त्राण पाने के लिए आपकी शरण में आया हूँ। मैं प्रतिदिन.....माला आपका मन्त्र जपता रहूँगा। मेरी रक्षा कीजिए.....!' और इसके बाद अभीष्ट संख्या में प्रतिदिन उस मन्त्र का जप किया जाना चाहिए, जिसका (जितना) सङ्कल्प किया गया हो!

स्नायु-व्याधि निवारक मन्त्र

नसों (मज्जा-तन्तुओं) से सम्बन्धित कोई भी कष्ट हो, उसके निवारण हेतु शिव-पत्नी पार्वतीजी (उमा) का यह मन्त्र श्रद्धापूर्वक जपना चाहिए। इस मन्त्र के दैनिक-जप से शिरो-पीड़ा, तनाव, अनिद्रा, मूर्च्छा, भय, भ्रम, पागलपन, दौरा, मानसिक-विक्षेप जैसे विकारों से त्राण मिल जाता है।

मन्त्र—ॐ उं उमादेवीभ्याम् नमः।

नासा-रोग—

मन्त्र—ॐ यं यमघण्टाभ्याम नमः।

नेत्र-रोग—

मन्त्र—ॐ शां शाकिनीभ्यां नमः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कर्ण-रोग—

मन्त्र—ॐ द्वां द्वारवासिनीभ्यां नमः।

कण्ठ-रोग—

मन्त्र—ॐ चिं चित्रघण्टाभ्यां नमः।

जिह्वा-विकार—

मन्त्र—ॐ सं सर्वमङ्गलाभ्यां नमः।

धनुर्वात पृष्ठ-दोष—

मन्त्र—ॐ धं धनुर्धारिभ्यां नमः।

स्तन-पीड़ा—

मन्त्र—ॐ मं महादेवीभ्यां नमः।

मनस्ताप—

मन्त्र—ॐ शों शोक विनाशिनीभ्यां तमः।

(इसी मन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में मङ्गलवार को, भोजपत्र पर, अनार की लेखनी और लाल चन्दन की स्याही से लिखकर, शहद में डुबोकर रखने से रोग-विकार की समाप्ति हो जाती है। जिस व्यक्ति के लिए इसका प्रयोग करना हो, भोजपत्र पर मन्त्र के नीचे उसका नाम लिख देना चाहिए। यह प्रयोग साधक स्वयं (अपने) और दूसरों के लिए भी कर सकता है।)

हृदय-रोग—

मन्त्र—ॐ लं ललितादेवीभ्यां नमः।

उदर-रोग—

मन्त्र—ॐ शूं शूलधारिणीभ्यां नमः।

अल्सर—

मन्त्र—ॐ कां कालरात्रिभ्यां नमः।

वायु-दोष, रक्तचाप—

मन्त्र—ॐ वं वज्रहस्ताभ्यां नमः।

दन्तव्याधि—

मन्त्र—ॐ कौं कौमारीभ्यां नमः।

गप्त-रोग—

मन्त्र—ॐ गुं गुह्येश्वरीभ्यां नमः।

रक्त अस्थिविकार—

मन्त्र—ॐ पां पार्वतीभ्यां नमः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्वर, अम्लपित्त—

मन्त्र—ॐ मुं मुकुटेश्वरीभ्यां नमः ।

कफ, क्षय आदि—

मन्त्र—ॐ पं पद्मावतीभ्यां नमः ।

प्रेतादि बाधा—

मन्त्र—ॐ कं कल्याण शोभनाभ्यां नमः ।

समस्त रोग विकार—

मन्त्र—ॐ ह्रीं नमः ।

(यदि रोगी-व्यक्ति स्वयं मन्त्र-जप करने में असमर्थ हो, तो कोई दूसरा भी उसके लिए ऐसी मन्त्र-साधना कर सकता है। मन्त्र-जप के समय लोटे में शुद्ध जल पास रख लिया जाय। जप पूरा होने पर वही अभिमन्त्रित जल रोगी को पिलाना चाहिए। रोगी के आस-पास का वातावरण स्वच्छ और शुचितापूर्ण रहे। हाँ, 1-2 धूपबत्ती भी जला दी जायँ तथा किसी देवता का चित्र लगा दिया जाय तो विशेष लाभ होता है।)

आकाराविक्षकारान्ता मातृकावर्ण रूपिणी ।
ययासर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥

मातृशक्ति के समस्त रूपों के श्री चरणों में सश्रद्धा अनेकशः नमन !

॥ इत्यलम् ॥

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDAL
LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
ACC No. 8812

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्योतिष, तन्त्र-विद्या व योग-साधना के अनुपम ग्रन्थ
घर बैठे वी० पी० द्वारा प्राप्त करें !

● **भारतीय फलित ज्योतिष :** [विद्या-वारिधि-आचार्य दीक्षित] **मूल्य 51/-**

ज्योतिष-ज्ञान के अभिलाषी तथा ज्योतिष के मर्मज्ञ—दोनों वर्ग के पाठकों के लिए परम उपयोगी ग्रन्थ !

● **अलौकिक शक्तियों की साधना :** [पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल] **मूल्य 30/-**

इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं की 'साधना' आराधना-विधि इतने सरल ढङ्ग से विवेचित है कि केवल श्रद्धा-शुचिता के बल पर ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। चाहिए—बटोरने वाला, मानो रत्नों की पिटारी खुली पड़ी है।

● **रहस्यमयी गुप्त-विद्याएं :** [पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल] **मूल्य 25/-**

जैसा कि पुस्तक के नाम से स्वतः प्रकट है। भारतीय-तन्त्र-साधना के ऐसे-ऐसे गुप्त प्रयोग, जो लाखों रुपया खर्च करने पर भी सिद्धजन नहीं बताते, इस पुस्तक में स्पष्ट और सरल भाषा में वर्णित हैं।

● **श्रीतन्त्रम् (धनप्रदायक साधनाएं) :** [पं शत्रुघ्नलाल शुक्ल] **मूल्य 21/-**

जीवन में सफलता की मूल-आधार 'धन-सम्पदा' है। इस पुस्तक में धन-सम्पदा की प्रदायिनी देवी—श्री महालक्ष्मी की आराधना का विवेचन है।

● **मनोकामना-पूरक मन्त्र :** [पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल] **मूल्य 21/-**

यश, प्रतिष्ठा तथा धन आदि सभी सद्-इच्छाओं की पूर्त्ति होने की कामना रखने वाले साधक इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। अनुपम सङ्कलन है।

● **सूर्य-तन्त्रम् :** (पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल) **मूल्य 21/-**

यह तथ्य सर्व-विदित है कि भगवान् भास्कर के साधक को सुचिता, सौम्यता, सहनशीलता, सत्यवादिता, स्पष्टवादिता आदि दिव्य गुणों की स्वतः प्राप्ति होकर साधक का व्यक्तित्व परम तेजस्वी हो उठता है। फिर उसे विश्व की कोई सम्पदा अप्राप्य नहीं रहती। उसी साधना का प्रभावशाली चित्रण।

● **नवग्रह-अनुकूलन-तन्त्र :** (पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल) **मूल्य 21/-**

भारतीय-दर्शन की ऐसी मान्यता है कि संसार का कण-कण आकाशीय-नक्षत्रों द्वारा शासित व नियन्त्रित है--विशेषकर नवग्रहों से ! इन्हीं ग्रहों के कुपित व हर्षित होने पर मानव-जीवन का दुःख-सुख निर्भर करता है। इसी मान्यता को लक्ष्य करके पूज्य आचार्यजी ने नवग्रहों की कृपा-प्राप्ति के लिए सरलतम साधना का वर्णन किया है। अनेकों पाठकों द्वारा प्रशंसित पुस्तक है।

● **चमत्कारी रत्न-साधना :** (पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल) **मूल्य : 25/-**

ग्रह-दोष तथा [illegible] रत्नों में अद्भुत क्षमता है। दुर्भाग्य को सौभाग्य [illegible] विधि इस ग्रन्थ में पढ़ें।

● **योग के अद्भुत चमत्कार :** [स्वामी [illegible]नन्द] **मूल्य 24/-**

बिना गुरु की सहायता के योग-विद्या [illegible] पारङ्गत बनाने का पूर्ण विश्वास के साथ दावा करने वाला [illegible] ग्रन्थ [illegible] पढ़ें। डाक-खर्च अतिरिक्त होगा।

पुस्तकें मँगाने का पता :

हिन्दी सेवा सदन, वैरागपुरा, मथुरा-281001 ☎ 5173

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

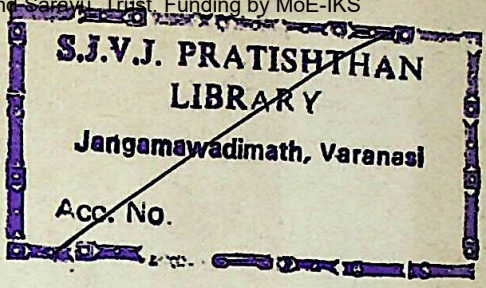

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi